विचार दृष्टि

वर्ष : 9 | अंक : 31 | अप्रैल-जून 2007 | 25 रुपये

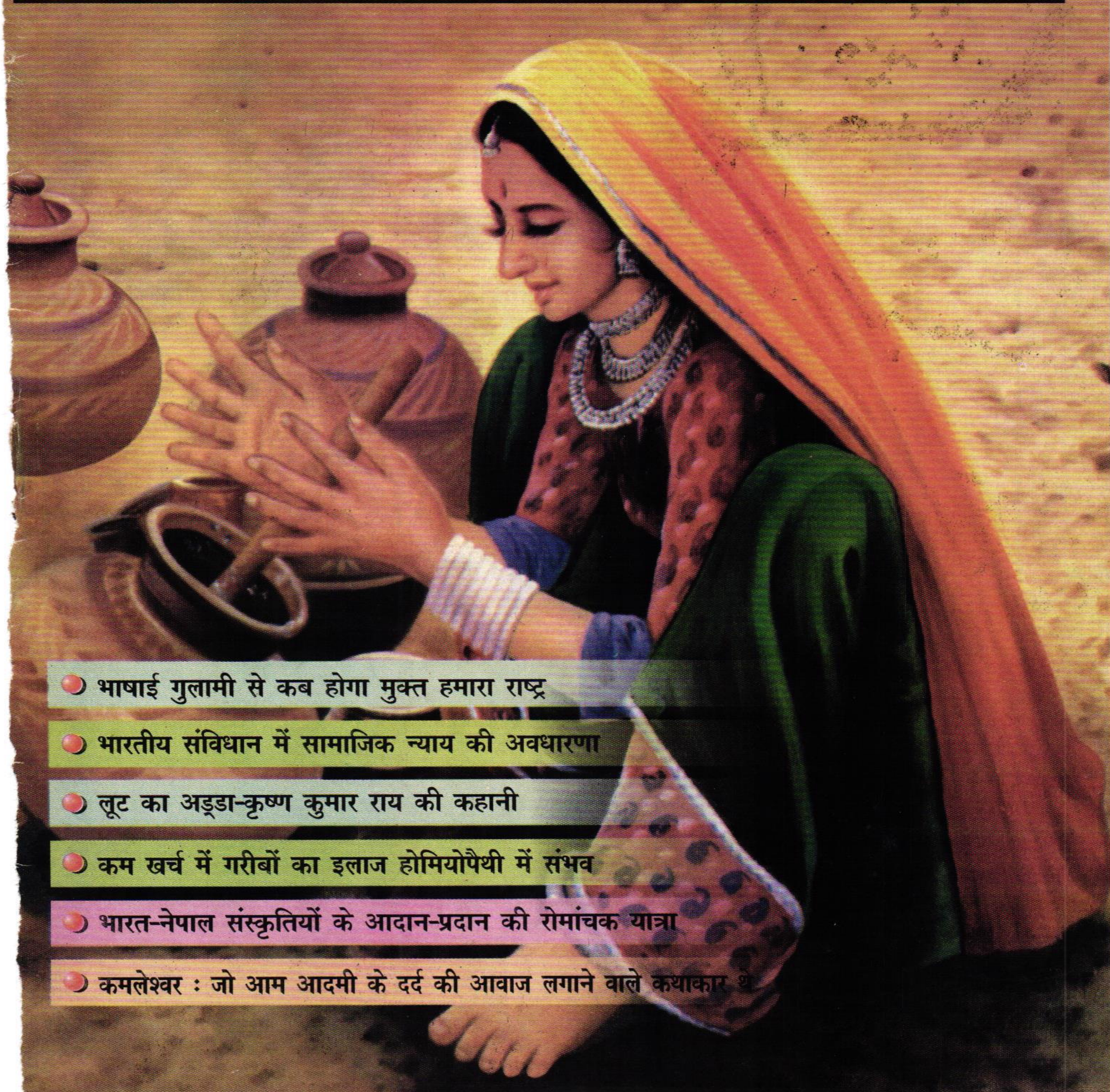

- भाषाई गुलामी से कब होगा मुक्त हमारा राष्ट्र
- भारतीय संविधान में सामाजिक न्याय की अवधारणा
- लूट का अड्डा-कृष्ण कुमार राय की कहानी
- कम खर्च में गरीबों का इलाज होमियोपैथी में संभव
- भारत-नेपाल संस्कृतियों के आदान-प्रदान की रोमांचक यात्रा
- कमलेश्वर : जो आम आदमी के दर्द की आवाज लगाने वाले कथाकार थे

नियमित प्रकाशन के लिए 'विचार दृष्टि' को हमारी

हमारी शुभकामनाएँ

पटेल फाउंडेशन

(सरदार पटेल के विचारों के प्रति समर्पित)

संस्था का ध्येय है –

- सरदार पटेल के विचारों को जन-जन तक पहुँचाना
- राष्ट्रीय एकता व अखंडता को अक्षुण्ण बनाए रखना
- सामाजिक समरसता कायम करना
- सांप्रदायिक सद्भाव का वातावरण बनाना
- पाखंड, अंधविश्वास और रूढ़िवादी प्रवृत्तियों से परहेज करना

तो आइए, आप भी इस अभियान का एक हिस्सा बन इसे अपेक्षित सहयोग प्रदान करें।

147, अंसल चैंबर-II, भीकाजी कामा प्लेस, नई दिल्ली

फोन : 30926763 • मो. : 9891491661

विचार दृष्टि

(राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक त्रैमासिकी)

वर्ष- 9 अप्रैल-जून, 2007 अंक- 31

संपादक-प्रकाशक : सिद्धेश्वर
सं. सलाहकार : गिरीश चंद्र श्रीवास्तव
प्रबंध संपादक : सुधीर रंजन
उप संपादक : डॉ॰ शाहिद जमील
सहायक संपादक : उदय कुमार 'राज़'
आवरण साज-सज्जा : संजय कुमार
शब्द संयोजन : डी॰ टी॰ प्वाइंट,
खास महल मोड़, चिरैयाटाड़, पटना-1
फोन नं॰ - 0612-3298703

संपादकीय-प्रकाशकीय कार्यालय

'दृष्टि', ६ विचार विहार, यू-२०७,
शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92
☎ : (011) 22530652 / 22059410
मोबाईल : 9811281443 / 9811310733
फैक्स : (011) 52487975
E-mail: vichardrishti@hotmail.com
'बसेरा', पुरन्दरपुर, पटना-800001
☎ : 0612-2228519

पटना कार्यालय

आवास सं॰ सी॰/६, पथ सं॰ ५, आर॰ ब्लॉक,
पटना-800001 ☎ : 0612-2226905

ब्यूरो प्रमुख

नागपुर : मनोज कुमार ☎ : 2553701
कोलकाता : जितेन्द्र धीर ☎ : 24692624
चेन्नई : डॉ॰ मधु धवन ☎ : 26262778
तिरूवनंतपुरम : डॉ॰ एन॰ चंद्रशेखरण नायर
बैंगलूर : पी॰एस॰चन्द्रशेखर ☎ : 26568867
हैदराबाद : डॉ॰ ऋषभदेव शर्मा ☎ 23391190
जयपुर : डॉ॰ सत्येंद्र चतुर्वेदी ☎ : 2225676
अहमदाबाद : रमेश चंद्र शर्मा 'चद्र'

प्रतिनिधि

तिरूवंनतपुरम : के.जी. बालकृष्ण पिल्लै
लखनऊ : प्रो. पारसनाथ श्रीवास्तव,
ग्वालियर : डॉ. महेन्द्र भटनागर
सतना : डॉ. राम सिया सिंह पटेल
देहरादून : डॉ. राज नारायण राय
हैदराबाद : श्री चंद्रमौलेश्वर प्रसाद
एरणाकुलम : डॉ॰ पी॰ राधिका
भिवानी : प्रो॰ पुरुषोत्तम 'पुष्प'
मुद्रक : प्रोलिफिक इनकारपोरेटेड एक्स-47, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेज-2, नई दिल्ली-20

मूल्य एक प्रति	:	25 रुपये
वार्षिक	:	100 रुपये
द्विवार्षिक	:	200 रुपये
आजीवन सदस्य	:	1000 रुपये
विदेश में एक प्रति	:	US $ 05
वार्षिक	:	US $ 20
आजीवन	:	US $ 250

एक में रचना और रचनाकार

पाठकीय पन्ना ... 02
संपादकीय ... 05

विचार-प्रवाह
भारतीय संविधान में सामाजिक... 07
डॉ॰ जय प्रकाश खरे
दर्शन का स्वरूप ... 10
डॉ॰ महेश चन्द्र शर्मा

साहित्य
लूट का अड्डा (कहानी)... 11
कृष्ण कुमार राय
चरित्र (लघुकथा) ... 14
श्रीमती शुक्ला चौधरी

काव्य-कुंज
शानुर्रहमान, अब्दुल अहद साज़, ... 15
डॉ॰ पुष्करणा, अंजली,
अजय कुमार, राजेन्द्र कटक,
राजेन्द्र राज, ध्रुवनारायण, डॉ॰ रेड्डी,
शुक्ला चौधरी, राधेलाल, प्रो॰
'आरोही', आचार्य दुबे,
बेखबर, वरुण कुमार तिवारी

व्यंग्य
बेगम का फ़रमान ... 19
डॉ॰ मो॰ मोज़ाहेरूल हक़

साक्षात्कार : ... 20
कम खर्च में गरीबों का इलाज
होमियोपैथी में संभव-डॉ महेश
डॉ॰ शाहिद जमील

समीक्षा
आज में कल की तलाश ... 23
डॉ॰ बलराम तिवारी
साहित्य एवं संस्कृति चिंतन ... 25
कवि में दोहे के प्रति 26

डॉ॰ कृष्ण गोपाल मिश्र

शिक्षा
स्वाध्याय का अर्थ और महत्त्व ... 27
ओम प्रकाश पाण्डेय 'मंजुल'

सेहत सलाह
शाकाहारी क्यों होना चाहिए ... 28
दिनेश रावत

राजनीतिक नजरिया
अपने ही चक्रव्यूह में 29
डॉ॰ जगपाल सिंह

राज्य
पूरब का ऑक्सफॉर्ड - पुणे ... 30
प्रो॰ लखन लाल सिंह 'आरोही'

दृष्टि
पटना में ग्लोबल मीट 33
मनोज कुमार एवं शिव कुमार

यात्रा-वृतांत
भारत-नेपाल संस्कृतियों 34
सिद्धेश्वर

केरल की चिट्ठी
जिन ढूँढा तिन पाइयाँ ... 39
के॰जी॰ बालकृष्ण पिल्लै

गतिविधियाँ
क्षितिज-सा विस्तार लिए 40
पुस्तक लोकार्पण ... 41
सम्मान ... 43

संस्मरण
परमापंद 'दोषी' ... 44
कमलेश्वर ... 46

श्रद्धांजलि
पं॰ कौशिक, शामलाल, भास्करन 49
साभार-स्वीकार ... 54

साक्षात्कार

शाकाहार

पुणे

लोकार्पण

सम्मान

संस्मरण

श्रद्धांजलि

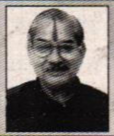

पत्रिका-परामर्शी

❋ पद्मश्री डॉ.श्यामसिंह 'शशि' ❋ प्रो॰ राम बुझावन सिंह ❋ प्रो. धर्मेंद्र नाथ 'अमन' ❋ श्री जियालाल आर्य ❋ डॉ॰ बालशौरि रेड्डी ❋ श्री जे.एन.पी.सिन्हा ❋ श्री बाँकेनन्दन प्र॰ सिन्हा ❋ डॉ॰ सच्चिदानंद सिंह 'साथी' ❋ डॉ॰ एल॰एन॰ शर्मा

पत्रिका-परिवार के सभी सदस्य अवैतनिक हैं
रचनाकारों के विचारों से पत्रिका-परिवार का सहमत होना आवश्यक नहीं।

प्रिय पाठकों! प्रकाशित रचनाओं तथा अंक के प्रस्तुति पक्ष पर आपकी प्रतिक्रिया, पत्रिका परिवार के लिए एक संबल है। हमें आपकी प्रतिक्रिया का बेसब्री से इंतज़ार रहता है। प्राप्त प्रतिक्रियाओं से हम केवल उन्हीं प्रतिक्रियाओं को शामिल कर पाते हैं, जिनमें वस्तुनिष्ठ, कृतियों से संदर्भित संक्षिप्त समीक्षा / टिप्पणी या मार्ग-दर्शक बिंदु आदि होते हैं। भ्रामक प्रशंसा और इर्ष्या-दर्शी विचारों के प्रेषण से डाक-खर्च ज़ाया होता है।

—उप संपादक

भीषण झंझावात में लक्ष्योन्मुख

'विचार दृष्टि' का वर्ष : 9 अंक 30 जनवरी-मार्च, 07 पाकर अभिभूत हूँ। भाषण झंझावात में भी 'विचार दृष्टि' लक्ष्योन्मुख होकर निरंतर अपने पथ पर अग्रसर है, यह जानकर प्रसन्नता हो रही है। यह देखकर विस्मय होना अस्वाभाविक नहीं होगा कि अपने मिशन में सर्वस्व अर्पित करने वाले लोग अब भी हैं, जो मोमबत्ती की तरह स्वयं को गलाकर सबों को प्रकाशित कर रहे हैं। इस दृष्टि से 'विचार दृष्टि' के यशस्वी संपादक का व्यक्तित्व यदि स्पृहणीय बनता है तो इसे अहैतुक कतई नहीं कहा जा सकता।

श्रीमन् अपने उद्देश्य में आप पूर्ण सफल हों, यही उस विभुं व्यापक से मेरी हार्दिक प्रार्थना है।

**– डी.आर. ब्रह्मचारी, अध्यक्ष
हिंदी विभाग, बी.आ. कॉलेज,
समस्तीपुर-848101**

विचार दृष्टि का शानदार, जानदार, संयमित और नियमित सफ़र

आपके सौजन्य से प्रेषित 'विचार दृष्टि' का अंक 30 प्राप्त हुआ-इस अहैतुकी कृपार्थ मैं आपको नमन कर रहा हूँ।

आपकी पत्रिका विगत 9 वर्षों से प्रकाशित हो रही है। पर मुझे तो इसका कोई अंक प्रथम बार ही प्राप्त हुआ है। बहुत अच्छा लगा। इसे पाकर लगा मानो मैं भाग्यशाली हूँ। यह जानकर सुखद आश्चर्य हुआ कि 'विचार दृष्टि' ने बिना किसी व्यवधान के अब तक का सफ़र शानदार, जानदार एवं संयमित, नियमित ढंग से तय किया है, जबकि अनेक पत्रिकाएँ शुरू होने के 2-3 वर्षों बाद ही कोमा में चली जाती हैं।

पत्रिका में अधिकांश सामग्री विचार प्रधान एवं विचारोत्तेजक होने के कारण यह 'यथानाम तथा गुण' को चरितार्थ करने वाली है। पत्रिका के विचारों को नितांत सारस्वत एवं सात्विक प्रकार का पाकर हृदय को वास्तविक आनंद की अनुभूति हुई। अपवादों को छोड़कर संपूर्ण सुचयनित है, अस्तु अंक सोद्येश्य है, सफल एवं सशक्त है।

सर्वप्रथमत: ही इसका आनुतासिक शीर्षक 'जनता में जागरूकता जगाने की ज़रूरत' वाला संपादकीय ही अति सामयिक एवं बेलाग-लपेट है। 'विचार प्रवाह' में प्रो. कुमार रवीन्द्र का आलेख 'प्रश्न साहित्य और नैतिक मूल्यों का' भावना प्रधान, विद्वतापूर्ण तथा तार्किकता से पूर्ण मन के अतल को स्पर्श करने वाला है; तो चरती लाल गोयल का आलेख 'घातक है -अल्पसंख्यकवाद' राष्ट्र के परिप्रेक्ष्य में यथार्थ के धरातल पर लिखा गया सामयिक चिंतन का आलेख है। दोनों ही रचनाएँ अच्छी लगीं। कुटीलों का हृदय परिवर्तन करके उनको सरल बनाने वाली और सामाजिक सौहार्द्र का सोमरस घोलने वाली, कृष्ण कुमार राय की सशक्त कहानी 'बनवासी' के शुभम् को कौन नकार सकता है। निसंदेह आज ऐसी ही सकारात्मक एवं रचनात्मक रचनाओं की आवश्यकता है। आयुष्मती अलमास जमील की लघुकथा 'शरारत का फल' प्रेरक तो है ही, भाव व भाषा की स्वाभाविकता ऐसी है कि लगता है कि नई प्रतिभाशाली पाँच वर्षीय बालिका ऐसी लघुकथा लिख सकती है। लख-लख बधाइयाँ। 'दयालु लिंकन' भी प्रेरक है। मुनिश्री सुखलाल कृत 'अहिंसा की कूटनीति' हृदयग्रही भी है और हृदयाग्राही भी। कुमारी लक्ष्मी निषाद का हर्ष-विषादपूर्ण लेख 'पत्नी पर हाथ उठाने पर हथकड़ी' भी संतोषजनक लेख है। अजी! जन-जन में जीवन-जोवन-जवानी का संचार करने वाली अज़ीज़नबाई पर लिखित डॉ॰ सुधांशु कुमार द्विवदी के लेख 'आज़ादी की दीवानी थी अज़ीज़न बाई' के क्या कहने, पढ़कर मन उछाड़ और उत्सर्ग की भावना से भर गया। 'जान जाएगी बला से जाएगी' 'मरने के बाद वफ़ादार तो कहलाएँगे' शेर शायद अज़ीज़न बाई जैसी शेरनी के लिए ही रचा गया है।

साहित्य के तप:पूत साधक सिद्धेश्वर के बारे में समीक्षात्मक दृष्टि से मुझ जैसे अज्ञ (बहुत के लिए तो अल्पज्ञ) के द्वारा कुछ कहा जाना वैसा ही है जैसे टिटहरी के द्वारा सागर पी लेने को तयास। तथापि, क्योंकि संपूर्ण अंक पर ही लिख रहा हूँ, एतावता उनपर यत्किंचित (उल्टा-सीधा) लिखा जाना अपरिहार्य होने के कारण स्वाभाविक है। कुशल कवि तो हैं ही सिद्धेश्वर जी, वे सिद्धहस्त लेखक भी हैं। उनके लेखक में कम कमनीयता नहीं है। उनके द्वारा लिखित 'कांशीराम' और 'मधुर शास्त्री' दोनों ही महत पुरुषों संबद्ध संस्मरण रमणीक है। मधुर शास्त्री से जुड़ा संस्मरण तो बहुत ही अच्छा है। (यदि उनके क्रोध वर्णन को सिद्धेश्वर जी पी गए होते, तो और ही अच्छा बन गया होता)। उनके लेख 'बेटा के लिए त्राहिमाम् क्यों?' को यदि इस अंक का प्राण कहा जाए, तो अनुचित न होगा। इसमें व्यक्त ज़माने की हक़ीक़त सीधे दिल पर छुरी चलाती है। इस हृदय विदारक, मर्मस्पर्शी लेख में सिद्धेश्वर जी बहुत-बहुत सफ़ल रहे हैं। मैं बचपन से ही इस लेख में वर्णित यथार्थ को कई युवकों के भविष्य में घटित होता हुआ देखता आ रहा हूँ। मुझे यह भी लग रहा है कि लेख में वर्णित एकाकीपन के दंश का भुक्तभोगी साहित्यकारों को अपेक्षाकृत अधिक ही झेलना पड़ता है और आराम की ज़रूरत के समय उसको परेशान करने की इस मुहिम में उसकी पत्नी भी बच्चों का साथ देती हुई दिखाई दिया करती है। (शायद इन सब की यह भ्रमपूर्ण सोच रहती है कि 'इनने तो हमारा ध्यान किया ही नहीं, समाज और संसार की ही चिंता

की है, तो अब हम इनकी चिंता क्यों करें') सिद्धेश्वर जी को इस दृष्टि-अन्वेषी एवं विचार-उत्तेजक लेख के लिए शत-शत नमन।

हेमामालिनी के गालों जैसी रपटीली सड़कोंवाले बिहार (बकौल लाल) पर रपटीला व अखेल शैली में लिखित आलेख 'बिहार का बदलता परिदृश्य' सिद्धेश्वर जी की एक निष्पक्ष एवं निडर पत्रकार की रपट लेखनीयता का परिचायक है। पद्य-पक्ष सीमित है, तथापि अपेक्षाकृत अशक्त है। डॉ॰ बरसाने लाल चतुर्वेदी, के. जी. बाल कृष्ण पिल्लै, युगल किशोर प्रसाद, प्रभुदयाल खरे तथा मानिक वर्मा की रचनाएँ मन को छू गयीं। राजभवन सिंह की रचना 'आधुनिक द्रोणाचार्य को पढ़कर लगा कि बिहार के शिक्षक नैतिकता में शायद, नेताओं के भी बाप बन गए हैं रमेश तन्हा की ग़ज़ल पर तो मुझे कुछ नहीं कहना है और न मैं यही कह सकता हूँ कि आप अपनी श्रेष्ठ-सात्विक पत्रिका में ग़ज़ल न दिया करें, पर इतना अवश्य कहूँगा कि विचारों को खंड-खंड करने का पाखंड जितना इस छंद में है, उतना किसी अन्य छंद में नहीं। एक ही तंत्र और तरन्नुम में बंधी संपूर्ण रचना में न केवल विविध प्रकार के भिन्न-भिन्न विचार होते हैं, अपितु कभी-कभी तो ऊपर की पंक्ति। पंक्तियों में जो विचार हैं, नीचे की पंक्ति। पंक्तियों में ठीक उसका उल्टा विचार होता है। एक अच्छे शायर की ग़ज़ल देखें- 'रंज़ोगम की जो बात कर रहे हैं, ज़िंदगानी से धार करते हैं। मैं तो मरने की सोचे बैठा हूँ, आप जी ने की बात करते हैं।'

'बंद' व्यंग्य में बहुत कुछ बंद किए जाने की बात करते हैं एक ख़ास चीज़ बंद होने से रह गई जिसकी अति अपेक्षा थी यह कि आजकल बहुत ही पार्टियाँ अपने ही शासनवाले प्रांत में 'बंद' कराने लगी हैं। जैसा कि सद्दाम की फाँसी पर अभी उ॰प्र॰ में सपा ने किया था। (यह व्यवहार तो नितांत निदंनीय है) 'प्रजातंत्र और विकास' पत्रिका का पाठकों का कौन-सा करने वाला है? इसका स्तर और प्रवृत्ति इंटर की परीक्षा में पूछे गए 'प्रजातंत्र के गुण-दोष' के उत्तर में लिख गए आलेख जैसी है। समाचार भी चुनिंदा है पर, मैं समझता हूँ कि समाचार बासी न हो जाए, इस भय से किसी त्रैमासिक को समाचारों से बचना चाहिए। अपनी गतिविधियों की प्रशंसा अपनी ही पत्रिका में छापी जाए क्या यह भी आपको बेतुका नहीं लगता? चलिए, आपका तो विचार मिशन है, इसलिए उसकी गतिविधियाँ आप ही नहीं छापेंगे तो कौन छापेगा, पर जिनका मिशन से कोई लेना-देना नहीं है वे भी अपनी चंद पन्नों की पत्रिका में स्वयं ही मियां मिट्ठू बनते रहते हैं। इसी ही प्रकरण पर जरा हटकर - मैं आपका ध्यान डॉ॰ मणिशंकर द्वारा लिखित 'एक कर्मयोगी की जीवनी का जीवंत चित्रण' से संदर्भित कहना चाहता हूँ। अपनी ही प्रशंसा को अपनी ही पत्रिका में महत्त्वाकांक्षी ढंग से छापना क्या आपको शोभनीय प्रतीत होता है? आप भी उथले-छिछले लोगों की तरह व्यवहार करने लगेंगे, तो फिर आप में और लालू में अंतर क्या रह जाएगा? आशा है, मेरी वस्तुनिष्ठ परायणता को आप अन्यथा न लेंगे। एक बार पुन: आपकी श्रेष्ठ पत्रिका एवं संपादन-कला को प्रणाम।

ओम प्रकाश पाण्डेय 'मंजुल',
उप प्रधानाचार्य, सी. एण्ड. जे. इंटर कॉलेज कलीनगर (पीलीभीत),
कामायनी, मो. काय स्थान, पूरनपुर (पीलीभीत), उ.प्र.

संपादकीय विचारोत्तेजक एवं समस्याओं के समग्र विश्लेषण से युक्त

'विचार दृष्टि' का जनवरी-मार्च 2007 अंक : 30 प्राप्त हुआ। नववर्ष की शुभकामनाओं के साथ आपके संपूर्ण परिवार के लिए यह वर्ष ही नहीं, आगामी सारे वर्ष सुख-समृद्धि एवं यशोदायक रहे, यही हार्दिक आकांक्षा है। आपके संपादकीय विचारोत्तेजक तथा समस्याओं के समग्र विश्लेषण से युक्त होते हैं। मैं विस्तृत पत्र लिखना चाह रहा था, परंतु मेरे मित्र जीवनीकार परमानंद दोषी, गीतकार मधुर शास्त्री तथा कथाकार कमलेश्वर के निधन का समाचार जानकर मेरा मन व्यथित हुआ। उन आत्माओं को शांति मिले, यही मेरी हार्दिक आकांक्षा है।

बाल शौरि रेड्डी,
ज्योतिनिकेतन, 27, वडिवेलीपुरम, वेस्टमांबलम्, चेन्नई- 600033

चरैवेति.... चरैवेति ....

अपने एक मित्र के सौजन्य से 'विचार दृष्टि' का जनवरी-मार्च अंक देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। इस अंक में प्रो. मणिशंकर प्रसाद की रचना 'एक कर्मयोगी की जीवनी का जीवंत चित्रण' का मैंने मनोयोगपूर्वक अध्ययन किया। यह जानकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई कि प्रो. राम बुझावन सिंह जी ने डॉ॰ शाहीद जमील के कुशल संपादकत्व में 'सिद्धेश्वर : व्यक्तित्व और विचार' नाम्नी एक जीवनी लिखी है। इस कार्य में अभीष्ट सिद्धि के लिए मैं अपने पितातुल्य अभिभावक को शत्शत् प्रणाम करता हूँ। वैसे भी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी सिद्धेश्वर जी मंगलकर्ता सिद्ध पुरुष हैं जिनकी लेखनी में गतिशीलता प्रचुर मात्रा में मिलती है और जो श्रम करने में थकते नहीं। अर्थात, सिद्धेश्वर जी चरैवेति ... चरैवेति... के पक्षधर हैं जिनके जीवन का नाम चलना है, जीवन का काम चलना है। इस संस्कारी व्यक्तित्व और सुंदर कृति पर हम अपनी चार पंक्तियों से इन्हें हार्दिक बधाई देता हूँ -

बहुजन हिताय जिसका जीवन अर्पित है,
बहुजन सुखाय जो बीत राग त्यागी है,
सेवा ही जिसके जीवन का संबल है,
वह सम्माननीय सिद्धेश्वर ही बड़भागी है।

गुरुदेव प्रो. राम बुझावन बाबू की यह पुस्तक एक अनुपम, श्रेष्ठ एवं अद्वितीय है जिसके सटीक संपादन, साफ छपाई एवं प्रस्तुतीकरण से हिंदी प्रेमियों एवं ज्ञानार्जन में अभिरुचि रखने वालों के लिए यह संग्रहणीय एवं पठनीय हो गई है। मैं इनकी साहित्यिक यात्रा को शत्-शत् नमन करते हुए यही कहता हूँ कि-

अब न रसूल आएँगे दुनिया में न राम आएँगे,
सिर्फ इन्सान ही इन्सान के काम आएँगे।

डॉ॰ शशिभूषण प्रसाद सिंह
ग्राम-भासिंगपुर, पत्रा॰-बंगपुर, भाया-परवलपुर, जिला-नालंदा पिन-803114

संपादकीय प्रबोधात्मक

'विचार दृष्टि' का 'जनवरी-मार्च, 2007' अंक मिला। धन्यवाद। इस अंक को एक ही बैठक में अवधानतापूर्वक

देख-पढ़ गया। 'संपादकीय' प्रबोधात्मक है। आज के आपाधापी, भाग-दौड़, स्वार्थपरता, वैचारिक संकुचितता-संकीर्णता तथा सांस्कृतिक मूल्यों के गिरावट के युग में व्यक्ति संवेदना-शून्य हो गया है। आपने भारतीय समाज की सामूहिक प्रगति के लिए 'विचार-साम्य' को ज़रूरी माना है जो अत्यंत उचित ही है। भारत को विकास-मार्ग पर कैसे लाया जा सकता है? इस संदर्भ में आपके चिंतन की मैं सराहना करना चाहता हूँ। प्रो. कुमार रवीन्द्र-कृत 'प्रश्न साहित्य और नैतिक मूल्यों का' नाम्नी रचना बहुत ही 'विचारणीय' है। काव्य-रचनाओं की राह से होकर गुजरना सुखदायक लगा। 'एक कर्मयोगी की जीवनी का जीवंत चित्रण' (समीक्षक : डॉ. मणिशंकर प्रसाद) नाम्नी रचना ज्ञानवर्द्धक लगी। 'सम्मान' (पृष्ठ-46-47) शीर्षक के अंतर्गत बहुत अच्छी-अच्छी जानकारियाँ मिल रही हैं। श्री सिद्धेश्वर-कृत 'बिहार का बदलता परिदृश्य' नाम्नी रचना रोचक एवं पठनीय है।

श्री सिद्धेश्वर-कृत 'बेटा के लिए त्राहिमाम् क्यों?' नाम्नी रचना को मैं 'विचारणीय' एवं 'आचरणीय' मानता हूँ। मेरी यह निश्चित धारणा है कि 'पुत्र की अभिलाषा' 'कोरा अँधविश्वास' है - यह एक सामाजिक समस्या है जो भारतीय समाज के विकास-मार्ग में आज बड़ा भारी अवरोध है। मैं यह भी मानता हूँ कि माँ-बाप के नाम को उज्ज्वल करना ही संतान (पुत्र) का धर्म होता है। आज समाज में अधिकांश पुत्र ऐसे लक्षित हो रहे हैं, जो अपने पूर्वजों के वंश को आगे तो बढ़ा रहे हैं किंतु अपने माँ-बाप के नाम को (अपने रचनात्मक चिंतन एवं कार्यकलापों के आधार पर) उज्ज्वल नहीं कर पा रहे हैं। भारतीय मनीषी भर्तृहरि के अनुसार यशस्वी जीवन सार्थक होता है। उनकी यह मान्यता निरापद है कि -

''परिवर्तिनि संसारे मृत: को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंश: समुन्नतिम्।।''

मेरी यह निश्चित धारणा है कि यदि भारतीय समाज के नागरिक अपनी 'बेटी' को भी उतना ही महत्त्व देने लगें, जितना महत्त्व अपने 'बेटे' को देते हैं, तो भारत में जनसंख्या नहीं बढ़ेगी।

समग्रत: आपकी 'विचार-दृष्टि' नाम्नी पत्रिका राष्ट्रीय चेतना की एक वैचारिक एवं स्वस्थ्य पत्रिका है। इसके उज्ज्वल भविष्य के लिए मंगलकामनाएँ।

सद्भावनाओं के साथ,

-डॉ. महेश चंद्र शर्मा
'अभिवादन', 128 एक,
श्याम पार्क (मेन),
साहिबाबाद, गाज़ियाबाद

पत्रिका निरंतर ऊँचाई की ओर

'विचार दृष्टि' के अंक 30 में छपी शाहिद जमील की कहानी 'योद्धा' एक पराभूत योद्धा की संघर्ष-गाथा है जिसमें कथाकार ने आंकठ में डूबे शासन-तंत्र के भ्रष्टाचार को उजागर करने में सफलता पाई है। कथाकार को बधाई। इस अंक के प्राय: सभी स्तंभों में सम्मिलित आलेख पठनीय तो हैं ही, संग्रहणीय भी। पत्रिका निरंतर अपनी ऊँचाई की ओर बढ़ रही है। जिसका सारा श्रेय संपादन-समूह को जाता है। संपादक हमारी हार्दिक बधाई स्वीकारें।

- युगल किशोर प्रसाद
बिहारी पथ, न्यु विग्रहपुर
पटना-800 001

WITH BEST COMPLIMENTS FROM :

MAHESH HOMOEPATHIC LABORATORY & GERMAN HOMOEO STORES

Saket plaza, Jamal Road,
Patna-800001

Ph:(0612) 2238292 (O) 2674041 (R)

Offers a wide range of mother Tinchers, Billutin Biochemic Tablet patents, Globels

Dr. Mahesh Prasad - D.M.S. Patna)
Dr. Arum Kumar -D.H.M.S. (Patna)

Spcialist in Chronic Diseases

ज़रा इनकी भी सुनें

पाक की धरती से भारत के ख़िलाफ़ होने वाली किसी भी तरह की आतंकी वारदात पर साझातंत्र के दायरे में लगाम लगाई जाए। **-भारत**

अपने विदेश संबंधों के मामले में हम ऐसे मुकाम पर पहुँच गए हैं जहाँ एकदम पास और दूर के पड़ासियों तथा दुनिया के अन्य प्रमुख देशों से हमारे रिश्ते उल्लेखनीय रूप से सुधरे हैं।

-प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह

अगर 2020 तक भारत विकसित राष्ट्र बनेगा तो बिहार भी उससे पहले 2015 तक विकसित राज्य कहलाएगा।

- मुख्य मंत्री नीतीश कुमार

हमारा पुलिस कानून काफी पुराना है। अत: उसमें बदलाव की जरूरत है।

- गृहमंत्री शिव राज पाटिल

अगर बीसवीं सदी का समापन पूरी दुनिया में लोकतंत्र की विजय पताका फहराने के साथ हुआ, तो 21 वीं सदी की शुरूआत इसकी पहुँच, गहराई और इसके प्रभावों के प्रति एक चिंता के साथ हुई है।

-राजनीतिक विश्लेषक योगेन्द्र यादव

ठाकरे जी के भतीजे नया नया प्याज छील रहे हैं, लेकिन राजनीति करने के और भी रास्ते हैं।

- रेल मंत्री लालू प्रसाद यादव

यदि आस्ट्रेलियाई क्रिकेटर मैदानी बर्ताव को आस्ट्रेलिया के किसी बार में दोहराएँगे, तो कोई तुनक मिजाज आदमी उनकी पिटाई कर देगा।

- महान भारतीय बल्लेबाल सुनील गावस्कर

भाषाई गुलामी से कब होगा मुक्त हमारा राष्ट्र

बात की जाती है हिंदी को विश्व-संस्था संयुक्त राष्ट्र में स्थान दिलाने की। मुझे तो लगता है कि जब हमारा अपना ही राष्ट्र परतंत्र की भाषा अँग्रेजी के जाल में बुरी तरह जकड़ा हुआ है तो विश्व-संस्था में हिंदी को स्थान दिलाने की बात बेमानी लगती है। इस संदर्भ में यहाँ यह कहना कदाचित अनुचित नहीं होगा कि सर्वसत्ता संपन्न हमारा लोकतांत्रिक गणराज्य का स्वरूप महज कागज़ी बनता जा रहा है, कारण, इस गणराज्य की अभिव्यक्ति स्वभाषा में न होकर विदेशी भाषा अँग्रेजी में हो रही है। इसकी अभिव्यक्ति और परिणति अभी भी भाषाई गुलामी का शिकार है।

कहना नहीं होगा कि फ्रेंच, जर्मन, स्पैनिश और रूसी भाषा संयुक्त राष्ट्र की अधिकृत भाषा है, जबकि सच्चाई यह है कि फ्रांस, जर्मनी, स्पेन और रूस में इन भाषाओं के बोलने-समझने वालों की तुलना में न केवल हिंदी, बल्कि तमिल, तेलुगु तथा बांग्ला इन तमाम भारतीय भाषाओं के बोलने-समझने वालों की संख्या अधिक है, फिर भी हमारी ये भारतीय भाषाएँ विश्व संस्था संयुक्त राष्ट्र में स्वीकृत नहीं हैं। हिंदी तो विश्व में सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है, लेकिन संयुक्त राष्ट्र में वह मान्यता प्राप्त नहीं है।

दरअसल हम अभी तक अँग्रेजी की गुलामी का जुआ उतार फेंकने में इसलिए समर्थ नहीं हो पा रहे हैं, कि आजादी के बाद भी जिन लोगों पर अँग्रेजियत का भूत सवार है उन लोगों के लिए स्वभाषा का प्रयोग हीनता का प्रतीक बन गया है। हमारे देश के जो अँग्रेजीदाँ हैं उनमें स्वाभिमान की भावना न होकर हीनता का भाव भर गया है। यही कारण है कि दुनिया भर में प्रत्येक देश के महत्त्वपूर्ण लोग औपचारिक एवं महत्त्वपूर्ण अवसरों पर जहाँ अपनी भाषा का प्रयोग करते हैं, वहीं हमारे देश के राजनेता सहित नौकरशाह तथा महत्त्वपूर्ण पदों पर बैठे लोग अपने देश की स्वभाषा में बोलना पसंद नहीं करते हैं, वे अँग्रेजी भाषा का ही धड़ल्ले से प्रयोग करते हैं, क्योंकि वे अँग्रेजी भाषा से ही चिपके रहने में गर्व महसूस करते हैं। हिंदी अथवा अन्य भारतीय भाषाओं को वे आम आदमी की भाषा समझकर उन्हें अपनी गरिमा के अनुरूप नहीं समझते हैं। आपने देखा नहीं देश में गठित ज्ञान आयोग के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने पिछले दिनों प्रधानमंत्री डॉ० मनमोहन सिंह को पत्र लिखकर सलाह दी है कि देश भर के विद्यालयों में प्राथमिक कक्षा से ही अँग्रेजी की पढ़ाई अनिवार्य कर दी जाए। उन्होंने तर्क यह दिया कि ज्ञान के क्षेत्र में मौजूदा दौर में जैसी प्रतिस्पर्धा चल रही है उसमें हमारे देश के युवा अँग्रेजी के सम्यक् ज्ञान के अभाव की वजह से पिछड़ रहे हैं। निश्चित रूप से सैम पित्रोदा की यह अभिव्यक्ति पाश्चात्य सोच पर आधारित है जो मात्र तकनीकी विकास को ज्ञान मानने वाली अवधारणा है, भारतीय आधारित नहीं। तकनीकी विकास ने ज्ञान की सोच को अत्यधिक सीमित कर दिया है।

राष्ट्र का अर्थ सरकार नहीं होता। भूमि और संस्कृति के प्रति सर्वोपरि आग्रही श्रद्धा से राष्ट्र बनते हैं। जिस प्रकार राष्ट्र विरोधी तत्त्वों को कुचलने और नागरिकों की हिफाजत से सरकार के जिंदा या मुर्दा होने की पहचान होती है, उसी प्रकार स्वभाषा तथा अपनी संस्कृति से भी राष्ट्र की पहचान बनती है। सैम साहब ने संभवतः स्वभाषा तथा भारतीय संस्कृति की अनदेखी कर मात्र तकनीकी ज्ञान की दौड़ में पीछे रह जाने के भय से भयभीत हैं। हालांकि तकनीकी विकास के भाषा से प्रभावित होने का जहाँ तक संबंध है देश की संचार सेवा अँग्रेजी भाषा से प्रभावित जरूर है, लेकिन ऐसा नहीं कहा जा सकता कि भाषा के मामले में वह अँग्रेजी पर निर्भर है, क्योंकि विश्व की तमाम भाषाओं सहित समस्त भारतीय भाषाओं में संचार तकनीकी का अद्यतन स्वरूप उपलब्ध है।

इस देश में जहाँ सौ करोड़ से अधिक लोग रहते हैं उनमें से मात्र पाँच प्रतिशत लोग ही ऐसे हैं जो सैम पित्रोदा जैसे लोगों की तरह अँग्रेजी की प्राथमिकता के प्रति प्रतिबद्ध होंगे। अब तो स्थिति यह होती जा रही है कि जन राज्यों के वोट बैंक को रिझाने या तुष्टीकरण के लिए हिंदी को केंद्रीय सरकार की राजभाषा को भाषा के रूप में स्वीकार करने की बजाय अँग्रेजी को अनिश्चित काल तक राजभाषा रखने का प्रस्ताव संसद द्वारा स्वीकार किया गया था, आजकल उन्हीं राज्यों में अँग्रेजी हटाओ का नारा बुलंद हो रहा है, क्योंकि वहाँ के स्वस्थचित्त लोगों ने यह महसूस किया कि बिना स्वभाषा अथवा मातृभाषा के ज्ञान के बच्चों को अनुभूति संबंधी नींव खोखली होती जा रही है। आपने देखा नहीं तमिलनाडु के मुख्यमंत्री करुणानिधि की सरकार ने पिछले दिनों मद्रास उच्च न्यायालय से यह अपेक्षा की कि वह अपनी कार्यवाही तमिल भाषा में संपन्न करे। और तो और स्वयं करुणानिधि द्वारा तमिलभाषा में लिखी पुस्तकों का अन्य भारतीय भाषाओं सहित हिंदी में अनुवाद कराने का कार्यक्रम जोर-शोर से चल रहा है। इन राज्यों के राजनेताओं को यह भी अहसास हो गया है कि बिना हिंदी बोले-समझे वे अखिल भारतीय स्तर के न तो नेता बन सकते हैं और न केंद्र सरकार पर विराजमान हो सकते हैं। नरसिम्हा राव केंद्र में यदि प्रधानमंत्री के पद पर आसीन हुए भी तो और कारणों के अतिरिक्त कई भारतीय भाषाओं का ज्ञान भी उनमें से एक कारण रहा। फिर इसी प्रकार जब एच. डी. देवगौड़ा भारत के प्रधानमंत्री हुए, तो हिंदी सीखने और समझने की उनकी बेताबी देखने लायक रही। करुणानिधि के पहले जयललिता ने भी तमिलनाडु के सभी विद्यालयों में प्राथमिक शिक्षा मातृभाषा में देने का आदेश निर्गत किया था, हालांकि उसे मद्रास उच्च न्यायालय द्वारा अवैध घोषित कर दिया गया था। फिर करुणानिधि ने नए सिर से मद्रास उच्च न्यायालय को घेरना प्रारंभ कर दिया है। इधर कर्नाटक में भी विद्वज्जनों ने कन्नड़

राजनीति करने से तनिक भी बाज नहीं आते हैं। यह बात विशेषरूपेण ध्यान देने योग्य है कि संविधान के अनुच्छेद 21 में देश के नागरिकों के साथ व्यक्तियों को भी जीवन का अधिकार प्रदान किया गया है। हमारे नेता अपनी उपलब्धियों का बखान करते हुए तनिक भी नहीं थकते। आये दिन वे कहते हैं कि अनाज का भण्डार छः करोड़ टन से भी अधिक हो गया है, फिर भूख से निजात पाने के लिए लोगों को आम की गुठली खाकर मरने की नौबत क्यों आती है? इस प्रश्न का उत्तर निराकरण व्यवस्था से जुड़े व्यक्तियों के पास नहीं है।

संविधान के नीति निर्देशक तत्त्वों में भी सामाजिक शोषण तथा कुप्रथाओं से मुक्ति की बातें कही गई हैं। उदाहरण स्वरूप मद्य-निषेध, कुटीर उद्योगों का विकास तथा संरक्षण, स्त्री-पुरुषों को समान कार्यों के लिए समान पारिश्रमिक तथा वृद्धापेंशन एवं 14 वर्ष तक की उम्र के बच्चों के लिए नि:शुल्क शिक्षा की व्यवस्था का प्रावधान आदि। स्त्रियों एवं बच्चों को शोषण मुक्त करने, गर्भवती महिलाओं के लिए भोजन, प्रसूति गृह तथा चिकित्सा की व्यवस्था आदि विषय उल्लेखनीय हैं। इन दिशाओं के कार्यक्रम अपनायें तथा चलाये जा रहे हैं, परन्तु समस्याएँ इतनी विस्तृत और गहरी हैं कि उनका निदान सरकार के सीमित साधन और केवल सरकारी प्रयास के द्वारा सम्भव नहीं है।

उपर्युक्त प्रकरण में दो बातें महत्त्वपूर्ण हैं, जिनका उल्लेख करना लेखक की दृष्टि में अत्यंत आवश्यक प्रतीत होता है। प्रथम यह है कि कि भारत का संवैधानिक बनावट लोकतांत्रिक है। यह सर्वविदित है कि लोकतंत्र खरगोश की भाँति एवं गति से ही अपने कार्य का सम्पादन करता है। लोकतंत्र के तहत समाज के सभी समुदाय एवं वर्गों के हितों को ध्यान में रखकर कार्य किया जाता है, तभी सामंजस्य की स्थापना संभव है।[2] भारतीय संविधान की इस प्रक्रिया में ज्वार-भाटा आते-जाते ही रहते हैं। बगैर किसी कौमा और पूर्ण-विराम के बढ़ती हुई जनसंख्या सामाजिक न्याय को उपलब्ध कराने के मार्ग में सबसे बड़ी चुनौती है। सरकार तथा प्रशासन के कठिन एवं अथक प्रयास के बावजूद भी संविधान के प्रस्तावना में वर्णित एवं उल्लिखित मानवीय गरिमा को प्राप्त नहीं करने में बहुत हद तक यह बढ़ती हुई जनसंख्या भी बाधक सिद्ध होती है।

भारतीय समाज हजार साल के गुलामी की मानसिकता से आज भी पूर्णरूपेण मुक्त नहीं हुआ है। उन्मुक्त वातावरण में भी हम अन्य नागरिकों के हक एवं अधिकारों को मान्यता न दे कर उनकी सामाजिक एवं आर्थिक मुश्किलें बढ़ा रहे हैं। सरकारी नीतियों का भी विशेषकर आर्थिक क्षेत्र में अपनाई गईं 90 के दशक की मुक्त अर्थ व्यवस्था की नीतियाँ जो अन्तरराष्ट्रीय मुद्रा कोष, विश्व बैंक, गैट और अब डब्ल्यू॰टी॰ओ॰ द्वारा संचालित नीतियाँ हैं, वे कमजोर एवं वंचित वर्गों के हितों की उपेक्षा ही की हैं। उत्तर प्रदेश में छः प्रतिशत तक गरीबी रेखा के ऊपर आना इसका ज्वलंत उदाहरण है।[3] ग्लोबलाइजेशन की आड़ में हम उन्हीं नीतियों पर चलने के लिए विवश हैं, जो नीतियाँ ब्रिटिश राज में भारत में लागू थी, जिसका घातक आर्थिक राजनीतिक एवं सामाजिक परिणाम देश भुगत चुका है।[4]

पेटेंट राइट, इन्टलेक्चुअल प्रोपर्टी राइट की दुहाई देकर पश्चिमी राज्य भारत की समृद्ध जैव वनस्पति पर अपना हक जताने लगे हैं। नीम, हल्दी, आँवला, यहाँ तक की विश्व प्रसिद्ध भारत की बासमती चावल पर भी अपना पेटेंट राइट का दावा कर रहे हैं। जिन संशाधित बीजों टरमिनेटेड बीजों तथा कीट नाशकों का भारत में निर्यात की पारम्परिक कृषि प्रणाली है जिसपर लगभग 70 प्रतिशत लोगों का जीवन निर्भर है, जो अभी भी भारतीय अर्थ व्यवस्था की रीढ़ बनी हैं, उसे बर्बाद कर भारत में गरीबी का उन्मूलन करने में बाधक सिद्ध हो रहा हैं। राजनीतिक नेता भी इस कार्य में कम दोषी नहीं है। सामाजिक न्याय की दुहाई देने वाले राजनीतिक नेता और दल साामजिक न्याय का नारा बनाकर सत्ता का सुख भोगने में व्यस्त हैं। सुरसा जैसा बढ़ रहा और दीमक की भाँति समाज को खोखला करता हुआ भ्रष्टाचार, सामाजिक न्याय उपलब्ध कराने के मार्ग में गम्भीर बाधा का कारण है। सामाजिक न्याय के महान समर्थक राजनेता आकण्ठ भ्रष्टाचार में डूबे हैं। बेमेल राजनीतिक जोड़-तोड़ कर सत्ता के खेल में संलग्न हैं। उनका सामाजिक न्याय के प्रति ऐसा व्यवहार सामाजिक न्याय का माखौल ही तो उड़ा रहा है।

आज उपभोक्तावाद की संस्कृति ने समाज में भौतिकवादी प्रवृत्तियों को बढ़ावा एवं जन्म दिया है। परिणाम स्वरूप मानवीय संवेदना का प्रथम शर्त्त सामाजिक न्याय सुनिश्चित करना है, वह आज मरती जा रही है। लोगों की आज यह अवधारणा बन गई है-'माई कम्जम्शन फस्ट डेबिल टेक हाईण्ड मोस्ट'। यह विचारणीय प्रश्न है। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री का यह कथन-'बढ़ती हुई आशाओं की क्रांति का लोगों ने गलत रूप से अर्थ लगाया है। हमारा समाज उपभोक्तावाद की अंधी दौड़ से अपने-आपको मुक्त कर सका तो संविधान में वर्णित एवं उल्लिखित सामाजिक न्याय की पुस्तकों एवं महफिलों में चर्चा से अधिक कुछ नहीं रह जाएगा। तत्पश्चात् गाँधीजी का सामाजिक न्याय से संबंधित भारतीय व्यवस्था मात्र स्वप्न लोक की वस्तु बनकर रह जाएगी। महात्मा गाँधी की इसी चिन्ता को रेखांकित करते हुए प्रख्यात समकालीन राजनीतिक विज्ञान के विद्वान रजनी कोठारी ने कहा है-'यदि समाज की प्रगति इसी रूप में जारी रही तो 20 प्रतिशत लोग सुख-सुविधा का भोग करेंगे और 80 प्रतिशत व्यक्ति उनके भोग के साधन होंगे।''[5]

सामाजिक न्याय उपलब्ध कराने में जितनी भी चुनौतियाँ हैं, उनका निराकरण संविधान के प्रावधानों को ईमानदारी पूर्वक लागू कर ही लोगों के लिए सुनिश्चिम किया जा सकता है। संविधान में किये गये संशोधन निम्नवत् हैं - जमींदारी-उन्मूलन के लिए पारित विभिन्न कानूनों को संविधान की नवीं अनुसूची में शामिल करना, सम्पत्ति का मौलिक अधिकार (अनुच्छेद 31) को 42 वें संशोधन के जरिये मौलिक अधिकार की सूची से हटाना आदि ऐसे कदम हैं, जो सामाजिक न्याय के मार्ग में संवैधानिक बाधा समझे जाते हैं। बैंकों का राष्ट्रीयकरण, राजा-रजबाड़ों के पेंशन का अंत आदि ऐसे कार्य हैं, जो सामाजिक न्याय करने में श्रेष्ठ सिद्ध हुए हैं। सर्वोच्च न्यायालय का केशवानन्द भारती के मामले में दिया गया यह निर्णय तर्क संगत प्रतीत होता है - मौलिक अधिकारों समेत संविधान के किसी भी भाग में, बशर्ते कि वह संविधान में संशोधन करने का अधिकार है। सामाजिक न्याय सुनिश्चित करने में संविधान तथा संवैधानिक संस्थाओं की अहम् भूमिका होती है। यह आवश्यक रूप से हमें भूलना नहीं चाहिए-संवैधानिक एवं वैधानिक उपायों द्वारा ही लोगों को उन परिस्थितियों से मुक्ति मिलेगी, जिसे पाने या नहीं पाने पर मनुष्य का कोई बस था।''[6] अर्थात् लेखक के मतानुसार बिना सामाजिक न्याय एवं सोच में परिवर्तन लाये, एक स्वच्छ एवं पवित्र समाज की कल्पना बिल्कुल निरर्थक सिद्ध होगी, सिर्फ स्वप्न मात्र रह जाएगी। कारण स्पष्ट है, क्योंकि नफरत के बीज मानव मस्तिष्क में ही उत्पन्न होते हैं। इसलिए नफरत के इस पौधे को भारत की महान मानवीय परम्पराओं, संस्कारों एवं उचित शिक्षा के द्वारा ही समाप्त कर मनुष्य को सामाजिक बदलाव के लिए प्रेरित किया जा सकता है, जिससे सामाजिक न्याय का पक्ष सामाजिक स्तर पर निर्मित हो सके,

तभी हम संविधान कानून और सरकार के मुहताज नहीं रहेंगे। आज ग्लोबलाइजेशन के इस दौड़ में सरकार स्वयं अपनी भूमिका कम कर रही है और निजी क्षेत्र को प्रत्येक गतिविधि में आगे बढ़ाने का पक्षधर है। अत: अब हमें सामाजिक न्याय को सुनिश्चित करने के लिए उन स्वयंसेवी और गैर सरकारी संस्थाओं का भी सहयोग लेना होगा, जिनकी गतिविधियाँ सामाजिक न्याय को सहारा प्रदान करती हैं। वर्तमान में हमारा समाज आज बहुत-सी कुप्रथाओं का शिकार है, जैसे-दहेज प्रथा, यदाकदा सती होने की घटना, आये दिन कमजोर वर्गों पर सामन्ती शक्तियाँ द्वारा अत्याचार एवं जुल्म, बालश्रम की समस्या, भ्रष्टाचार की समस्या इत्यादि। इन समस्याओं पर काबू पाने के लिए हमें लोगों में जागृति फैलानी होगी। सामाजिक मूल्यों में हो रहे विघटन एवं ह्रास को लोगों में नैतिक चेतना को जगाकर खत्म करना होगा। 14 वर्ष तक के बच्चों के लिए अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था करके बालश्रम पर काबू पाया जा सकता है। आज खुशी एवं हर्ष की बात यह है कि 93 वें संविधानिक संशोधन द्वारा प्राथमिक शिक्षा के अधिकार को मौलिक अधिकार बनाने का विधेयक संसद ने पारित कर एक नये इतिहास की स्थापना की है। मुझे उम्मीद और विश्वास दोनों है कि इस देश एवं समाज में शिक्षा का प्रचार एवं प्रसार होगा। सामाजिक न्याय का पक्ष और अधिक मजबूत होगा। समाज के शोषित एवं वंचित वर्ग के लोग आज तक सामाजिक अन्याय के शिकार रहे हैं, उन्हें त्राण मिलेगा। हाल के दशक में शोषित एवं वंचित लोगों में राजनीतिक चेतना का संचार हुआ है। उन्होंने आज अपने आपको एक शक्तिशाली राजनीतिक वर्ग के रूप में स्थापित किया है। आज वैसे नेताओं को सबक सिखाने की आवश्यकता है, जिन्होंने सत्ता प्राप्ति के लिए वोट बैंक माने बैठे हैं।

राजनीतिक भ्रष्टाचार पर अंकुश लगाकर ही सामाजिक न्याय को सही मायने में प्राप्त किया जा सकता है। इस कार्य के लिए जनमत राजनेताओं पर दबाव डालकर संसद में कई दशकों से लम्बित लोकपाल विधेयक को पास कराने के लिए प्रेरित किया। हमारे देश में महिलाओं की आबादी लगभग 50 प्रतिशत है। महिलाओं के प्रति जो भेद-भाव है, उससे मुक्त करने के लिए स्त्री सशक्तिकरण (इन पावरमेण्ट ऑफ वोमेन) की आवश्यकता है। महिलाओं को संसद तथा विधान सभाओं में 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान कर राजनीतिक परिवर्तन की शुरूआत हो सकती है। इससे समाज में सामाजिक न्याय मजबूत होगा। यदि इन बातों पर ध्यान देते अमल किया जाये तो भारत के ऋषि-मुनियों एवं महापुरुषों तथा देश के निर्माताओं का वह सपना साकार सिद्ध होगा, जिसमें समाज के हर प्रकार के भेदभाव, अत्याचार, अन्याय एवं शोषण से मुक्त करने की बात कही गई है। इसके अन्तर्गत एक ऐसे समाज की कल्पना की गई थी, जिसमें भारतीय दर्शन का यह मूलमंत्र ''सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामय: को चरितार्थ किया जा सकता है, तभी सबके लिए सामाजिक न्याय सुनिश्चित कर संविधान में अभिव्यक्त सामाजिक न्याय को वास्तविकता का जामा पहनाया जा सकता है। अन्यथा नहीं।''

व्याख्याता, राजनीति शास्त्र विभाग,
मारवाड़ी महाविद्यालय, राँची

हम आपसे ही मुख़ातिब हैं

पत्रिकाएँ और पुस्तकें खरीदकर पढ़ने में जितना मज़ा आता है उतना मुफ्त में पाकर नहीं। इसलिए जब आप 'विचार दृष्टि' पत्रिका के नमूना प्रति की माँग करें तो यह लिखना न भूलें कि आप इसकी सदस्यता ग्रहण करना चाहते हैं। पता नहीं क्यों पत्रिकाओं का सदस्य बनना अपना कर्त्तव्य नहीं, लोग उसे मुफ्त में झपटना अपना अधिकार समझते हैं।

दो वर्षों तक 'राष्ट्रीय विचार पत्रिका' और बाद में भारत के समाचार पत्रों के पंजीयक द्वारा 'विचार दृष्टि' शीर्षक अनुमोदित एवं निबंधित होने पर पिछले आठ साल से निरंतर इसकी प्रति आप प्रबुद्ध पाठकों एवं साहित्य-सेवियों के हाथों जा रही है और जिसके तेवर व कलेवर को भी आपने तहेदिल से स्वीकारा है। समझदारी का तक़ाज़ा है कि इसकी सदस्यता ग्रहण कर इसके नियमित प्रकाशन में अपेक्षित सहयोग करें। यह आप पाठकों की गरिमा के अनुरूप होगा और हम भी आपकी आकांक्षाओं एवं विश्वासों के अनुरूप एक स्वस्थ पत्रिका आप तक पहुँचाने में समर्थ हो सकेंगे। पिछले छ: महीनों में इसकी सदस्यता ग्रहण में अभिरुचि लेकर आपने मुझे प्रोत्साहित किया है यह आपकी सदाशयता, उदारता एवं सेवाभाव का द्योतक है। हम तहेदिल से आभारी हैं आप सभी नए सदस्यों का। अगर आपकी सदस्यता समाप्त हो चुकी है तो एक सौ रुपए भेजकर उसका नवीनीकरण करा लें। पत्रिका परिवार की ओर से नव वर्ष की बधाई।

संपादकीय-प्रकाशकीय कार्यालय

'दृष्टि', यू. 207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली-92 फोन: 11-22059410 / 22530652
'बसेरा', पुरन्दरपुर पटना-800001 फोन: 0612- 2228519 एवं आर॰ ब्लॉक, पथ सं॰-5, आवास सं॰-सी॰/6, पटना- 800001 फोन: 0612- 2226905

विचार दृष्टि

विज्ञापन दर तालिका

आवरण पृष्ठ

1. आवरण अंतिम रंगीन	25,000 रु0
2. आवरण अंतिम रंगीन आधा पृष्ठ	15,000 रु0
3. आवरण रंगीन पूर्ण पृष्ठ संख्या 2	15,000 रु0
4. आवरण रंगीन पूर्ण पृष्ठ संख्या 3	15,000 रु0
5. आवरण रंगीन आधा पृष्ठ संख्या	27,500 रु0
6. आवरण रंगीन आधा पृष्ठ संख्या	37,500 रु0

एक वर्ष के चार अंकों के लिए 25 प्रतिशत की छूट दी जाती है।

भीतरी पृष्ठ

7. रंगीन पूर्ण पृष्ठ	7,500 रु0
8. रंगीन आधा पृष्ठ	4,000 रु0
9. रंगीन चौथाई पृष्ठ	2,000 रु0
10. साधारण पूर्ण पृष्ठ	2,000 रु0
11. साधारण आधा पृष्ठ	1,000 रु0
12. साधारण चौथाई पृष्ठ	500 रु0

विज्ञापन राशि का भुगतान चेक/ड्राफ्ट द्वारा 'विचार दृष्टि' के नाम से निम्न पते पर निर्गत कर अथवा नकद मंच द्वारा प्राधिकृत प्रतिनिधि को किया जा सकेगा।

संपर्क कार्यालय :

'दृष्टि' यू0 207, शकरपुर, विकास मार्ग, दिल्ली -92, फोन : 011-22530652, 011-22059410, 0612-2228519

ग़ज़ल

–उदय कुमार 'राज़'

यहाँ अब कोई दिल भी प्यार के क़ाबिल नहीं मिलता।
मेरे दिल को जो दिल समझे यहाँ वो दिल नहीं मिलता॥

यहाँ हर मोड़ पे अपने बहुत हमदर्द मिलते हैं।
सिले जो दिल के ज़ख़्मों को वो दरियादिल नहीं मिलता॥

जहाँ में सबकी कश्ती का किनारा मिल भी जाता है।
मेरी कश्ती का यारों कोई भी साहिल नहीं मिलता॥

अँधेरे में सिमटती जा रही है जिंदगी मेरी।
उजाले की झलक दिखलाए वो क़ंदील नहीं मिलता॥

वफ़ा के नाम पर तो कत्ल हो जाऊँगा मैं हँसकर।
मगर बदक़िस्मती से यार वो क़ातिल नहीं मिलता॥

''यह प्राइवेट दवाखाना है, कोई खैराती अस्पताल नहीं। बिना पूरे रुपये जमा किए आपरेशन नहीं हो सकता। अगर पैसा नहीं है तो औरत को कहीं और ले जाओ।''

डाक्टरनी की दो टूक बेरुखी की बातें सुनकर जुम्मन स्तब्ध रह गया। उसकी तो बोलती ही बंद हो गई। दिन का समय होता तो भाग-दौड़ करके कुछ जुगाड़ करता। इस बेला तो कुछ भी मुमकिन नहीं था। मायूस होकर चुपचाप बाहर चला आया और संतू के पास जाकर बोला,

''तुम ठीक कहते थे संतू भैया! डाक्टरनी कह रही है कि ऑपरेशन करके बच्चा निकालना होगा, नहीं तो दोनों की जान का खतरा है। सोलह हजार रुपये का खरचा बतलाया है। पूरा रुपया पहले जमा करने को कह रही है। बहुत गिड़गिड़ाया, लेकिन कुछ नहीं सुना। साफ-साफ कह दिया कि अगर रुपये नहीं है तो औरत को कहीं और ले जाओ। इस समय इतने रुपये का इंतजाम कहाँ से होगा भैया। चलो, औरत को लेकर घर वापस चलते हैं। किस्मत में जो कुछ भला-बुरा लिखा होगा, अपने गाँव-घर में होगा। वहाँ कम से कम दुख-सुख बाँटने वाले चार लोग तो पास होंगे। इस बेरहम डाक्टरनी की मुँह माँगी माँग पूरी करने के लिए डाका तो नहीं डाल सकते।''

''क्यों इतने निराश हो रहे हो जुम्मन भाई! शहर के सरकारी अस्पताल का दरवाजा तो नहीं बंद है। इसी हारे-गाढ़े के लिए तो सरकारी अस्पताल होते हैं। अभी हम तुम्हारे साथ हैं। चलो शहर निकल चलते हैं। चार मील की तो बात है, घंटा भीतर पहुँच जाएँगे। कम से कम मन को तो तसल्ली रहेगी कि अपनी तरफ से कुछ भी उठा नहीं रखा। वैसे तो मरना-जीना सब भगवान के अधीन है। जो होनी होगी वह तो होकर रहेगी।''

''हमारी तो हिम्मत छूट चुकी है पहलवान, लेकिन तुम कहते हो तो चलो, वहाँ भी चलकर देख लेते हैं। मगर भैया, हम तो तुम्हारे एहसान के बोझ से दबे जा रहे हैं। इसका बदला भला हम कैसे चुकावेंगे।''

''कैसा एहसान जुम्मन भाई! गाढ़े वक्त में आदमी ही तो आदमी के काम आता है। कभी हमारे ऊपर भी मुसीबत पड़ेगी तो गाँव-घर के लोग ही तो काम आवेंगे। इसे एहसान क्यों समझते हो जुम्मन भाई। यह तो हमारा धर्म है।''

संतू की अपनत्व भरी बातों से जुम्मन का हौंसला कुछ बढ़ा। वह जाकर औरत को बाहर ले आया और फिर संतू की ट्राली पर लिटा दिया। जो पैसा यहाँ डूबा, सो तो डूब ही गया। उसके लिए पछताने से अब कुछ मिलनेवाला नहीं था। औरत की हालत कहीं से भी नाजुक नहीं दिख रही थी। हाँ, प्रसव पीड़ा से कराह जरूर रही थी। उसे देखकर संतू बोला,

''जुम्मन भाई! डाक्टरनी ने तो नाहक डरा दिया। यह पैसा वसूल करने का हथकंडा भर था। हमने तो बहुत से जचकी के मामले देखे हैं। औरत घंटों चीखती-चिल्लाती रहती है, तब जाकर बच्चा पैदा होता है। पहले बच्चे में कुछ औरतों को वैसे भी ज्यादा ही तकलीफ होती है। तुम्हारी औरत की हालत तो बहुत ठीक है। इतनी तकलीफ तो कुछ भी नहीं। ये डाक्टर ससुरे पेसा ऐंठने के लिए नाहक तिल का ताड़ बना देते हैं। बिना जरूरत के नश्तर लगाकर घरवालों को लूट लेना चाहते हैं। तुम्हें अभी तजुरबा नहीं है जुम्मन भाई। तुम्हारी पहली औरत पंद्रह साल जिंदा रही, लेकिन कोई बच्चा नहीं हुआ। दूसरी औरत को पहला है। इसी लिए उसकी थोड़ी तकलीफ देखकर तुम इतना घबरा गए हो। कुछ तकलीफ तो हर किसी को बरदाश्त करनी पड़ती है जुम्मन भाई। तुम बिलकुल चिंता मत करो। किस्मत मे जितनी परेशानी और बरबादी लिखी थी, वह तो हो चुकी, उसे भूल जाओ। चलो अब औरत को लेकर सरकारी जनाना अस्पताल चलते हैं। भगवान की कृपा से वहाँ सब कुछ ठीक-ठिकाने हो जाएगा।''

संतू की ट्रॉली ने फिर रफ़्तार पकड़ी और साइकिल पर सवार जुम्मन उसके पीछे हो लिया। अभी वे बाज़ार से मुश्किल से एक मील आगे बढ़े होंगे कि चलती ट्राली पर पड़ी कराह रही राबिया के मुँह से एक तेज़ चीख़ सुनाई पड़ी और उसके दो पल के बाद ही एक नवजात शिशु के रोने की आवाज़ भी। संतू समझ गया कि जुम्मन की औरत को ट्रॉली पर ही बच्चा पैदा हो गया है। ऐसी हालत में अपने समीप दो-दो मर्दों को खड़ा देखकर राबिया शर्म से गड़ी जा रही थी। वह जल्दी-जल्दी अपने अस्त-व्यस्त कपड़े सँभालने लगी। स्थिति को भाँपकर संतू स्वयं ही वहाँ से हटकर थोड़ी दूर चला गया। उसने इधर-उधर नज़र दौड़ाई तो सामने सड़क के उस पार एक छोटा-सा कच्चा मकान दिखलाई पड़ा। संतू ने वहाँ जाकर कुण्डी खटखटाई तो एक बूढ़ी औरत ने दरवाज़े के पास आकर पूछा,

''कौन हे भैया! क्या चाहते हो?''

संतू ने ज़रा घबराई आवाज़ में कहा,

''माता जी! हमारे गाँव के जुम्मन मियाँ की औरत का पाँव भारी था। दर्द उठा तो हमलोग उसे ट्राली से शहर के जनाना अस्पताल ले जा रहे थे, लेकिन बीच रास्ते में ही बच्चा पैदा हो गया। हमारे साथ कोई औरत नही है माता जी! जरा चलकर मदद कर दो तो बड़ी कृपा होगी।''

''अभी चलती हूँ बेटा!''

फिर उसने आवाज़ देकर अपनी पतोह को भी बुला लिया और दोनों रिक्शा ट्राली के पास जा पहुँची। अकेली असहाय प्रसूता के लिए सहसा दो-दो औरतों की उपस्थिति से बढ़कर संतोष और धैर्य की बात और क्या हो सकती थी। भले ही उसके लिए दोनों अनजान और अपरिचित रही हों, लेकिन उसे इस बात का विश्वास हो गया कि उनके रहते कम से कम उसकी लाज तो बची रहेगी। अभी तक शर्म और संकोच से सिकुड़ी जा रही राबिया अब थोड़ा सहज गई। इधर औरतों ने अपना स्त्री धर्म निभाते हुए फ़ौरन अपने आँचल से आड़ कर दिया और पास खड़े दोनों मर्दों से कहा,

''बेटा! तुम लोगों का अब यहाँ कोई काम नहीं। जाकर कहीं अलग आराम से बैठो। हम अपनी पतोहू के साथ सब सँभाल लेंगे।''

फिर उसने अपनी बहू से कहा,

''जल्दी से घर जाकर एक खटिया और कथरी ले आओ''

बहू भागती हुई गई और एक निखहरी खटिया और कथरी ले आई। फिर दोनों खटिया टेकाकर उन्हें अपने घर ले गई। जुम्मन मियाँ और संतू भी जिज्ञासावश पीछे-पीछे बुढ़िया के द्वार पर जा पहुँचे। कुछ देर बाद बुढ़िया बाहर निकलकर दोनों को खुशख़बरी सुनाई,

''बधाई हो, बहू को बेटा पैदा हुआ है। जच्चा-बच्चा दोनों ठीक हैं। घबराने की कोई बात नहीं। हमलोग देख-भाल कर रहे हैं। कोई जरूरत पड़ी तो खबर करेंगे।''

इतना कहकर बुढ़िया फिर अंदर चली गई।

रूपन नाम था उस औरत का। घर में सास-बहू अकेले रहकर मेहनत-मजदूरी करती थी। बेटा परदेस में कमाता था। महीने-दो महीने पर घर का चक्कर लगा जाता था। रूपन ने बहू के सहयोग से बच्चे का नार काटा और नारा-पोटी बटोरकर एक पोटली में बाँधा। फिर बच्चे को पोंछ-पाँछकर एक साफ़ कपड़े में लपेटा और प्रसूता की भी साफ़-सफ़ाई करके उसे एक दूसरी धोती पहिना दी। उसके बाद बच्चे को माँ की गोद में देकर रूपन बाहर निकली और जुम्मन से बोली,

''बेटा! सब ठीक-ठाक हो गया। अब इस बेला तुमलोग घर लौट जाओ। बहू-बच्चे को रात में यहीं आराम करने दो, हमलोग देख-भाल कर लेंगे। सबेरे आकर लिवा जाना।''

जुम्मन ने सकुचाते हुए कहा,

''माता जी! मुसीबत के समय आपने हमारी इतनी मदद कर दी, इसके लिए हम आपके बहुत एहसानमंद हैं। अब आप सारी रात क्यों हलकान होंगी। अभी बहुत देर नहीं हुई है। हमलोग औरत-बच्चे को लेकर गाँव निकल जाते हैं।''

''पागल हो गए हो क्या बेटा? तीन-चार मील का लंबा रास्ता है। प्रसूता को लेकर इतनी रात को कैसे जाओगे? रास्ते में बच्चे को हवा-बतास लग गई तो बहुत परेशान होना पड़ेगा। दोनों को रातभर यहाँ छोड़ने में क्या हरज है? तुम्हारी ही भलाई के लिए कह रही हूँ। हमारे सीने में भी महतारी का दिल है बेटा। हमरे ऊपर विश्वास करो। सबेरे आकर लिवा जाना।''

रूपन देवी की सहृदयता और अपनापन देखकर जुम्मन निरुत्तर हो गया। जिस औरत ने मुसीबत की घड़ी में अपना काम-काज छोड़कर उसकी इतनी मदद की थी, उसपर भला अविश्वास कैसे कर सकता था। राबिया और बच्चे को उसी की देख-रेख में छोड़कर वह संतू के साथ गाँव लौट गया।

रूपन और उसकी बहू ने बच्चा-जच्चा की देख-रेख में सारी रात आँखों में ही गुज़ार दी। रूपन तो रात भर दौड़ती ही रही। उसका उत्साह देखते ही बनता था। ऐसा लग रहा था मानो उसकी बहू को बच्चा पैदा हुआ हो। ठकुरान जाकर वह किसी के घर से बच्चे के लिए एक नया झबला भी माँग लाई थी। सबेरा होते ही उसने बहू की एक नई साड़ी निकालकर राबिया को पहना दी और बच्चे को भी पहना-ओढ़ाकर तैयार कर दिया। वह जानती थी कि जुम्मन भी बीबी-बच्चे के लिए बेचैन होगा और उसने किसी तरह करवट बदलते रात काटी होगी। सूरज उगते-उगते वह जरूर आ धमकेगा। हुआ भी यही। जुम्मन अपनी माँ के साथ ठीक साढ़े सात बजे रूपन के दरवाज़े पर आ पहुँचा। रूपन ने उन्हें ऑटो रिक्शा से उतरते देखकर प्यार से उनकी अगवानी की और बच्चे को गोद में उठाकर उसकी दादी के हवाले करती हुई बोली,

''लो बहन अब अपने पोते को सँभालो। हमने अपना धर्म निभा दिया।''

पोते को देखते ही जुम्मन की माँ गदगद हो उठी और उसे कलेजे से चिपका लिया। उसकी आँखों में हर्षातिरेक से आँसू छलछला आये। बहू और पोते को इतना साफ़-सुथरा और सजा-सँवरा देखकर उसे मानो अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हो पा रहा था। लगता ही नहीं था कि अभी पिछली रात को ही बहू ने चलती रिक्शा ट्राली पर बीच सड़क में बच्चे को जन्म दिया था। यह तो रूपन ने रातो-रात करिश्मा कर दिखाया था। डाक्टरनी के निष्ठुर व्यवहार के बाद उसकी बहू और पोते को एक अनजान ग़रीब हिंदू परिवार में जो अपनत्व और प्यार मिला था उसे देखकर वह चकित थी। मन ही मन वह सोचने लगी कि अमीरों के घरों में भले ही इंसानियत दम तोड़ चुकी हो, लेकिन ग़रीबों की झोपड़ी में आज भी इंसानियत ज़िंदा है। वह रूपन देवी और उसकी बहू के प्रति तहे दिल से शुक्रिया अदा करती हुई बोली,

''बहन! तुमने आड़े वक्त में हमारी बहू और बच्चे की जो सेवा की, उन्हें जो प्यार दिया, उसका बदला हमलोग कभी चुका नहीं सकते। बस हम अल्लाहताला से दुआ माँगते हैं कि तुम्हारी बहू की कोख भी जल्दी एक बेटे से भर दे। हम बड़ी बेसब्री के साथ उस दिन का इंतजार करेंगे ताकि उस खुशी के मौके पर हम अपने बेटे के हाथ की बुनी साड़ियाँ तुम दोनों को पहनाकर अपना अरमान पूरा कर सकें।''

उचित अवसर देखकर जुम्मन ने उसी समय जेब से एक हज़ार रुपये निकालकर रूपन देवी की ओर बढ़ाते हुए आरज़ू के लहजे में कहा,

''माता जी! पहले-पहले बच्चे की पैदाइश की खुशी में हमारी यह छोटी सी भेंट क़बूल कीजिए। हम और अधिक क्या कर सकते हैं। हाँ, इतना वादा ज़रूर करते हैं कि जब कभी दुःख-सुख की घड़ी में आप हमको याद करेंगी, हम फ़ौरन हाज़िर होंगे। आपकी नेकी को हम कभी भूल नहीं सकते माता जी।''

रूपन ने मुस्कराते हुए जुम्मन मियाँ को अँकवार में लेकर कहा,

''अरे बेटे! हम कोई दाई का धंधा नहीं करते जो हमारी सेवा की कीमत चुका रहे हो। तुम्हारी औरत भी हमारी बहू के समान है। पेट में दरद उठने पर तुम लोग तो उसे लेकर अस्पताल जा रहे थे, लेकिन भगवान की मरजी कुछ और थी, उसे बीच रास्ते में बच्चा पैदा हो गया। ऐसे समय में एक औरत का जो धर्म होता है वही हमने निभाया। उसके बदले में रुपये देकर हमको लज्जित मत करो बेटा। भगवान हमको खाने-पहिनने भर दे रहा है। यह रुपये लेकर हम क्या करेंगे? इसे बहू-बच्चे के खाने-पीने और शरीर पर खर्च करना। हमारा आशीर्वाद लेकर खुशी-खुशी घर जाओ बेटा। हाँ, आते-जाते कभी पोते का हाल जरूर देते रहना, मन लगा रहेगा।''

ऑटो रिक्शा पर सवार होने से पहले राबिया ने अश्रु-पूरित नेत्रों से रूपन की बहू को गले से लगाकर उसका मुख चूमा और फिर परंपरा तोड़ते हुए रूपन देवी का पैर छूकर उसकी दुआएँ माँगी। बदले मे रूपन देवी ने अपने स्नेहालिंगन से राबिया का रोम-रोम पुलकित कर दिया।

रास्ते भर जुम्मन की आँखों के सामने बारी-बारी से दो तस्वीरें शून्य में उभरकर तैरती रहीं-कभी नर्सिंग होम की हृदयहीन संचालिका डाक्टर सुनीता सिंह का विद्रूप लुटेरा रूप और कभी करुणा, सेवा और त्याग की प्रतिमूर्ति देवी-स्वरूपा, दीन किंतु ममतामयी रूपन देवी का विराट् मानवी स्वरूप।

संपर्क :
एस॰2/51-ए॰ अर्दली
बाज़ार, अधिकारी हॉस्टल
के समीप, वाराणसी
पिन-221002 (उ॰प्र॰)

चरित्र

○ श्रीमती शुक्ला चौधरी

सूरज की तेज गति से चढ़ती किरणें चेहरे पर पड़ते ही रेखा बिस्तर पर हड़बड़ाकर उठ बैठी। साथ ही उसके गोरे यौवन को ढकनेवाला सफेद चादर ढलक गया। पर शुक्र है, यहाँ होटल के इस आलीशान कमरे में उसके मस्त यौवन को देखने वाला कोई नहीं। रातभर यौवन का रसपान करने वाला भँवरा तो जाने कब का गुनगुन करता हुआ निकल चुका था।

रेखा खोई-खोई आँखों से कमरे की सजावट देखने लगी। रात को जब वो उस अजनबी आदमी के साथ यहाँ आई थी तो कमरे की खूबसूरती देखने की हालत में नहीं थी। ऐसे जीते हैं अमीर लोग। रंगीन टी.वी., फोन, सोफा, नर्म गुदगुदा सा पलंग। पर सबसे सुंदर है ये आलीशान शीशा जिसमें पूरा चेहरा नजर आता है और उसे सिर्फ अपना चेहरा देखने के वास्ते एक छोटा सा शीशा मंगवाने के लिए पति की कितनी खुशामद करनी पड़ी थी।

एक दीर्घ श्वास दिल की किसी गहराई से उठी और उसने चादर खींचकर नर्म तकिये पर सिर रख दिया। तकिये भी इतने नर्म होते हैं कहीं? जाने किससे बना है। इस तकिये को वो अपने साथ अपने घर ले जाएगी। चुन्नी-मुन्नी कितना खुश होंगी। सहसा उसे यह ख्याल आया कि आज की तारीख में उसका कोई घर ही नहीं।

कल तक इस बड़े शहर में उसका एक छोटा सा घर था। दो बच्चियाँ थीं, एक पति था, एक सास थी और इन सबके बीच वो एक सती सावित्री थी - मुफ्त की नौकरानी, वही उसकी दुनिया थी। बच्चों की देखभाल, खाना बनाना, गृहस्थी संभालना, सास की सेवा करना और दिन के अंत में पति के हाथों वजह-बेवजह मार खाना। अगले दिन फिर वही दिनचर्या। लेकिन फिर भी घर की चारदीवारी में कितनी निश्चिंत जिन्दगी थी उसकी। शराब के नशे में रात को रघुवीर जरा बहशी जरूर हो जाता था पर सुबह होते ही सब ठीक हो जाता। रोटी, कपड़ा और मकान की फ्रिक कभी नहीं करनी पड़ी थी उसे। वो सब रघुवीर ही संभालता। पर अब? वो कहाँ जाए? सारा बदन दु:ख रहा है। उसने खिड़की से बाहर देखा। अच्छा खासा दिन निकल आया था। अब तक तो मुहल्ले में आग की तरह खबर फैल गई होगी कि रघुवीर की बीवी रात भर गायब रही, कहीं मुँह काला करती होगी, चुन्नी-मुन्नी की माँ घर से भाग गई, नहीं अब वो घर वापस नहीं लौट सकती। रघुवीर तो उसे सरेआम मार ही डालेगा और मुहल्ले वाले ताली बजाते हुए कहेंगे कि दुश्चरित्र औरत की यही दशा होती है। पिछले साल शीला के साथ भी यही हुआ था।

रेखा काँप उठी। अब तक नर्म गुदगुदा लगने वाली यह बिस्तर उसे काँटों की सेज लग रही थी। और यह खूबसूरत कमरा नर्क जैसा।

आँखें भीग गईं। क्या हो गया था कल रात उसे? पिछले पाँच सालों से रघुवीर के हाथों मार खाना उसकी आदत बन गई थी, फिर क्यों वो कल रात इतना डर गई थी? क्या जरूरत थी रघुवीर को धक्का मारकर घर से भागने की? उसे अमीर आदमी की गाड़ी में लिफ्ट माँगने की? उसके सामने अपना आंचल ढलकाने की? उसके एक इशारे पर अपना सबकुछ लुटाने की। दरअसल भीतर जो भीनी-भीनी खुशबू थी और जो धीमा-धीमा संगीत बज रहा था, वही मदहोश कर गया रेखा को। जाने कैसा सुरूर था उस अमीरजादे के आँखों में, जो रेखा के तपते मरूस्थल सी जिन्दगी को लगा कि मधुशाला मिल गया, चाहे दो पल के लिए ही सही।

और लुट गई वो!

लग गया चरित्र पर दाग!

अब कोई उसे माँ कहकर या भाग्यवान कहकर नहीं बुलाएगा। नहीं रही वो किसी की बहू-बेटी।

आज से वो एक चरित्रहीन औरत है। क्या इतना खोखला है नारी चरित्र! जैसे कोई काँच का खिलौना, हाथ से गिरा और टूट गया।

चौबीस साल से इतने जतन से अपने सतीत्व की रक्षा करने का कोई मोल नहीं? बस एक रात की एक छोटी सी भूल ही काफी है नारी चरित्र को रौंदने के लिए?

इतने में दरवाजे पर किसी ने दस्तक दी -

''आधे घंटे में कमरा खाली कर दे। तेरे यार ने बस एक ही रात का बिल चुकाया है। अगर दिनभर रहना है तो जाकर कोई नया यजमान ढूंढ़ ले।''

शर्म से रेखा का चेहरा लाल पड़ गया, पर बेचारी क्या कर सकती थी? क्या कह सकती थी?

चरित्र तो हाथ से गिरकर टूट चुका था। वह चुपचाप अपने कपड़े संभालने लगी।

संपर्क :-
22/सी, जगतराय चौधरी रोड,
पो॰- बरिशा, कोलकाता
(प॰ बंगाल)

सदाचारी व्यक्ति का चरित्र निश्छल होता है,
निश्छल चरित्र से घर में मेल-मिलाप रहता है।
घर में मेल-मिलाप से देश व्यवस्थित होता है,
व्यवस्थित देश से विश्वभर में शांति आती है।
- डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम,
राष्ट्रपति

शानुर्रहमान की एक ग़ज़ल

अपने किरदार पर रोएंगे ज़मानेवाले
अब न लौटेंगे यहाँ राह दिखानेवाले

जाने अब कौन-सी नगरी में बसे हैं जाकर
दास्ताँ प्यार की दुनिया को सुनानेवाले

राह की गर्द तुझे कुछ भी न पाने देगी
अपनी पल्कों पे हसीं ख़्वाब सजानेवाले

जाने कितने ही जहन्नम से गुज़ारा तू ने
मेरे माज़ी का पता मुझको बतानेवाले

रात आई तो किसी कोने में रोए छुपकर
दिन की महफ़िल में ज़माने को हँसानेवाले

संपर्क : नूर मंज़िल, सुलतानगंज,
पटना-800006

अब्दुल अहद साज़ की दो ग़ज़लें

भूली बिसरी शफ़्क़तें लौटा रहा है
कोई यादों को मेरी सहला रहा है

नींद, मिट्टी की महक, सब्ज़े की ठंडक
मुझको अपना घर बहुत याद आ रहा है

घास कब है, यह हरी पलकें हैं मेरी
जिन पे वह मुद्दत से चतला जा रहा है

झील में ठहरे हुए ल्महाते शब की
उसकी यादों का कंवल मुस्का रहा है

बादलों में जैसे बाहें खुल गई हैं
और मुझे उनमें समोया जा रहा है

साज़ कुछ इक बारगी अपनी सी करलें
और वैसे ज़िंदगी में क्या रहा है

बिसरा हुआ जमाल ज़मानों की आड़ से
यह कौन झांकता है मकाँ की दराड़ से

तरके तअलुक़ात में उलजी-सी इक कसक
रिश्तों का नूर फूट रहा है दराड़ से

दिल में हवाए ज़ह्न से पानी क़ी है कशीद
झरने उतर रहे हैं ज़मीं पर पहाड़ से

शब भर सुनाई देती है वादी में एक चीख़
दिन भर लरज़ता रहता है जंगल दहाड़ से

अपनी अना की झील से निकले नहा के हम
और गिर पड़े ख़ुद अपनी नज़र की पछाड़ से

ठहरा-सा एक लफ़ज़ घनी सोच के तले
फ़ानूस जैसे **साज़** लटकता हो झाड़ से

संपर्क : ज़करिया मैनवर, चौथी मंज़िल, 149, यूसुफ़ मेहर अली रोड,
मुम्बई -400003

पाँच हाइकु

○ डॉ॰ सतीश राज पुष्करणा

नदी किनारे
बैठ देखता
हारा खिलाड़ी

पता मंज़िल
का जो बता रहा है
देखो! अँधा है

तुलसी सदा
रहती बाहर पर
पूजी जाती है

आँधी में बच
गयी डूब न बचा
अकड़ा पेड़

एक रसता
को भंग करने का
नाम उत्सव

संपर्क :
135, सिविल लाइन्स, नवाब का
अहाता, बरेली-243001 (उ. प्र.)

फुलों की कली

○ अंजली कुमारी

तुम सुगंधित होकर महक चली
वासंतिक होकर बहक चली,
थम गया सिलसिला, समय का वो जब तुम
पुष्पित होकर चहक चली।

कल रात अकेले, चाँदनी में तुम यूँ
रोशनी बनकर चमक चली-
थम गया सिलसिला, समय का वो जब तुम
बदरी बनकर बिखर चली।

अंकित होकर अविस्मृत हो गए वे पल
जिनमें तुम यूँ चली-चली
विश्वास नहीं होता सोचा मुझको
ये तुम थी या, फुलों की कली।

-बेगूसराय (बिहार)

ख़ौफ़

○ अजय कुमार

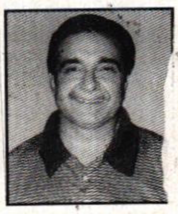

भय नहीं
हत्या, अपहरण का
ज़रूरत नहीं
सुरक्षा बढ़ाने की
फ़सीलों पर बाड लगाने
चप्पे-चप्पे पर
गुप्त-यांत्रिक आँखें जड़ने की
परंतु मजबूरी है राजा की
हर पल सालता रहता है
ख़ौफ़ बेदख़ली का
संदेह सत्ता-परिवर्तन का
लगा रहता है खटका
चुप, चालाकी या छल से
राजमहल में घुसकर कोई
बैठ न जाए तख़्ते ताऊस पर

तन्हाई में अक्सर
सोचता है राजा
सुख-सागर में
होते हैं चिंता-भंवर
राजमहल में भी
दाख़िल हो जाता है
अंग रक्षक की तरह 'ख़ौफ़'

***

संपर्क :
25, अफ्सर फ्लैट,
बेली रोड, पटना

ग़ज़ल की शाम

○ राजेन्द्र प्रसाद तिवारी 'कंटक'

झरने की कल कल सी, नदिया की हलचल सी।
वेद की ऋचा पुनीत, पावन गंगा जल सी।।
ज़िन्दगी को लिख दिया है आज तेरे नाम।
गीत का है भोर या कि है ग़ज़ल की शाम।।

रूप राशि को समेट अंक में मिली।
देह कंचनी को देख चाँदनी खिली।।
चूमने लगी अधर अधर कली कली।
पाँव पड़े तो महक उठी गली गली।।
केश सघन बादल से नैन सजे काजल से।
फूलों से अंग अंग झाँक रहे आँचल से।
मुख मयंक दृष्टि चपल पावन अभिराम।
गीत का है भोर या कि ग़ज़ल की शाम।।

प्रेरणा बनी सजीव गीत के लिए।
गीत भी लिखे हैं उसी मीत के लिए।।
हारकर भी जी रहा हूँ जीत के लिए।
दाम दाम लुटा चुका हूँ प्रीति के लिए।।
प्यार की सगाई है मधु ऋतु मुस्कायी है।
दिल के हाशिए पर खैयाम की रूबाई है।।
नायिका शकुन्तला सी लगती छवि धाम।
गीत का है भोर या कि ग़ज़ल की शाम।।

कवि के जीवन का इतिहास हो तुम्हीं।
टूटते हृदय की हर सांस हो तुम्हीं।।
दूर नहीं दिल के आस पास हो तुम्हीं।
विरही के मन का मुधमास हो तुम्हीं।।
पानी में मछली सी मेघों में बिजली सी।
'कंटक' की बगिया में घूम रही तितली सी।।
मुस्कुराहटों से फूल उठे तमाम।
गीत का है भोर या कि है ग़ज़ल की शाम।।

***

संपर्क :
मो० राजगढ़,
लखीमपुर-खीरी (उ० प्र०)

उठो, जागो ...

○ राजेन्द्र 'राज'

उठो, जागो ...
मंज़िल से आ रही पुकार है
राह पर तू रुक न जाना
पथ से विचलित होने को
ठोकरें बेशुमार हैं।

कोई पहुँचा मंज़िल पे है
हम दूर सैकड़ों मील पे हैं
काँटों का है दामन
उलझा-उलझा है मन
उठो, जागो ... दे रहा ललकार है।

कभी काँटों पे चलके
फूलों का दामन आएगा
दु:ख भी अपना भाल टेके
भव्य सावन लाएगा
उठो, जागो... मंजिल बस उस पार है!

मन कभी विचलित होकर
दूर मंजिल ले जाएगा
राह न मिल पाएगी
अनजान पथ ले जाएगा
उठो, जागो... बहुत बड़ा संसार है।

***

संपर्क सुत्र :
ग्रा.+पो.-बलुआ कलियागंज
भाया-मदनपुर, जिला-अररिया,
बिहार - 854333

लड़ाई

O राधेलाल बिजधावने

मैं लड़ाई लड़ता हूँ
अपनी ही रेत मिट्टी मिट्टी की
और संवेदना के स्तर पर जिंदा रहता हूँ।

जिंदा रहता हूँ
आग हवा पानी में अपने अस्तित्व की
तमाम उम्र लड़ते हुए।
मैं भूख की लड़ाई लड़ता हूँ
प्यास के विरुद्ध लड़ता हूँ
अभावों-विपदाओं-दुखों की लड़ाई लड़ता हूँ
और अपने वजूद को जिन्दा रखता हूँ।

जिंदा रखता हूँ
अपने स्वभाव और स्वाभिमान की
अपेक्षाओं
समाज संस्कृति
राजनीति और अर्थनीति की सुरक्षा के लिए
लड़ाई लड़ते हुए।

मैं लड़ाई लड़ता हूँ
सारे रिश्तों-दोस्तों से
अपने ही अत्माभिमान को सुरक्षित
और जिंदा रखते हुए।

मैं लड़ाई लड़ता हूँ
मौसम के तेवरों से
धूप बर्फानी ठंड-बरसात की विपदाओं से
जूझते हुए
और अपने साहस को
जिंदा रखते हुए।

मैं लड़ाई लड़ता हूँ
अपनी ही जातीयता
देश भक्ति शक्ति
और माटी की गंध की
सुरक्षा के लिए
और जिंदा रहता हूँ।

जिन्दा रहता हूँ
अपनी ही मौत के विरुद्ध लड़ते हुए।
मैं लड़ाई लड़ता हूँ
फूलों की कोमलता से
सुगंध से
कोमल सी आवाज
आकाश के विस्तार
और हवा की स्वतंत्रता से
फिर निराश हो
फूलों सा कुम्हला जाता हूँ
जब अपने से लड़ता हूँ तो
हारकर बेमौत मारा जाता हूँ।

संपर्क :
E 8/73, भरत नगर (शाहपूरा)
अरेरा कॉलोनी,भोपाल - 462039 म॰प्र॰

हर हाल में

O प्रो0 लखन लाल सिंह आरोही'

दुनिया में बहुत है
अँधेरा
यहाँ थोड़ी है
रोशनी!
दुनिया में बहुत है
घृणा
यहाँ थोड़ा है
प्रेम!
दुनिया में बहुत है
निर्दयता
यहाँ थोड़ी है
करुणा!
दुनिया में बहुत है
शोर
यहाँ थोड़ी है
शांति!
दुनिया में बहुत है
उदासी
यहाँ थोड़ी है
मुस्कान!
दुनिया में बहुत कुछ है
थोड़ा
हर हाल में है उन्हें
हमें बचाना
जीवन के लिए।

संपर्क :
बी-2/203, लुंकड कालोनेड, वमाननगर,
पुणे - 411014, फोन -56278417

क्या बताऊँ

O डॉ॰ सी॰ नारायण रेड्डी
तेलुगु मूल से अनुवाद
प्रो॰ माधव राव रेगुलपाटी

क्या बताऊँ मेरा क्या उन्माद है।
रोदन में हाँसी और भी शेष है।।
कितनी हैं हाएँ कितनी लू दशाएँ।
रेती में एक फूल और भी शेष है।।
विषैली निशाएँ आधी रातों में।
समीप वह छाया और भी शेष है।।
क्या है जल प्रलय क्या है विभित्स।
हृदय में वह निशाना और भी शेष है।।
गरजती बंदूक सर्वोदय कहती।
इस गेह में आग और भी शेष है।।
ज्वाला इस तनकी ज्वलित कर किनारे।
इस आँख में बर्फ और भी शेष है।।

संपर्क :
2-4-1247/7, गाँधी नगर
हन्मकोड़ा-506001, आँ. प्र.

कला

Oध्रुवनारायण सिंह राई

कला अजर आलेख
अंकित समय-शिला पर।
कला अमर संदेश
सार संवलित आखर।
कला सचित्र सत्कर्म
परमार्थ सदैव अमर।
कला पवित्र सद्धर्म
हरदम हर्षित बाहर।
कला संचरित जीवन
नर्तित निसर्ग धुन पर।
नैत्यिक लय-आंदोलन
रत्न अभिवर्द्धित आकर।
कला न उद्देश्य विहीन
कला नहीं स्वार्थ अवर।
कला परमहित नवीन
जीवनानुभव सुधाकर।
कला सुचरित्र सहर्ष
अधमार्थित न अहितकर।
कला वर भवोत्कर्ष
सुअर्थ गर्भित भास्वर।

संपर्क : त्रिवेणीगंज, सुपौल
(बिहार), 852139

लिप्साएँ भौतिक साधन की

○ आचार्य भगवत दुबे

पूरी कभी नहीं होती हैं, लिप्साएँ भौतिक साधन की
है केवल संतोष द्रव्य जो खुशी जगाए अंतर्मन की
आत्मतोष पैदा होता है, सादे जीवन, सत्कर्मों से
उनको क्या जो तोड़ चुके हों, नाता मानवीय धर्मों से
परम तुष्टि अतिशंय सुखदायी, जो अमूल्य निधि है जीवन की
थोड़े में जो परमसुखी हों, देह विरुज औ' मन प्रसन्न हों
औरों के सुख-दु:ख अपने से, प्राणी मात्र अपने अनन्य हों
श्रम हो अपना पूजन-अर्चन, ललक न कम हो कभी सृजन की
करुणा, ममता, दया-प्रेम से, युक्त भाव हो परहितकारी
यही भाव, सद्भाव हृदय में उद्वेलित हो मंगलकारी
सबके हित चिंतन में निशि-दिन स्वर लहरी गूँजे धड़कन की
दुख-उत्स एक ही स्थल है, हो आसक्ति मुफ्त के धन पर
सुख का मूल मंत्र संगम है चपल तुरंग स्वत: के मन पर
तितर-बितर होती तृष्णा से निशि की नींद, खुशी आँगन की

संपर्क : पिसनहारी मढ़िया के पास, जबलपुर-482003, म. प्र.

महाकाल का आमंत्रण

○ कमला प्रसाद 'बेखबर'

हे महाकाल यह है बिहार तुम आओ।
आओ हे बरूदावतार, तुम आओ।
प्यारे शासक जब जब पापी होते हैं।
बेकारी औ' भुखमरी, लूट बोते हैं।
अधिकारी गण कुर्सी पर जब सोते हैं।
हर काम कमीशन खोर जहाँ ढोते हैं।
इस पाप-भूमि पर खड़े आग बरसाओ।
आओ हे बारूदावतार तुम आओ।।
सस्ते नारों को ढोती है आजादी।
जातीय वोटरों की बढ़ती आबादी।
बारात भेड़ की - है सिंहों की शादी।
बेकार, दीन, उदंड नचैं खुल धरती।
टूटी सड़कों पर उड़ते रथ से आओ।
यह है बिहार हे महाकाल तुम आओ।।
जब भयाक्रांत सारी जनता होती है।
जब राजनीति नफ़रत घर-घर बोती है।
भारत माता माथा धर कर रोती है।
नेता की सारी बात छद्म होती है।
आमंत्रण है, हे महाकाल तुम आओ।
दो महाभरण औ' रक्तधार बरसाओ।।
उद्यम खेती से धरती हमरी खाली।
मजदूर भगे हैं, देते घर को गाली।
निर्माता हैं बस रंगदार औ' जाली।
सूनी बगिया में उल्लू डाली-डाली।
इस धरती को प्रेतों का बास बनाओ।
यह है बिहार प्रेताबतार तुम आओ।
स्वास्थ पीड़ित आपसी युद्ध रण बाजा।
बारूद यज्ञ कुण्डों में आहुति साजा।
जल मरे पुरोहित और संग में राजा।
सैनिक उनके भुन गए कि जैसे भाजा।
गौतम धरती को रक्तस्नान कराओ।
यह है बिहार हे महाकाल तुम आओ।
देखना बनेगी फिर से है वह धरती।
लहरायेगी बंजर भूमि की परती।
शीतल होगी वह धरती जो है परती।
वह जी जायेगी, जो लगती है मरती।
फिर होगा नव निर्माण - जिन्न तुम जाओ।
आओ हे मानव, नया बिहार बनाओ।

संपर्क : प्रो0 कॉलोनी, फरबिसगंज- 854318 (बिहार)

एक-न-एक दिन

○ डॉ. वरुण कुमार तिवारी

आदमख़ोरों के
इस भयावह जंगल में
ढूँढ़ते हुए आदमी को
लहूलुहान हो रही है कविता

तब भी
शहर-दर-शहर
ढूँढ़ ही रही है
एक अदद आदमी को कविता

लेकिन वहाँ भी
अपने ही क्षितिज पर
टूट-टूटकर
बिखर जाती है कविता

और इस तरह
तल्ख़ रोशनी की
चकाचौंध से खुद
चौंधिया जाती है कविता

फिर भी
अपनी विरासत और संस्कृति को
अपनी जिंदगी की
आख़िरी सांस तक
बचाना चाहती है कविता

इसलिए
ढूँढ़ती ही रहती है वह
इस भयावह जंगल में भी
एक अदद आदमी को लगातार
और जानता हूँ कि
एक-न-एक दिन
अपने आकाश को
ढूँढ़ ही लेगी
कहीं-न-कहीं
मेरी कविता!

***

संपर्क : स्टेट बैंक कॉलोनी, वीरपुर

बेगम का फरमान

○ डॉ॰ मो॰ मोजाहेरूल हक

इन दिनों बेगम ढीला-ढाला लिबास पहन रही हैं, और मैं आराम अनुभव कर रहा हूँ। क्योंकि उनका वर्तमान फिगर इस बात की अनुमति नहीं देता है कि वह किसी समारोह में सम्मिलित हो। बेगम समारोह में अपनी अनुपस्थिति को दिल तोड़नेवाला और असभ्य कार्य समझती हैं। अब आप ही बताईये कि जिस महिला के ऐसे मार्डन विचार हों वह किस मुस्तैदी से समारोह अटेण्ड करती होगी। बेगम के सभ्य होने में जहाँ मुझे पैसों का नुकसान होता है वहीं अच्छा खासा समय उनकी निगरानी में बर्बाद हो जाता है। बेगम शादी समारोह के सभी रीतियों को देखे बिना घर चलने को तैयार नहीं होती और सभ्य समाज में ऐसी रीतियों को पूरा होते-होते आधी रात गुजर जाती है। अब आप ही बताईये कि ऐसी मार्डन विचार की नौजवान बेगम जो किसी का दिल तोड़ना उचित नहीं समझती हो, उसे महफिल में अकेले छोड़ना क्या बुद्धिमानी है?

मैं निश्चिंत था कि अब पत्नी कई महीनों तक शादी की महफिल में शामिल नहीं होगी और इस प्रकार मेरे पैसे और समय दोनों नष्ट होने से बच जाएंगे। बूढ़े आसमान को कब किसी की खुशी भायी है, जो मेरी खुशी भाती। शादी का निमंत्रण कार्ड देखते ही बेगम का पुराना रोग हरा हो गया। और, उसने फरमान जारी कर दिया, इस जनम में बेगम का हुकुम नहीं मानना मेरे लिए संभव नहीं। चुनांचे मैं मन मारकर शादी समारोह में शामिल हुआ और आश्चर्यचकित रह गया। मौलाना ने दुल्हा से लड़की स्वीकार करवाया और नव विवाहित जोड़े के लिए अपने हाथों को उठाकर मंगलमय जीवन की दुआ करने लगे। अभी उनके हाथ अपने नार्मल पोजिशन में आये भी नहीं थे कि नुकुल और छुहारे धब-धब गिरने लगे। छुहाड़े की चोट से एक लम्बी दाढ़ी वाले मौलाना को क्रोध आ गया और उन्होंने छुहारे को हवा ही में मुट्ठी में बंद कर लिया। दूसरे मौलाना छुहारे को प्राप्त करने में ऐसे खो गये कि अपने ही रान पर धबकी लगा दी। दूसरी ओर छुहारे के लिये दो नौजवान आपस में भीड़ गये और छुहारा तीसरा व्यक्ति ले उड़ा। एक बूढ़े व्यक्ति को फर्श पर लोटता देखकर लड़की का पिता सहम गया कि कहीं कोई अपशकुन न हो जाये। कुछ व्यक्ति उनकी ओर बढ़े ही थे कि वह उठ बैठे और मुस्कुराते हुए छुहारे को दांतों में दबा लिया। बूढ़े व्यक्ति के चेहरे की चमक से साफ पता चल रहा था कि उसने असंभव को संभव बना दिया।

दिन निकलते ही पत्नी ने दूसरा फरमान जारी कर दिया। जिसे पूरा करने के लिये मैं दो प्रकार से बाध्य था। प्रथम यह कि भरी सभा में मैंने उसके भरन-पोषण का वायदा किया था। दूसरे यह कि बेचारी के फीगर को खराब करने का सौ प्रतिशत जिम्मेवार मैं ही था। इसलिये कठिन समय में पत्नी का ख्याल नहीं रखना मुझ जैसे वफादार पति को शोभा नहीं देता। यही सब सोचते हुए हलवाई की दुकान पर पहुँच गया और पत्नी की मन पसंद मिठाई खरीद ली, जिसे खाने के बाद पत्नी का मन ऐसा प्रसन्न हुआ कि उसने एक कागज का टुकड़ा थमा दिया। इससे पहले की मैं उस कागज के टुकड़े को खोलकर देखता-पत्नी की आवाज मेरे कानों से टकरायी ''सामान समाप्त हो गया है, जल्द ला दीजिए, वरना खाना समय पर नहीं बन पाएगा।'' यह सुनते ही बाजार की ओर चल पड़ा। पुरखों से सुना था कि शैतान की आंत काफी लम्बी होती है। लेकिन बेगम के नाजुक हाथों से बनायी गयी फेहरिसत (सूची) भी किसी प्रकार से शैतान की आंत से कम नहीं थे।

सामान से भरे थैले को ज्योंही उठाया था कि एक तरफ का हैंडल टूट गया। कुछ सामान थैले में रहा और कुछ थैले से बाहर निकलकर जमीन पर पसर गया, जिस प्रकार राजनैतिक कार्यकर्ता धरने पर बैठने के उद्देश्य से जमीन पर पसर जाते हैं। मेरी लाचारी को देखकर आसपास के लोग मुस्कुराने लगे और मैं मन ही मन में बेगम को कोसने लगा। ''कमबख्त गठी हुई सूची के अनुसार मजबूत थैला अगर दिया होता तो सरे बाजार मेरी इज्जत मिट्टी में नहीं मिलती। लोगों की मुस्कुराहट में वृद्धि देखकर मैंने जैसे-तैसे सामान को थैले में भरा और उसे नीचे से पकड़कर सीने से लगाये चल पड़ा, थैला मेरी सीने से उसी प्रकार चिपका हुआ था जिस प्रकार बच्चा दूध पीते समय स्तन से चिपका रहता है।''

मेरा ज़ख्म अभी हरा ही था कि बेगम के होंठ हिले - ''अजी आपको कुछ याद भी रहता है -''आप कहना क्या चाहती हैं, मैंने डरते-डरते पूछा। बेगम की लाल-पीली आँखें देखकर मेरी यादाश्त लौट आयी, और मैंने उनकी पसंद का कपड़ा कल लाने का वायदा किया। मेरा जबाब सुनते ही बेगम आपे से बाहर हो गई'' एक सप्ताह से कल-कल हो रहा है और आज भी कल पर टाल रहे हैं, आज लाईये और मैं भी आपके साथ बाजार चलूँगी।'' बेगम का तेवर देखकर मेरे हाथ-पाँव फूल गये। उनको नम्रता से समझाया कि वो बाजार जाने का विचार छोड़ दें, परन्तु उनका इरादा दृढ़ से दृढ़ होता चला गया। बेगम ने बाजार जाने की तैयारियाँ आरम्भ कर दी और मैं मूकदर्शक बना रहा।

यूँ तो बेगम आम दिनों में सिफौन और सिल्क की साड़ियाँ पहनती थी, लेकिन आज उन्होंने सूती साड़ी का चयन किया जो माड़ की प्रचुरता से ऐसी टाइट थी कि बदन से ना सटने की उसने कसम खा रखी हो। बेगम तमाम कील-काँटें दुरूस्त करके बाजार निकली लेकिन उनकी तमाम होशियारी धरी रह गयी। एक खास प्रकार से साड़ी बाँधना भी काम न आया। बेगम का अतिरिक्त बोझ के साथ बाजार निकलना मुझे बिल्कुल पसंद न था, लेकिन पति बनने की कुछ अपनी मजबूरियाँ होती हैं, जिसे बावफा पति अनदेखा नहीं कर सकता है। मनचलों के बर-बार घूरने और मुस्कुराने से मेरा मन भारी हो चुका था फिर भी खामोश रहा। बिल्ली जब तक अपने बच्चे को सात घर नहीं घुमती तब तक उसके आँखें नहीं खुलती। इसी प्रकार स्त्री जब तक दस दुकान नहीं घुमेगी उसको कपड़ा पसंद नहीं आएगा। चुनाचे बेगम ने जब कई दुकानों के स्टॉक खंगाल चुकी तो उनको एक कपड़ा पसंद आया। ''इस कपड़े का क्या बनाइयेगा बेगम,'' - मैंने डरते-डरते पूछा। ''आने वाले बाबू के लिए फलिया बनाऊँगी'' - बेगम ने गर्व से कहा। बेगम का जबाव सुनते ही मैंने अपना सर पकड़ लिया और दिल ही दिल में कहा कि इस काम के लिये अतिरिक्त बोझ के साथ बाजार जाने की क्या आवश्यकता थी। खैर मैं अब इस नतीजे पर पहुँचा हूँ कि बेगम आम हालत में हो या खास, फरमान जारी करना उनकी खास प्रवृति है।

संपर्क :
शाहीन मंजिल
नौधरवा, सुल्तानगंज, पटना- 6

कवि में दोहे के प्रति उत्कृट आकर्षण

सफलगीतकार; प्रख्यात गजलकार और प्रतिष्ठित मुक्तककार के रूप में चर्चित कवि चन्द्रसेन विराट की सद्य: प्रकाशित नवीन काव्यकृति 'चुटकी चुटकी चाँदनी' श्रेष्ठ दोहा संग्रह है। यह कहने में सच मात्र भी अत्युक्ति नहीं है कि बीसवीं शताब्दी के अंतिम दशकों में नयी कविता के छंदमुक्ति के नारे की सारी बाधाएँ पार करके हिंदी-काव्य पुन: छंद की ओर वापस आया है। अपनी वापसी के इस क्रम में उसने मात्रिक छंदों में दोहे को चुना है। वैसे भी दोहा अंपभ्रंश काल से भारतीय कवियों का प्रिय छंद रहा है। इस प्रकार दोहे के प्रति आधुनिक कवियों का अनुराग अपनी परंपरा के प्रति आकर्षण सिद्ध होता है। कवि श्री विराट में भी दोहे के प्रति यह आकर्षण उत्कट रूप में प्रकट हुआ है। समीक्ष्य-संग्रह इसी का प्रत्यक्ष रूप है।

'चुटकी चुटकी चाँदनी' के काव्य हेतु पर विचार करने से स्पष्ट होता है कि इसकी रचना प्रेरणा का आधार युगीन प्रभाव है। समीक्ष्य-संग्रह के प्राक्कथन में कविवर विराट ने इन शब्दों में समीक्ष्य-कृति का हेतु स्पष्ट किया है - "दोहों के मामलों में मुझे अपने समकालीन कवियों में देवेन्द्र शर्मा इन्द्र एवं डॉ॰ अनन्तराम मिश्र 'अनन्त' ने सबसे अधिक रिझाया और प्रभावित किया। इसके वाबजूद मैंने दोहे लिखने का साहस नहीं किया। इतने समर्थ किंतु सरल दिखने वाले छंद से मुझे डर लगता रहा। यह डर तोड़ा कविवर अनन्त ने। उन्होंने ही आग्रह पर आग्रह करके मुझे दोहे लिखने के लिए प्रेरित किया। मैंने डरते-डरते दोहों को छुआ। छुआ तो छूता ही चला गया।" - (पृष्ठ-37)। स्पष्ट है कि वरिष्ठ कवि डॉ॰ अनन्तराम मिश्र 'अनन्त' की प्रेरणा और प्रोत्साहन का खाद-पानी पाकर कविवर विराट की रचना चेतना में निहित दोहा-सृजन के बीज अंकुरित-पल्लवित हुए हैं और समीक्ष्य दोहा-संग्रह का रचनात्मक हेतु बने हैं।

प्रस्तुत काव्य-कृति का प्रमुख प्रयोजन युगीन-विकृतियों का चित्रण करना है। इसीलिए कवि ने परिवार-समाज, राजनीति, प्रशासनिक-विकृतियाँ, आतंकवाद, आर्थिक-विसंगतियाँ, जनतांत्रिक अव्यवस्थाओं का चित्रण किया है। युगीन विकृतियों के मार्मिक यथार्थपरक चित्रों से प्रस्तुत काव्यकृति समृद्ध है। 'यह अधुनातन आदमी' शीर्षक से रचित दोहों में आज के मनुष्य की त्रासदी इन शब्दों में रेखांकित हुई है-

"यह अधुनातन आदमी, संवेदना-विहिन।
हाड़-मास मज्जा-सहित, जीवित एक मशीन।।"
- (पृष्ठ 43)

वास्तव में अर्थ की अतिरिक्त आसक्ति ने आज मनुष्य को पैसा कमाने की मशीन बना दिया है। व्यक्ति सारे दिन पैसा पैदा करने की जुगाड़ में जुटा रहता है। अवकाश के क्षण विरल हो चुके हैं और व्यस्तता चरम सीमा पर है। इस अत्यंत व्यस्तता ने मनुष्य को मनुष्य से काट दिया है। कविवर विराट ने उन शब्दों में इस सत्य को व्यक्त किया है -

"शामिल चूहा दौड़ में, सारा सभ्य समाज।
प्राप्त सभी कुछ, पर उसे, चैन नहीं है आज।।
दूर-दूर हैं सभ्य जन, कोई नहीं समीप।
व्यक्ति-व्यक्ति है इस तरह, अलग थलग ज्यों द्वीप।।"
- (पृष्ठ 43)

समीक्ष्य पुस्तक : चुटकी चुटकी चाँदनी
समीक्षक : डॉ॰ कृष्ण गोपाल मिश्र
दोहाकार : चन्द्रसेन विराट
पृष्ठ : 156 मूल्य : 150 रुपए

समीक्ष्य दोहों में अनेक स्थलों पर कविवर विराट की व्यक्तिगत छवियाँ भी प्रतिर्विबित हुई हैं। उदाहरण के लिए उनके व्यक्तित्व में व्याप्त स्वाभिमान का परिचायक एक दोहा इस प्रकार दृष्टव्य है-

"स्वीभमान के मूल्य पर मिले मुकुट उपहार।
तुमको हो तो हो मगर, मुझे नहीं स्वीकार।।"
- (पृष्ठ 79)

जीवन मूल्यों को लक्ष्य करके भी कविवर विराट ने अनेक दोहे रचे हैं। उदाहरणार्थ प्रेम के उदात्त मूल्य को व्यक्त करने वाले कुछ दोहे इस प्रकार उद्धृत हैं-

"सुना बहुत था पर मिला, जब अनुभव संयोग।
प्रेम-पँजीरी चख लगे, फीके छप्पन भोग।।
आशंका होती नहीं, रहे न शक भी शेष।
जहाँ प्रेम होता वहाँ भय करता न प्रवेश।।
प्रेम भावना मात्र हैं, वह न दृश्य या स्पृश्य।
जो दिखता होता न वह, होता सत्य अदृश्य।।"
- (पृष्ठ 94)

कविवर विराट का जीवन-दर्शन समीक्ष्य-संग्रह के दोहों की बड़ी उपलब्धि है। उन्होंने भारत के आध्यात्मिक मूल्यों को पश्चिम की भौतिकतावादी अंधदृष्टि के प्रतिपक्ष में पूर्ण निष्ठापूर्वक प्रतिष्ठित किया है। उनके दोहों में प्राय: बिहारी, रहीम आदि सिद्ध कवियों जैसी नीतिपरकता के भी दर्शन होते हैं। इस संदर्भ में कुछ दोहे इस प्रकार प्रस्तुत हैं -

1) **"कर्मों के अनुसार है, सुखदुख के सब भोग।**
स्वर्ग नरक दोनों यहीं, भोग रहे हैं लोग।।"
- (पृष्ठ 110)

2) **"शत्रु, शत्रु का मित्र है, विष ही विष का तोड़।**
काँटे से काँटा सिंचे, ऋण-ऋण धन है जोड़।।"
- (पृष्ठ 111)

3) **"उल्टी गिनती गिन रही, रोज-रोज की भोर।**
हम पल-पल हैं बढ़ रहे, महामृत्यु की ओर।।"
- (पृष्ठ 126)

भाव और विचार के धरातल पर अत्यंत पुष्ट इस दोहा संग्रह का कलापक्षीय विशेषताएँ भी अधिक महत्त्वपूर्ण हैं। सभी दोहे परिष्कृत एवं परिमार्जित खड़ी बोली में रचित हैं। भाषा तत्सम शब्द-प्रधान है किंतु कहीं-कहीं पर अन्य देशी-विदेशी भाषाओं के शब्दों को भी आवश्यकतानुसार प्रयोग किया गया है। 'शामिल', 'मशीन', 'खारीदार', 'आवाज', 'खुद', 'आदमखोर' - (पृष्ठ 42-43) आदि अनेक शब्द विदेशी स्रोतों से ग्रहण किये गये हैं। विदेशी शब्दों को ग्रहण करने में कवि विराट ने विशेष सावधानी बरती है और केवल उन्हीं शब्दों को ग्रहण किया है जो कि हिंदी में बहुप्रचलित और सुपरिचित है। समग्रत: समीक्ष्य कृति की भाषा भावानुरूप है।

अलंकार, 'बिंब' प्रतीक आदि अन्य कलापक्षीय प्रतिमानों के निकष पर परखने से भी इस दोहा-संग्रह का वैशिष्ट्य प्रमाणित होता है। श्री विराट सफल कवि हैं और दो दर्जन से अधिक गीत, ग़ज़ल एवं मुक्तक संग्रह प्रस्तुत कर चुके हैं। अत: कला के इन क्षेत्रों में उनकी क्षमता स्वयंसिद्ध है। उन्होंने अपनी काव्य-प्रतिभा का सर्वोत्तम उपयोग कर अपने दोहों को प्राणवान बनाया है। इसलिए यह दोहा 'काव्य-संग्रह' विशिष्ट और महत्वपूर्ण हो गया है।

❋❋❋

स्वाध्याय का अर्थ और महत्त्व

○ ओम प्रकाश पाण्डेय 'मंजुल'

अध्यात्म संयम, सेवा, स्वाध्याय एवं सत्संग की महती भूमिका है, इनमें भी योगियों-तपस्वियों ने स्वाध्याय को सर्वोपरि माना है, स्वाध्याय की चतुर्दिक चर्चा होने के बावजूद विरले ही इसका अर्थ समझते हैं, सामान्य व्यक्ति के लिए 'स्व' माने स्वयं और 'अध्याय' माने अध्ययन के अनुसार स्वाध्याय का अर्थ स्वयं द्वारा पढ़ा जाता है, यानि कोई जितना पढ़ लेता है, वही उसका स्वाध्याय है, स्वाध्याय का इससे अधिक अच्छा अनर्थ नहीं किया जा सकता। 'स्वाध्याय' का शाब्दिक अर्थ भी लें, तो 'स्व' याने 'स्वयं' और 'अध्याय' याने 'अध्ययन के योग्य' के अनुसार 'स्वयं द्वारा ऐसा अध्ययन जो योग्य हो' है, अध्यात्म में अध्ययन के योग्य जो सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वसुलभ सामग्री है, वह भी 'स्व' ही है, इस प्रकार स्वाध्याय का सही अर्थ है-'स्वयं को स्वयं द्वारा पढ़ा जाना' हमारा अपना जो जीवनरूपी अध्याय है, उसे हमने अभी तक खोला ही नहीं है, वह बंद पड़ा हुआ है, क्या यह संभव है कि पुस्तक में जो अध्याय सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण है, परीक्षार्थी उसे खोलकर भी न देखे, और परीक्षा में उत्तीर्ण हो जाये? ऐसा छात्र हमेशा उसी कक्षा में पड़ा रहेगा। इसी प्रकार जब तक कोई मुक्त्यार्थी आत्मावलोकन एवं आत्मालोचना (स्वाध्याय) नहीं करेगा, तब तक वह संसार-रूपी भवसागर में ही पड़ा रहेगा। इससे मुक्त होकर अगली ऊँची कक्षा में नहीं पहुँच सकता। अध्यात्म का यह सबसे महत्त्वपूर्ण अध्याय है। स्वाध्याय की सूक्ष्म एवं गहन क्रिया-प्रक्रिया द्वारा जहाँ हम अपने 'स्व' के सन्निकट पहुँचते हैं, उसी प्रकार 'स्वाध्याय' शब्द पर भी जितना सूक्ष्म चिंतन और गहन मनन करेंगे, उतना ही हम इसके सत्यार्थ के समीप पहुँचेंगे। 'स्वाध्याय' को समझाने के लिए और अधिक शब्दों में हम यह कह सकते हैं कि हमारा 'आध्यात्मिक अध्याय', जिस पर अभी तक हमने कोई ध्यान ही नहीं दिया है, को ध्यान ही स्वाध्याय है, भौतिक चिन्ता से निकलकर आत्मिक (आध्यात्मिक) चिंतन में युक्त होने की क्रिया-प्रक्रिया ही 'स्वाध्याय' है। एक याज्ञिक आयोजन में एक विचार-गोष्ठी हुई। उसमें एक ज्ञानी जी ने भी भाग लिया। उनकी आयु अधिक नहीं थी। संचालक ने जब उनके लिए 'ज्ञानी' संबोधन प्रयोग किया, तब उनकी बड़ी अच्छी प्रतिक्रिया थी, वे बोले, ''महोदय! मैं ज्ञानी तो हूँ, पर उस अर्थ में नहीं, जिस अर्थ में आप समझते हैं। मैं वास्तव में अभी तक 'गया नहीं हूँ। उधर (अध्यात्म-ईश्वर की ओर) जाने की प्रक्रिया में हूँ।' स्वाध्यायी का भी सच्चा अर्थ यही है।

स्वाध्याय एवं अध्ययन में अति अंतर है, हालांकि धार्मिक, आध्यात्मिक एवं दार्शनिक ग्रंथों का अध्ययन आध्यात्मिक प्रगति को प्रखर बनाता है, तथापि बिना अक्षरज्ञान और पुस्तक के भी स्वाध्याय में अनवरत रहा जा सकता है। स्वाध्याय के द्वारा एक सामान्य व्यक्ति अपने दोष-दुर्गुणों को उत्तरोत्तर निकालता हुआ 'योगी' के स्तर तक पहुँच सकता है, जहाँ पहुँचकर उसे कुछ भी जानना शेष नहीं रह जाता, जबकि अध्ययन के द्वारा कोई व्यक्ति पीएच.डी. और डी.लिट. होकर भी शराब, पान, सिगरेट, ईर्ष्या, निंदा आदि अवगुणों-दुर्गुणों का पिटारा हो सकता है तथा डॉक्टर और एम.डी. होकर मरीजों के गुर्दे, आँते आदि निकालकर उन्हें सकता है। गधे पर ग्रंथों को लाद देने से गधा 'स्वाध्यायी' या 'योगी' नहीं बन जाता। प्रोफेसर, डॉक्टर, वकील आदि उच्च शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों में से अधिकांश आध्यात्मिक दृष्टि से अंधे हैं, शिक्षा रूपी चश्मा की इन्हें कोई उपयोगिता नहीं और जो जिराक्स जैसी दृष्टिवाले स्वाध्यायी हैं, उन्हें शिक्षा के चश्में की कोई आवश्यकता नहीं है, बल्कि स्वाध्याय की भाषा बंद आँखों से और भी अधिक आसानी से पढ़ी जाती है। आप इसे चलते-फिरते, उठते-बैठते लेटते किसी भी समय और किसी भी स्थिति में पढ़ सकते हैं, हालांकि सिद्धजनों ने दो बेलायें ऐसी भी बताई हैं, जो स्वाध्याय के लिए अति अनुकूल हैं, ये हैं- रात्रि में सोने से पूर्व 'तत्त्वबोध' की बेला, जब व्यक्ति को अपनी और संसार की मृत्यु का स्मरण करते हुए यह ध्यान करना चाहिए कि बीते हुए दिन में उससे कोई त्रुटि नहीं हुई? यदि हुई है, तो प्रभु से क्षमा माँगते हुए भविष्य में उसे न करने का संकल्प करना चाहिए दूसरी है- प्रातः जागरण के बाद की बेला 'आत्मबोध' इस समय व्यक्ति को संपूर्ण दिन की कार्य योजना बनाते समय संकल्प लेना चाहिए कि वह कोई भी ऐसा कार्य नहीं करेगा, जिससे मानवता पीड़ित हो।

स्वाध्याय और अनुभव परस्पर सन्निकट होने के बावजूद एक नहीं हैं। स्वयं मरते समय जो करार होता है, वह अनुभव है। दूसरे को मरता हुआ देखकर जो कष्ट भ्रास होता है, वह स्वाध्याय है। स्वाध्याय के द्वारा जो उपलब्धि सिद्धार्थ ने प्राप्त की अन्य किसी ने नहीं। उनके मरीज, वृद्ध और मृतक को देखकर जो स्वाध्याय किया, उससे वे बोधिसत्त्व बनकर अंततः भगवान ही बन गये। अशोक का स्वाध्याय कलिंग युद्ध के भंयकर नर-संहार को निहार कर शुरु हुआ और वह क्रूर अशोक से 'अशोक महान' बन गये। मूलशंकर का अध्यात्म तो शुरू हो जाता है स्वाध्याय से जब वे स्वामी विरजार्वद के बंद दरवाजे को खटखटाते हैं और स्वामीजी अंदर से ही पूछते हैं ''कौन?'' तब मूलशंकर द्वारा दिया गया उत्तर ''यही तो मैं आपसे जानने आया हूँ कि मैं कौन हूँ?'' स्वाध्याय के अध्याय का प्रथम, अंतिम और मूल तत्त्व है, उनके स्वामी दयानंद बनने की प्रक्रिया यहीं से शुरू होती है। तुलसीदास का स्वाध्याय पत्नी रत्नावली (जो उनके लिए वास्तव में रत्नावली सिद्ध हुई)की फटकार से शुरू हुआ और उसने कामुक तुलसी को स्वामी तुलसीदास बना दिया। आबारा जैसे बिल्वर्भगल का स्वाध्याय तब शुरू हुआ जब उसने चितामणि वेश्या से सुई लेकर स्वनेत्र फोड़ लिए। जब तक आँखें रही तब तक उसे कुछ भी अच्छा नही दिखाई दिया दृष्टिहीन होकर उनने जो स्वाध्याय किया, उसने उन्हें अष्ट छाप का शिरोमणि कवि बनते हुए भगवान कृष्ण का प्रेम-पात्र बना दिया। कबीर के लिए काला अक्षर भैंस बराबर था, पर उनकी संपूर्ण वाणी में स्वाध्याय की ही अभिल्पक्ति है। 'बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न दीखा कोय। जो दिल खोजा आपना, मुझसे बुरा न कोय।।'' मैं तो कबीर ने स्वाध्याय के रहस्य का सारा सत्व ही उड़ेल दिया है। भारत में विवेक, तिलक, गाँधी, विनोबा, नरसी, नानक, दादू, रैदास, रहीम आदि सवाध्यायियों की एक अटूट श्रृंखला रही है, जो आज भी विद्यमान है।

संपर्क : 'कामायनी', काय स्थान, पुरनपुर, पीलीभीत, उ.प्र.

शाकाहारी क्यों होना चाहिए

○ दिनेश रावत

शाकाहार पर ट्रिस्टैम स्टुअर्ट की चर्चित पुस्तक 'द ब्लडलेस रेवोल्यूशन : रेडिकल वेजीटेरियंस एंड द डिस्कवरी ऑफ इंडिया' जहाँ विश्व में शाकाहार के प्रति बढ़ती रुचि तथा उसके फायदे का वैज्ञानिक विवेचन और दिलचस्प विश्लेषण करती है, वहीं इस संदर्भ में भारत के योगदान की जमकर प्रशंसा भी करती है। स्टुअर्ट इस मामले में उपदेश देने की कोशिश नहीं करते, बल्कि तथ्यों और जीवन मूल्यों के संदर्भ में अपनी बात सामने रखते हुए हमें यह सोचने पर मजबूर करते हैं कि हम क्या खाते हैं और क्यों खाते हैं; और हमारी पसंद के आहार का हमारे ऊपर जंतु-जगत और हमारी पृथ्वी की पारिस्थितिकी पर क्या प्रभाव पड़ता है।

यद्यपि यूरोप में 'वेजीटेरियन' शब्द 1880 के दौरान प्रचलन में आया था लेकिन ईसा पूर्व छठी शताब्दी में पाइथोगोरस ने अमरता का सिद्धांत प्रस्तुत किया था जिसमें बताया गया था कि समस्त सजीव प्राणियों के बीच आत्मा का आवागमन होता है। इस तरह किसी प्राणी का मांस का खाना घोर अनैतिक और अमानवीय है। पाइथोगोरस का यह सिद्धांत मिश्र से मिला और विश्वास किया जाता है कि मिश्र को यह विचार भारतीय दार्शनिकों के जरिए मिला। बाद में पाइथोगोरस के सिद्धांतों का समर्थन सुकरात और प्लेटो जैसे दिग्गज दार्शनिकों ने किया। पाइथोगोरस खुद भारत न आए हों, लेकिन सिकंदर महान निश्चित तौर पर भारत आए थे। जब 326 वर्ष ईसा पूर्व सिकंदर तक्षशिला (अब पाकिस्तान में) आए थे और ब्राह्मणों, जैनियों और बौद्धों से उनका सामना हुआ तो पता चला कि वे (भारतीय) पुनर्जन्म और अहिंसा में विश्वास करते थे और इस वजह से मांस नहीं खाते थे। तब एक ऐसी संस्कृति अस्तित्व में आई और खूब फली-फूली जो पूरी तरह मांस रहित आहार पर निर्भर थी और जिसने सदैव शाकाहार आंदोलन को प्रेरित किया।

यूरोप में जहाँ सिकंदर और शाकाहार के भारतीय सिद्धांत के प्रसंग को जल्दी ही भुला दिया गया, वहीं जो लोग मांस-रहित आहार पर निर्भर थे, उन्हें शाकाहारी नहीं कहा जाता था। दरअसल वे गरीब कहे जाते थे। मांस लाने वालों का 'स्टेटस' था। वहाँ, खासतौर पर ब्रिटेन में, माना जाता था कि यह ताकत और पौरुष के लिए आवश्यक है। फ्रांसीसी चिकित्सक फ्रांसुआ बर्नियर सन् 1660 के दौरान जब मुगल बादशाह औरंगजेब के दरबार में आए थे, तो यह

जानकर दंग रह गए कि यहाँ शाकाहार न सिर्फ व्यावहारिक विकल्प है, बल्कि यह सेना का भी गुण है। यूरोपीय सेनाएँ जहाँ मांसाहार के बिना लड़ना अस्वीकार कर देती थीं, वहीं भारतीय सेनाएँ शाकाहार से ही संतुष्ट थीं। इसमें कोई शक नहीं कि 'हिंदू संस्कृति ने यूरोप की आत्मकेंद्रीकता को गहरे तक हिला दिया था, लेकिन इसके बावजूद इसने बहुत कम लोगों की ही आँखें खोली।'

इन दिनों जब शाकाहारवाद विश्वव्यापी हो रहा है (अकेले ब्रिटेन में 40 लाख शाकाहारी हैं), ऐसे में कल्पना करना मुश्किल है कि यह कभी विवादास्पद मुद्दा रहा होगा। एक तरफ जहाँ कट्टर मांसाहारी शाकाहारियों का उपहास उड़ाते हैं और उन्हें पौरुषहीन, दुर्बल, सुस्त आदि कहते हैं, वहीं थॉमसटार्यान जैसे पाइथोगोरसवादी उग्र शाकाहारी मांस खाने को घोर अनैतिक और पतन की ओर से ले जाने वाला मानते हैं। प्रोटेस्टेंट इंग्लैंड में जहाँ मांस खाने से परहेज करने को अँधविश्वास और कैथोलिकिज्म के अवशेष के तोर पर देखा गया, वहीं कैथोलिक चर्च यह सिखाता है कि यह संसार और इसमें (जंतुओं समेत) जो कुछ है, वह मनुष्यों के इस्तेमाल के लिए है। भले ही इस विचार को खतरनाक मानकर एक सिरे से खारिज कर दिया गया था, फिर भी मांस न खाना प्रायश्चित का एक रूप ही था।

यह सच है कि लोग आज शाकाहारी बनने का फैसला उन्हीं कारणों और विचारों से लेते हैं जो 2000 वर्ष पहले थे। यानी कि शाकाहार मानव स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद है और जंतुओं की हत्या अनैतिक और अशुभ है। यूरोप में शाकाहारी बनने के पीछे किसी तरह के धार्मिक विचार की कोई बड़ी भूमिका नहीं है। शाकाहार का संबंध अब सेहत से जुड़ गया है। त्वरित फार्मिंग के तरीके, मांसाहार के साथ शरीर में पहुँचने वाले हानिकारक रसायन आदि चीजें लोगों को मांस छोड़ने के लिए बाध्य कर रही है। स्टुअर्ट ने अपनी पुस्तक में मांस छोड़ने के लिए महत्त्वपूर्ण कारण प्रस्तुत किए हैं, वे हैं परिस्थितिकीय और आर्थिक। यह बात बहुत पहले से साबित हो चुकी है कि प्रति एकड़ के हिसाब से शाकाहारी भोजन मांस की तुलना में बहुत से लोगों को संपोषित करता है। इसके बावजूद पशुओं के चरने तथा सोयाबीन के उत्पादन के लिए हर साल बड़े पैमाने पर वर्षावनों का नाश किया जा रहा है। इसी सोयाबीन का बड़ा हिस्सा पशुओं को चारे के रूप में खिलाया जाता है। यही पशु बाद में संपन्न पश्चिमी और तेजी से बढ़ते चीनी लोगों की प्लेटों में भोजन के तौर पर पहुँचते हैं। मांसाहारी इस बात से जरूर सहमत होंगे कि इसे बदलना बहुत जरूरी है।

-राष्ट्रीय सहारा से साभार।

''अपने ही चक्रव्यूह में फँसे हैं भारतवासी''

○ डॉ॰ जगपाल सिंह

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद भारतवासियों ने शासन-व्यवस्था के रूप में प्रतिनिधि लोकतंत्र को स्वीकार किया था। ''मतदाता/मतदान की पूर्ण स्वतंत्रता'' तथा ''राजनीतिक समानता'', प्रतिनिधि लोकतंत्र का अपरिवर्तनीय सैद्धांतिक पक्ष है। शासकीय ढाँचा तथा चुनाव-पद्धति, प्रतिनिधि लोकतंत्र का परिवर्तनीय वैधानिक पक्ष है। निर्वाचन-क्षेत्र/मण्डल के प्रत्येक मतदाता का चुने जाने का समान अवसर, प्रतिनिधि लोकतंत्र का अपरिवर्तनीय व्यावहारिक पक्ष है। चुने जाने के समान अवसर के बिना न तो ''मतदाता/मतदान की पूर्ण स्वतंत्रता'' संभव है और न ही ''राजनीतिक समानता'' संभव है। निर्वाचन क्षेत्र/मण्डल के प्रत्येक मतदाता के चुने जाने के समान अवसर को सुनिश्चित करने का पूर्ण उत्तरदायित्व शासकीय ढाँचे तथा चुनाव-पद्धति का था और है। क्या वर्तमान शासकीय ढाँचा तथा चुनाव-पद्धति अपने इस लोकतांत्रिक-उत्तरदायित्व को पूरा करने में समर्थ व सक्षम है? यदि नहीं तो यह देश के मतदाताओं के साथ स्वतंत्र भारत के राजनेताओं के द्वारा किया गया सबसे भयानक वैधानिक षड्यंत्र है।

भारतवासियों के द्वारा बनाये हुए चक्रव्यूह का पहला द्वार है देश व समाज में व्याप्त सभी व्यक्तिगत अपराध, सामाजिक बुराइयाँ तथा राष्ट्रीय समस्याएँ, चक्रव्यूह का पहला द्वार है। स्वतंत्र भारत के राजनेताओं के द्वारा बनायी व अपनायी गयी व्यवस्थायें-संस्थायें-कानून-नियम-कार्यक्रम, चक्रव्यूह का दूसरा द्वार है। देश के सभी छोटे-बड़े राजनीतिक दल तथा उनके नेता, चक्रव्यूह का तीसरा द्वार है। वर्तमान शासकीय ढाँचे तथा चुनाव-पद्धति रूपी वैधानिक षड्यंत्र, चक्रव्यूह का चौथा द्वार है। वर्तमान शासकीय ढाँचे तथा चुनाव-पद्धति रूपी वैधानिक षड्यंत्र को समस्त-भारतवासियों के द्वारा जाने-अनजाने में तथा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से प्रदान की गयी मान्यता, चक्रव्यूह का पाचवाँ व अन्तिम द्वार है। चक्रव्यूह का पाचवाँ व अंतिम द्वार पूरे चक्रव्यूह के लिए एक बहुत ही सुदृढ़ सुरक्षा-कवच का कार्य कर रहा है।

इतिहास इस बात का साक्षी है कि नाभि में स्थित अमृत रूपी सुरक्षा-कवच को समाप्त किये बिना श्रीराम बलशाली रावण का वध नहीं कर पाये थे। ठीक उसी प्रकार से चक्रव्यूह के पाँचवें व अन्तिम द्वार रूपी सुरक्षा-कवच को समाप्त किये बिना न तो वर्तमान शासकीय ढाँचे तथा चुनाव-पद्धति रूपी वैधानिक षड्यंत्र से मुक्ति मिलने वाली है,न ही देश के छोटे-बड़े राजनीतिक दलों तथा उनके नेताओं से छुटकारा मिलने वाला है; न ही वर्तमान व्यवस्थाओं-संस्थाओं-नीतियों-कानूनों-नियमों-कार्यक्रमों में कोई बुनियादी परिवर्तन होने वाला है और न ही देश व समाज में व्याप्त किसी भी एक व्यक्तिगत अपराध, सामाजिक बुराई तथा राष्ट्रीय समस्या का स्थायी समाधान निकलने वाला है।

चक्रव्यूह के पाँचवें व अंतिम द्वार को समाप्त करने का सैद्धांतिक, वैधानिक व व्यवहारिक अधिकार केवल समस्त भारतवासियों का है। समस्त भारतवासियों को संगठित करने के लिए वर्तमान शासकीय ढाँचे तथा चुनाव-पद्धति की षड्यंत्रकारी भूमिका तथा इनके सर्वमान्य विकल्पों को देश के प्रत्येक मतदाता तक पहुँचाना जरूरी है। वर्तमान शासकीय ढाँचे तथा चुनाव-पद्धति की सर्वमान्य संक्षिप्त रूपरेखा अगले पृष्ठ पर दी जा रही है। वर्तमान शासकीय ढाँचे तथा चुनाव पद्धति की षड्यंत्रकारी भूमिका तथा इनके सर्वमान्य विकल्पों को देश के प्रत्येक मतदाता तक पहुँचाने के लिए किसी भी विधान सभा के किसी भी एक (केवल एक) निर्वाचन-क्षेत्र से एक हजार से अधिक वैध नामांकन पत्रों की प्रस्तुति बहुत ही विश्वसनीय तथा प्रभावशाली कार्यक्रम है।

●●●

उ.प्र. विस चुनाव कार्यक्रम 2007

कुल : 403 सीटें और तीन लोकसभा सीटें (राबर्ट्सगंज, मिर्जापुर और बिल्हौर)

चरण	1	2	3	4	5	6	7
मतदान की सीटें	62	58	57	57	58	58	59
अधिसूचना जारी	मार्च 13	मार्च 17	मार्च 23	मार्च 28	मार्च 3	मार्च 5	अप्रैल 13
नामांकन की अंतिम तिथि	मार्च 20	मार्च 24	मार्च 30	अप्रैल 4	अप्रैल 10	अप्रैल 12	अप्रैल 20
नामांकन पत्रों की जांच	मार्च 21	मार्च 26	अप्रैल 2	अप्रैल 5	अप्रैल 11	अप्रैल 13	अप्रैल 21
नाम वापसी की अंतिम तिथि	मार्च 23	मार्च 28	अप्रैल 4	अप्रैल 7	अप्रैल 13	अप्रैल 16	अप्रैल 23
मतदान की तिथि	अप्रैल 7	अप्रैल 13	अप्रैल 18	अप्रैल 23	अप्रैल 28	मई 3	मई 8

पूरब का ऑक्सफॉर्ड- पुणे

○ प्रो० लखन लाल सिंह 'आरोही'

जब भी पुणे आता हूँ- नए एहसास से भर जाता हूँ। पुणे कभी बासी नहीं होता। यह एक जीवंत महानगर का लक्षण है। यह एक गतिशील महानगर है। सदैव नई अस्मिता प्राप्त करने की दुर्दमनीय भूख। कहीं ठहराव और जड़ता नहीं, चाहे साहित्य का क्षेत्र हो या प्रौद्योगिकी का। संस्कृति के हर क्षेत्र में अपनी अंतरराष्ट्रीय नेतृत्वकारी छवि बनाने को पुणे बेचैन। आए दिन हिंदी अँग्रेजी, मराठी, बंगला, तेलुगु, मलयालम के अखबार संस्कृति के किसी क्षेत्र में घटी नई खबरें पाठकों के सामने परोसकर पुणे की पहचान में विस्मयकारी नवीनता उपस्थित करते हैं। पुणे अपने बहुआयामी सांस्कृतिक गतिशीलता से समृद्ध तो है ही-वह अपनी सांस्कृतिक विरासत के लिए भी चर्चित है। पुणे समय से आगे चलता है। अनुकरण और पीछे चलना उसका स्वभाव नहीं। पुणे इस संदर्भ में विश्व में अकेला महानगर है।

इस बार पुणे विजयादशमी को आया हूँ। पुणे के एक उपनगर विमाननगर में अपने आवास में रहता हूँ। यह उपनगर हरा-भरा, अत्यंत स्वच्छ और निरंतर विकासशील है। हरियाली पुणे के परिदृश्य की विशेषता है। संपूर्ण पुणे हरा-भरा है। अतिआधुनिक होने पर भी पुणे प्रकृति से घनिष्ट रूप से जुड़ा हुआ है। पुणेवासियों का प्रकृति-प्रेम और सौंदर्य-चेतना की व्यंजना हर घर के सामने ही पुष्पवाटिका और हर चौराहे पर लगे पुष्प--बाजार से होती है। लोग यथावसर एक दूसरे का स्वागत फूलों के गुलदस्तों से करते हैं। पुणे महानगर की एक ओर अगर सहयाद्रि (पर्वत) की लंबी शृंखला है, तो शेष तीन ओर जंगल-झाड़ की आबाद विस्तृत पठार। पुणे प्रकृति का वरदान है। यहाँ प्राकृतिक सौंदर्य बिखड़ा हुआ है। भारत की सर्वोत्तम जलवायु पुणे में है। इसे दक्कन की रानी कहा जाता है। केंद्र और राज्यों के सरकारी सेवक सेवानिवृत्त होने पर अपना शेष जीवन पुणे में बिताने के लिए फ्लैट खरीदकर निवास करते हैं। वाडा संस्कृति से निकलकर पुणे फ्लैट संस्कृति में जी रहा है। पेंशनधारियों के कारण इस महानगर को पेंशनधारियों का स्वर्ग भी कहा जाता है। पुणे के हर उपनगर में वरिष्ठ नागरिकों का संगठन है जो अत्यंत सक्रिय है। ये संगठन अपनी नियमित बैठक करते हैं और वरिष्ठ नागरिकों के हित में कार्य करते हैं। पुणे में वरिष्ठ नागरिकों के लिए अनेक पार्क, पुस्तकालय तथा वाचनालय हैं जहाँ वे बौद्धिक विमर्श करते हैं। ये वरिष्ठ नागरिक अपनी सक्रियता से पुणे के बौद्धिक विकास में अहम भूमिका का निर्वाह करते हैं।

मूल पुणे की चारों तरफ उपनगर हैं। इन उपनगरों की संख्या आए दिन बढ़ती ही जा रही है। ये उपनगर अपार्टमेंटों के जंगल हैं। भारत के हर प्रांत के लोग यहाँ रहते हैं। मूल पुणे के निवासी भी आबादी बढ़ जाने के कारण इन उपनगरों में निवास कर रहे हैं। पुणे लघु भारत है और भारतीय भाषाओं के संगम ने इसकी मराठी अस्मिता को परिवर्तित कर कोस्मोपोलीटीज बना दिया है जिसमें अँग्रेजी और हिंदी पारस्परिक संवाद और संप्रेषण की भाषा बन गई है। यहाँ विदेशी नागरिकों को भी निवास करते हुए देखा जा सकता है जो भिन्न-भिन्न उद्देश्यों से यहाँ निवास कर रहे हैं। उपर्युक्त स्थिति ने पुणे महानगर में एक अति आधुनिक संस्कृति का निर्माण कर दिया है-परंपरा हाशिए पर जा रही है और आधुनिकता केंद्र में आ गई है। परपरा और आधुनिकता के द्वन्द से पुणे में एक नई संस्कृति और जीवनशैली विकसित हो गई है। नई वेश-भूषा और जवीनशैली ने यहाँ के जीवन में खुलापन और सहजता ला दी है। कोई कुठा और झिझक नहीं। महिलाएँ पुरुषों से लिफ्ट लेती हैं और पुरुषों के साथ सटकर बस पर बैठती हैं। किसी भी उम्र के स्त्री पुरुष सड़क पर आपस में बात करते चलते हैं। पार्क में एकांत में बैठकर बाते करते हैं। प्राइवेसी को लोग यहाँ सम्मान देते हैं। आज समाज के लिए यहाँ का खुलापन सेक्सी हो सकता है, परंतु यहाँ के लोगों के मन में जरा भी इसकी गंध नहीं। वैसे भी पुणे का समाज पहले भी खुला समाज था, क्योंकि ज्योतिबा फुले ने ही भारत में पहले-पहल संघर्षों के बीच इसी पुणे में महिला शिक्षा प्रारंभ की थी। तभी से पुणे की महिलाएँ खुली हवा में सांस लेती आ रही हैं। आधुनिकता ने उन्हें और अधिक खुला और स्मार्ट बना दिया है। बाहर से अतिआधुनिक दीखने वाले पुणे के नागरिक मन से भारतीय हैं। धार्मिक उत्सवों के समय

देवी देवताओं के सम्मुख आस्था और श्रद्धा से झुके उनके सिरों को देखकर तो यही एहसास होता है।

पुणे महानगर के संगम में हर भाषा अपनी संस्कृति के साथ उपस्थित है। भारतीय संस्कृति सामासिक संस्कृति है। हर भाषा एक भिन्न संस्कृति की व्यंजक और वाहिका होती है। इन्हीं संस्कृतियों के मेल से भारत की सामासिक संस्कृति का निर्माण हुआ है। भारत की इस सामासिक संस्कृति के विभिन्न घटकों के स्वरूप के दर्शन यहाँ विभिन्न अवसरों पर होते हैं। पुणे के मूल निवासी- मराठी भाषी अपनी संस्कृति का प्रदर्शन गणेश उत्सवों में करते हैं। गणेशोत्सव पुणे का मुख्य समारोह है, जिसे लोकमान्य तिलक ने घरेलू उत्सवों से सार्वजनिक उत्सव बना दिया है। इस अवसर पर पुणे उत्सवमय हो जाता है। पुणे का गणेशोत्सव भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी सुविख्यात है। इसी गणेशोत्सव के अवसर पर यहाँ पुणे महोत्सव भी मनाया जाता है। इसमें राष्ट्रपति से लेकर फिल्मी कलाकार तक पुणे का वैभव बढ़ाने यहाँ पधारते हैं। दिवाली का ज्योति-पर्व पुणे में पाँच दिनों तक मनाया जाता है। पटाखों की आवाज से आकाश फट जाता है। सारा महानगर उल्लास सागर में डूब जाता है। ज्योति का महासगर लहरा उठता है- दुख-दरिद्रता का कहीं पता नहीं। अपार वैभव ने पुणे निवासियों को उत्सवधर्मी बना दिया है। यह उत्सवधर्मिता बंगाली समाज के दुर्गापूजनोत्सव और नवरात्र के समय गुजरातियों के डांडिया रास में भी प्रदर्शित होती है। पुणे में रहने वाला हर समाज उत्सवधर्मी हो गया है।

पुणे महाराष्ट्र राज्य की सांस्कृतिक राजधानी कहलाता है। पुणे सांस्कृतिक उत्कर्ष के शिखर पर आहट है। शिक्षा कला शिल्प, संगीत, प्रौद्योकि, संगीत के क्षेत्र में पुणे आए दिन निया कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। पुणे सांस्कृतिक उत्कर्ष के शिखर पर आरूढ़ है। पुणे के मिजाज में नवीनता का आग्रह है। इसलिए पुणे चलता नहीं, उड़ता है। पुणे के लोग स्वप्नदर्शी हैं। यह स्वप्नदर्शिता पुणे को छत्रपति शिवाजी से विरासत में मिली है, इसी पुणे में शिवाजी ने सोने का हल चलाया था और हिंदवी स्वराज की स्थापना की थी। शिवाजी से पूर्व यह नगर पुजवड़ी का निर्माणकार पुणे की नया आयाम दिया। कस्बे ही पेठ कहलाते हैं, जिसमें बने पारिवारिक मकान वाडा कहलाते हैं, परंतु बढ़ती आबादी और फ्लेट संस्कृति ने इन वाडो को ध्वंस के कगार पर ला दिया है। पुणे ने शिक्षा और सूचना तकनीक के क्षेत्र में अपनी विशेष पहचान बना ली है। पुणे विश्व विद्यालय ने देश और विदेश ने अपनी अलग छवि बना ली है। यहाँ देश-विदेश के छात्र पढ़ते हैं। इस विश्वविद्यालय के पाठयक्रम समय और परिस्थिति के अनुसार संशोधित परिवर्त्तित होते रहते हैं। पूरब का आम्सफोर्ड कहा जानेवाला पुणे विश्वविद्यालय इस उपनाम को त्याग कर आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के लिए 'पशिचम का पुणे' बनने के लिए प्रयत्नशील है। पुणे में अनेक सरकारी एवं निजी शिक्षण संस्थाओं की भरमार होने के कारण इस महानगर को शिक्षा का महानगर भी कहा जाता है। सूचना-तकनीक ने इस महानगर को अत्यन्त आकर्षक बना दिया है और पुणे भीड़ का नगर बन गया है। संपूर्ण भारत के युवक यहाँ रोजगार हेतु आ रहे हैं। यहाँ कोई बेरोजगार नहीं। पुणे रोजगार का केंद्र है। भारत में हर शिक्षित अशिक्षित बेरोजगार का लक्ष्य आज पुणे बन गया है जहाँ पैसा मिलता है और लोग अच्छे जीवन शैली जीते हैं। अनेक ऐतिहासिक धराहरों को धारण करने वाला पुणे अब इतिहास और आधुनिक तकनीक का अनोखा अलबम बन गया है। पुणे के आधुनिक उन्मेष केवल उसकी प्रौद्योगिकी में ही नहीं अपितु उसके हजारों बहुमंजिली भव्य अपार्टमेंटों के शिल्प में भी दिखाई पड़ती है। इन विशाल भवनों की भव्यता और उत्कृष्ट शिल्प ने भारत के ही अन्य शहरों को नहीं, विदेश के भी

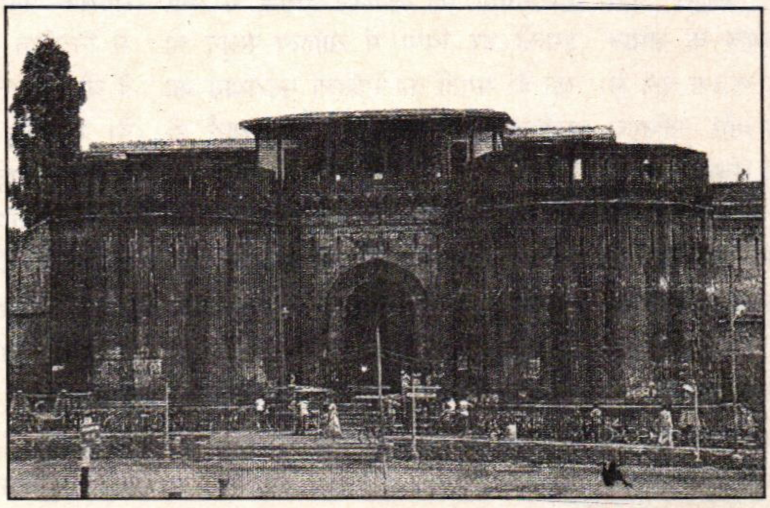

प्रसिद्ध शहरों को पीछे छोड़ दिया है।

संगीत, नृत्य, अभिनय पुणे वासियों को विरासत में मिला है। पुणे के लोग नाटकों के अत्यन्त प्रेमी हैं। यहाँ अनेक आधुनिक रंगमंच हैं। पुणे के रंगमंच पर सफल और लोकप्रिय हुआ नाटक मुम्बई और महाराष्ट्र के अन्य नगरों में भी लोकप्रिय हो जाता है। नाटक को बालगंदर्भ ने अपने गायन और अभियन से आम प्रेक्षकों तक पहुँचाया। पर मराठी रंगमंच के समान हिन्दी रंगमंच न होने के कारण पुणे में हिंदी नाटकों का लेखन और अभिनय का विकास नहीं हो सका। संजय भारद्वाज जैसे युवा रंग शिल्पी हिन्दी नाटक लेखन एवं रंगमंच के विकास में प्रयत्नशील हैं। पुणे अनेक संगीत साधकों का नगर है और आए दिन आयोजित होनेवाले संगीत समारोहो में उनकी सुर लहरियों से यह नगर संगीतमय हो जाता है। हर वर्ष पुणे में शरद महोत्सव होता है जिसमें सीमस्थित राज्य-कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, असम, मणिपुर, आदि के कलाकार भाग लेकर अपनी कला और संस्कृति का प्रदर्शन करते हैं। इतना ही नहीं, पुणे के कलाकार विदेश के कलाकारों के साथ मिलकर अपनी कला संस्कृति का प्रदर्शन बारी-बारी से एक दूसरे के नगरों में कर अपने कलात्मक अनुभवों का आदान प्रदान करते हैं।

पुणे मराठी भाषा-साहित्य का केंद्र है। कला और साहित्य का हर आंदोलन पुणे में ही जन्म लेता है। यहाँ के लोगों की पठनीयता आश्चर्यचकित करती है। पुणे से एक दर्जन समाचार-पत्र प्रकाशित होते हैं। यहाँ से प्राय: सभी अँग्रेजी अखबारों के संस्करण छपते हैं। बंगला, तेलगु, मलयालम, गुजराती के भी समाचार पत्र यहाँ चौक-चौराहों पर बिकते दीखते हैं। हिंदी के तीन-चार समाचार-पत्र भी पुणे से प्रकाशित होते हैं, लेकिन इसके पाठकों की संख्या कम है। मराठी अखबार सबसे अधिक बिकते हैं। दिवाली के अवसर पर विशेषांक होता है। वैसे भी हर मराठी अखबार का साप्ताहिक साहित्यक परिशिष्टांक प्रकाशित होता है। हर मराठी की दिनचर्या अखबार पढ़ने से शुरू होती है। मराठी का साहित्य समृद्ध है और इसकी हर विधा में साहित्य-सजृन हो रहा है। मराठी का साहित्य मुख्यधारा का साहित्य है और समकालीन यथार्थ ही इसका कथ्य है। दलित साहित्य-लेखन की शुरूआत मराठी साहित्य से ही हुई है। पुणे अनेक मराठी साहित्य और दलित लेखन का गढ़ है। आचार्य अत्रे से लेकर मृत्युंजकार तक यहीं पुणे में हुए हैं। पुणे में अनेक वरिष्ठ मराठी साहित्यकार सृजनरत हैं, जिनकी चर्चा स्थानाभाव में संभव नहीं है।

पुणे मराठी क्षेत्र होने पर भी यह महानगर हिंदी साहित्यकारों का साध-ना-स्थल है। इस नगर की सृजनात्मकता की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि अनेक मराठी भाषी हिंदी में भी साहित्य-सृजन कर रहे हैं। 'दूसरा सप्तक' के कवि श्री हरिनारायण व्याज जी चौरासी वर्ष की उम्र में इस पुणे में ही अभी तक सृजनरत हैं। वे पुणे के गौरवगरिमा के प्रतीक हैं। अनेक ग्रंथों के रचयिता और माल्यशास्त्र के मर्मज्ञ आचार्य डा. आनंद प्रकाश दीक्षित आज भी इसी पुणे में अपनी कलम और वाण्मिता से हिंदी साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं। इसी पुणे में हिंदी के वरेण्य आलोचक डॉ. चन्द्रकांत बांडिवडेकर अपनी सारस्वत साधना में लीन हैं। यहाँ हिंदी क अनेक कवि, उपन्यासकार, नाटककार, कहानीकार हैं। डॉ. मालती शर्मा, डॉ. प्रभा माथुर, डॉ. चेतना राजपूत आदि महिला लेखन को समृद्ध कर रही हैं। श्री मधु शतेकार, डॉ. दामोदर खड़से आदि मराठी भाषी होने पर भी हिंदी साहित्य को अपनी रचनात्मकता से समृद्ध कर रहे हैं। डॉ. केशव प्रथमवीर के संपादकत्व में समग्र दृष्टि' नामक साहित्यक पारिवारिक मासिक पत्रिका इसी पुणे से गत वर्ष से नियमित रूप से प्रकाशित हो रही है जो स्तरीयता में स्तरीयता में अद्वितीय है। महाराष्ट्र राष्ट्रभाषा प्रचार-समिति और महाराष्ट्रभाषा प्रचार सभा पुणे में ही हैं जो राष्ट्रभाषा के प्रचार में दशकों से समर्पित हैं। 'समिति' से 'जयभारती' नामक मासिक-पत्रिका भी प्रकाशित होती है, जिसके संपादक श्री जयराम गंगाधर फगरे हैं जो समिति के संचालक भी हैं। सभा से भी 'राष्ट्रभाषा' नामक पत्रिका प्रकाशित होती है, जिसके संपादक सभा के संचालक प्रो. सु.मो. शाह हैं। हिंदी क्षेत्र की संस्थाएँ निष्ठा एवं समर्पण से हिंदी प्रचार में लगी हुई हैं। सांस्कृतिक महानगर पुणे अपने उत्कर्ष के हर शिखर पर आरुढ़ हो आगे बढ़ जाता है। अखबार हर रोज ताजा सुबह के समाज एक ताजा पुणे की खबर लाता है। पुणे कभी बासी नहीं होता।

नित नया एहसास इस सांस्कृतिक महानगर पुणे का वैशिष्ट्य है। पुणे अतीतजीवी नहीं, भविष्य जीवी है। अतीत के गौरव से वह आत्ममुग्ध नहीं भविष्य के नए-नए स्वप्नों को पाने के लिए निरंतरता गतिशीलता ही पुणे की नियति है।

संपर्क:
बी-2/2003, लुंकड़ कॉलोनिड,
विमान नगर, पुणे- 411014

पटना में तीन-दिवसीय ग्लोबल मीट फॉर ए रिसर्जेंट बिहार

विगत 19 जनवरी से 21 जनवरी 2007 तक पटना में तीन दिवसीय 'ग्लोबल मीट फॉर ए रिसर्जेंट बिहार' के तहत श्रीकृष्ण स्मारक भवन में आयोजित कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए राष्ट्रपति डॉ॰ ए॰पी॰जे॰ अब्दुल कलाम ने कहा कि 2015 तक बिहार को पूर्ण विकसित राज्य बनाने के लिए खेती एवं एग्रो फूड प्रोसेसिंग, शिक्षा एवं उद्यम, भूमंडलीय मानव संसाधन के रूप में युवाओं का विकास, नालंदा विश्व विद्यालय का विकास, स्वास्थ्य, खाद्य एवं जल प्रबंधन, आधारभूत संरचना का विकास, पर्यटक स्थलों को अंतर-राष्ट्रीय स्तर पर विकसित करना, बिहार के लिए ई॰ गवर्नेशन की दिशा में मिलकर कार्य करना होगा। उन्होंने पुन: कहा कि राज्य की 35,500 किलोमीटर सड़कों का तत्काल उन्नत बनाना आवश्यक है, साथ ही नेशनल एवं स्टेट हाइवे को अंतरराष्ट्रीय स्तर का बनाना होगा।

बिहार के मुख्य मंत्री नीतीश कुमार ने राष्ट्रपति को भरोसा दिलाया कि उनके सपनों का भारत बनाने के लिए विकसित बिहार भी बनेगा तथा बिहार सरकार का लक्ष्य है कि बिहार के विकास दर में वृद्धि कर 8.5 प्रतिशत की दर को प्राप्त करेंगे। उन्होंने पुन: कहा कि आने वाले दिनों में बिहार में एक लाख आठ हजार करोड़ का निजी पूँजी निवेश होगा। बीते एक वर्ष में बिहार में 27 हजार करोड़ के निवेश के प्रस्ताव को मंजूरी मिली है। ग्लोबल मीट के संचालन समिति के अध्यक्ष तथा बिहार के उप मुख्यमंत्री सुशील कुमार मोदी ने कहा कि राष्ट्रपति के बिहार को विकसित बनाने के मूल मंत्र को बिहार सरकार आत्मसात कर रही है। उन्होंने इस मौके पर ग्लोबल मीट का पूरा ब्योरा भी राष्ट्रपति के समक्ष प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर बिहार के राज्यपाल आर॰एस॰ गवई के साथ-साथ ग्लोबल मीट के समन्वयक प्रो॰ अलख नारायण शर्मा भी उपस्थित थे। बिहार में निवेश की संभावनाएँ ग्लोबल मीट में अप्रवासी भारतीयों ने देखे। पूरी तरह से बिहार को विकसित राज्य के नक्शे पर अंकित करने के सुझावों पर ही केंद्रीत इस कार्यक्रम में उद्योग पतियों, शिक्षाविदों, नीति निर्माताओं, चिकित्सों व अर्थशास्त्रियों समेत लगभग हर क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ-साथ 10 देशों के अप्रवासी भारतीयों ने हिस्सा लिया जिनमें अर्थशास्त्री लॉड मेघनाथ देसाई, अमेरिका के जानेमाने पूँजीपति प्रभु गोयल, योजना आयोग के सदस्य प्रो॰ अभिजीत सिंह, आई. टी. सी. के चेयर मैन वाई. वी. देवेश्वर और इंटरनेशनल इंस्टीच्यूट ऑफ लेबर स्टटीज के निदेशक डॉ॰ गौरी रोजर्स ने भी अपने विचार रखे। प्रधानमंत्री के आर्थिक सलाहकार परिषद् के अध्यक्ष डॉ॰ सी॰ रंगराजन ने समापन समारोह को संबोधित किया।

अप्रवासी भारतीय रवि शर्मा ने बताया कि अप्रवासी भारतीयों का न सिर्फ बिहार में निवेश की दिशा में सकारात्मक रूख है, बल्कि वे स्थानीय उद्यमियों को हर संभव जानकारी उपलब्ध कराने का भी प्रयास कर रहे हैं। यू. एस. कंसल्टेंट के कांउसल जनरल हेनरी वी जार्डन ने कहा कि पाँच हजार अमेरिकी डॉलर से देश के अन्य शहरों की भाँति पटना में भी अमेरिकन लाइब्रेरी की स्थापना की जाएगी जिसमें अमेरिका की सभ्यता-संस्कृति के साथ-साथ शिक्षा एवं रोजगार संबंधी जानकारियाँ उपलब्ध होंगी। अमेरिका में कैनन औद्योगिक सेरामिक उद्योग के चेयरमैन एच.एस. मस्करा ने कहा कि नीतीश सरकार ने बेशक बिहार में अपराधों पर काबू पाया है, लेकिन उन्हें ब्यरो क्रेट्स की लालफीताशाही को भी कंट्रोल करना होगा।

'ग्लोबल मीट फॉर ए रिसर्जेंट बिहार' के समापन समारोह को संबोधित करते हुए नीतीश कुमार ने कहा कि बिहार को देश की अगली पंक्ति में लाने तथा इसकी गरिमा को पुनर्स्थापित करने के लिए सरकार प्रतिबद्ध है और बाहर के लोग भी यहाँ पूँजी निवेश में रुचि लेने लगे हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पिछले तीन दिनों से पटना में अप्रवासी भारतीयों को यह मेला बिहार के लोगों की आँखों में एक सुनहरे कल का सपना जगा गया है और राज्य में विकास की राह दिखा गया है। खुशी की बात है कि अप्रवासी भारतीयों ने अपनी मातृभूमि का कर्ज चुकाने के क्रम में वे प्रदेश के विकास में अपना धन लगाने को तैयार हैं। अब केवल जरूरत इस बात की है कि उन्हें सुरक्षा और सुविधाएँ दी जाएँ जिसके लिए सरकार के द्वारा अपराध की कमर तोड़नी होगी, अपराधियों के राजनीतिक संपर्कों को खत्म करना होगा और साथ ही रेल-सड़क की बेहतर यातायात सुविधाएँ, बेहतर बाजार, श्रम, कच्चे माल आदि की उपलब्धता भी सुनिश्चित करानी होगी। इस ग्लोबल मीट का फालोअप बहुत जरूरी है। लोग एक मंच पर जुटें, मंथन करें और सही दिशा में कदम उठाएँ, तो सूबे के विकास को कोई रोक नहीं सकता।

– मनोज कुमार एवं शिव कुमार, पटना से।

भारत-नेपाल संस्कृतियों के आदान-प्रदान की रोमांचक यात्रा

○ सिद्धेश्वर

हालांकि नेपाल हमारे बिहार राज्य का पड़ोसी देश है और केंद्र सरकार के भारतीय लेखा एवं लेखा परीक्षा विभाग में अपने सेवाकाल के दौरान नेपाल के वीरगंज तथा विराटनगर जैसे कई नगरों में जाने का अवसर मुझे मिल चुका था, फिर भी हिमालय की तलहटी पर स्थित उसकी राजधानी काठमांडू की सौंदर्याकांक्षा वर्षों से मेरे मन में पल रही थी और वह पूरी हुई वर्ष 2006 के अंत होते-होते। आश्चर्य की तरह वह क्षण मेरे जीवन में आया, बल्कि सच कहा जाए तो जिसकी आप प्रतीक्षा करते हैं वह भी तो आपकी प्रतिक्षा करता है अर्थात् काठमांडू से सटे पहाड़ और उस पहाड़ की गोद में घाटियों को स्पर्श करतीं बर्फ से आच्छादित हिमालय की चोटियाँ।

आखिर वह दिन आ ही पहुँचा। अवसर था नेपाल अणुव्रत समिति का स्वर्ण महोत्सव और अखिल भारतीय अणुव्रत महासमिति की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की काठमांडू में बैठक। इस कार्यकारिणी के एक सदस्य तथा अहिंसा समवाय के संयोजक की हैसियत से मुझे भी आमंत्रण मिला और स्वर्ण महोत्सव के उपलक्ष्य में विगत 25 दिसंबर से 28 दिसंबर 2006 तक काठमांडू में आयोजित कार्यक्रम के साथ-साथ भारत से गए 41 सदस्यीय प्रतिनिधि मंडल में मैं भी शामिल हो पाया। अणुव्रत महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ॰ महेन्द्र कर्णावट के नेतृत्व में भारतीय प्रतिनिधियों का वह दल 23 दिसंबर 2006 को रक्सौल पहुँचा। अहिंसा तथा अणुव्रत के कार्यक्रमों में काफी अरसे से अभिरुचि रखने वाले डॉ॰ हेमंत कुमार भी अपनी बिटिया श्वेता के साथ हमारे दल में शामिल हुए। 22 दिसंबर की रात हमलोग भारतीय दूतावास के राजकीय अतिथिशाला में ही बिताई और उसके प्रभारी श्री विजय कुमार सिंह ने बड़ी गर्मजोशी से हमलोगों का स्वागत किया और अगले दिन यानी 23 की सुबह उन्होंने कचौड़ी-जलेबी का स्वादिष्ट जलपान कराकर हमलोगों को वीरगंज के लिए विदा किया।

वीरगंज के आदर्शनगर स्थित श्री मारवाड़ी सेवा सदन में पहुँचने पर वीरगंज अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री नवरत्न मुतेडिया ने अपने सदस्यों के साथ बड़ी आत्मीयता से स्वागत किया और दिल्ली से पधारे प्रतिनिधिमंडल में हमलोग भी शमिल हुए। 24 दिसंबर 2006 के अपराह्न चार बजे आरक्षित बस द्वारा 41 सदस्यीय भारतीय प्रतिनिधि मंडल का वह दल काठमांडू के लिए प्रस्थान किया। दल में तकरीबन एक दर्जन महिलाओं का भी प्रतिनिधित्व था।

कहना नहीं होगा कि महिलाओं की उपस्थिति से वह यात्रा काफी जीवंत हो उठी। कोई 40-50 किलोमीटर की दूरी ही अभी तय हो पाई थी कि अणुव्रत गीत ... से महिलाओं के सुमधुर स्वर पहाड़ों में गूँजने लगे। बाद में हम पुरुषों ने भी स्वर में स्वर मिलाया और बस का पूरा वातावरण गूँजायमान हो उठा। फिर पता ही नहीं चला कि हमलोग कितनी दूर निकल गए।

अगले पड़ाव पर पहुँचकर एक चाय की दुकान के सामने बस रुकी और लोग इतनी तेजी से उतरे गए मानो उतरकर वे अपनी सारी थकान चाय की चुस्की से मिटा लेना चाहते हों। थोड़ी ही देर में दल के व्यवस्थापक ने पूड़ी-सब्जी तथा मिठाई के पैकेट बस से उतारकर पेपर-प्लेट में परोसना प्रारंभ कर दिया। नमकीन-मीठे का मधुर पैकेट मात्र रात का खाना ही नहीं था, बल्कि वीरगंज के अणुव्रतियों की अत्यंत आत्मीयता से भरा वह सदस्यों के प्रति सम्मान का भाव था, जो हम सबों के बीच सौहार्द और सद्भाव का प्रतीक बन चुका था। सचमुच कितना अच्छा होता जब हम अपने देश के सभी क्षेत्र, भाषा, जाति और धर्म के सभी लोग ऐसे ही सद्भाव एवं मैत्री के भाव को दूसरे देश में पहुँचाते जिसके लिए हमारा यह भारत देश जाना जाता था और विश्व स्तर तक हमारी भारतीय संस्कृति की अलग पहचान थी। चाय की चुस्की अभी समाप्त भी नहीं हो पाई थी कि डॉ॰ कर्णावट साहब का आत्मीयता भरा वह आदेश सुनाई पड़ा कि सभी लोग बस में अपनी-अपनी जगह ले लें। फिर क्या लोगों ने फटाफट अपनी जगह ले ली और रात 11-12 के आस-पास पहाड़ियों के घुमावदार सड़क बस चल निकली। थोड़ी ही देर में मैं हैरान हुआ बस के चालक पर जो कितनी कुशलता और तत्परता से पहाड़ियों के उस घुमावदार सड़क पर अपनी सर्पिली चाल में चला जा रहा था जैसे बस भी हाथी के उस महावत के आदेश को मानने के लिए विवश हो। ज्यों-ज्यों पहाड़ियों के पेड़ों के बीच झिमिमिलाती रोशनी में एक विशिष्ट प्रकार की मैंने हरियाली देखी और पहाड़ी पर एक विशिष्ट साक्षी भाव-आसमान में कोई तरल बिंब मेरे रोम-रोम ने मेरे कानों में फुसफुसाया कि डरने की कोई बात नहीं, प्रकृति यों ही किसी की जान नहीं लेती, उसके साथ छेड़छाड़ से ही वह कुपित हो जाती है जैसा कि प्रकृति में प्रदूषण फैलाने से आए दिन समस्याएँ पैदा हो रही हैं।

खैर जो हो, बस तो अपनी सर्पिली चाल में चल रही थी और बस के यात्रियों खासकर महिलाओं के कंठ से वही गीत के स्वर सुनाई पड़ने लगे। अणुव्रत गीतों में युग यथार्थ तो हैं ही, उनमें संस्कृति के अंचल का डोर भी बँधा है। गीतों में जहाँ

प्रचेतना का संस्कार पंक्ति-पंक्ति में ध्वनित हो रहा था, वहीं कुछ गीतों में प्राकृतिक सौंदर्य की गाथा भी सम्मिलित थी। मानव मन जब उल्लास की बाँसुरी बजाते-बजाते थक जाता है, तब वह विश्राम की छाया तलाशने तो लगता है, लेकिन हारकर नहीं। यहीं मुझे मित्रवर डॉ॰ देवेन्द्र आर्य के गीत की ये पंक्तियाँ सहसा मुझे स्मरण हो आती हैं -

मानता हूँ आज मेरे पाँव कुछ थक से गए हैं
और मीलों दूर भी इस पंथ पर कब तक चलूँगा?
पर अभी तो आग बाकी है, अलावों को जलाओ,
मैं सृजन के द्वार पर नव-भाव की वंशी बनूँगा।

वस्तुत: आनंद की साधना को प्रथम माध्यम गीत ही है। आखिर तभी तो बस में सवार यात्रियों के कंठ से निकले गीतों के स्वर में आनंद की अनुभूति हो रही थी और काठमांडू की सुखद यात्रा की सार्थकता सिद्ध हो रही थी। दूसरी ओर जिस आस्था के जगमगाते स्तंभ - अहिंसा और अणुव्रत को चित्त-मन में संजोए हमलोग गंतव्य स्थान के लिए निकल पड़े थे वह आस्था ही उजाले का विश्वास था और इस संसार में साहस से जीने की जिजीविषा भी। अपनी दूसरी जिजीविषा, आत्मविश्वास तथा जयी संकल्पों के सहारे पहाड़ियों से गुजरते हमारे रास्ते कट रहे थे। कविवर डॉ॰ दया कृष्ण विजय वर्गीय 'विजय' के शब्दों में कहूँ कि यदि संकट पथ पर साहस कर बढ़े तो, फूल क्या काँटे भी हमसफर होंगे और यदि हम नहीं बढ़े तो फिर विषधरों से भरे इस जग में और कौन आगे बढ़ेगा। हमारी यात्रा को सार्थकता प्रदान कर रहा था। कविवर 'विजय' के अनुसार भविष्य के सूर्य, भावी की आशा-किरण हमीं हैं। इसी विश्वास को जगाकर समाज को स्वस्थ और राष्ट्र को सबल बनाने के रास्ते पर हमलोग चल निकले हैं और अब तो राष्ट्र की सीमा को भी लाँघकर पड़ोसी देश नेपाल में शांति अमन चैन और सौहार्द का वातावरण बनाने के लिए हमारे कदम बढ़ चुके हैं।

बस जैसे-जैसे उपर आकाश की ओर बढ़ती जा रही थी, वैसे-वैसे मेरे मानस-पटल पर ये बातें उभर रही थीं कि आकाश की ऊँचाइयों में ऐसी कोई चीज नहीं जिसे, मैं अपनी बाहों में बाँध सकूँ, पर हाँ चाँद से चेहरे टिमटिमाते नयनतारे, हवा, फूल, पहाड़ियों से निकलते संगीत, हरियाली, नदियाँ, पहाड़, प्रेम के सतरंगी रंग, प्यार के रिश्ते क्या नहीं हैं। एक ओर तो मैं अपने मन को समझाता हूँ - 'रे मन' तू धरती को प्यार कर, पर अपने अवचेतन मन को समझाता हूँ कि तू आकाश की सैर कर, सच तो यह है कि अपनी जमीन पर खड़े हो प्रेम व मैत्री के रिश्तों में जिंदगी बसर करते हुए रमणीय कल्पना लोक में सैर करे, यही तो जीवन का परमार्थ है। इसी भाव से प्रेरित होकर हम भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सभी इकतालिस सदस्य वसुधैव कुटुंबकम् की परिकल्पना कर नैसर्गिक शोभा का आनंद उठाते और निर्झर के कमनीय संगीत का आह्लाद लेते हुए काठमांडू की ओर बढ़े जा रहे हैं। तभी बालशौरि रेड्डी की पंक्तियाँ याद आईं यही जीवन है, यदि मनुष्य के भीतर आशा और आकांक्षाएँ न हों तो जीवन दूभर हो जाए, सृष्टि का क्रम रूक जाए यदि सबके अंदर वैराग्य का उदय हो जाए और फिर बालशौरि रेड्डी द्वारा कवयित्री वीणा जैन के काव्य संग्रह-बूँद फूल और मैं लिखी भूमिका में उद्धृत कवयित्री श्रीमती जैन की ये पंक्तियाँ स्मरण हो आती हैं -

कैसे बदलूँ मन का मौसम
लेने भी दो थोड़ा-सा दम
मेरा मन कोमल जलजात है
जिसे ओस कणों का इंतजार है।
तुम कहते हो मन गुलमोहर है
फिर डाल-डाल पर सजने दो
हरियाली के, सृजन की सरगम।

सृजन के इसी सरगम के साथ हमारी बस बढ़ी जा रही है अपने गंतव्य स्थान काठमांडू की ओर। सचमुच जिस देश नेपाल की राजधानी की ओर हम सब बढ़ते जा रहे हैं उसकी पहचान ऊँचे दुर्लध्य पर्वतों, कलकल करती प्रवहमान नदियों, इंद्रधनुषी रंगोंवाले सुरभित कलित कुसुमों से लदे-फदे, तारुण्य तीर्थ तरुओं, बलखाती अँगड़ाती विविध वल्लरीवदों, समुचित अंगयष्टिवती लावण्य ललिता ललनाओं तथा पुष्टाँग यौवन वलयित वीर नर पुगंवों से तो होती है, पर उस की पहचान वास्तविक रूप से संस्कृति, साहित्य, सभ्यता एवं कलात्मक दृष्टि के साथ-साथ, राजधानी स्थित पशुपतिनाथ मंदिर एवं पोखरा से भी होती है। आज भले ही कुछ मस्तिष्क नेपाल की संस्कृतिगत जीवन-पद्धति की विकृत विमानना करें, परंतु मुझे लगता है चाहे विलंब से ही सही एक दिन इसी संस्कृति और सभ्यता की आचार-विचार पद्धति को स्वीकारना होगा ठीक उसी प्रकार जिस प्रकार भारतीय संस्कृति की त्याग भावना के इस महान गुण को ही सारी अशांत शंकाओं का एक मात्र समाधान मानने की प्रवृत्ति जग रही है। भारतीय संस्कृति के इस गुण ने विश्व में व्यापकत्व का गौरव पाया जिसकी महत्ता साहित्य से जानी जा सकती है।

नेपाल और उसकी संस्कृति की बात सोचते-सोचते न जाने कब झपकी लग गई शायद अब थकान महसूस होने लगी। कुछ ही देर के बाद जब आँखें खुलीं तब अब भी बस अपनी गति से भागी जा रही थी, किंतु हमारी श्रीमती जी अपने सिरहाने मुझपर करके अब भी नींद में खर्राटे भर रही थीं। यह हाल केवल मेरा ही नहीं था, जो भी प्रतिनिधि अपनी धर्मपत्नी के साथ गये थे सबकी स्थिति करीब-करीब ऐसी ही थी। देखा मेरी सीट के ठीक बगलवाली दोनों सीट पर जयपुर दूरदर्शन के उपनिदेशक डॉ॰ के॰के॰ रत्तू जी भी नींद में क्या अधनींद में ही थे और उनके साथ उनकी श्रीमती कमला रत्तू भी। हाँ, बीच-बीच में दल का नेतृत्व कर रहे डॉ॰ महेन्द्र कर्णावट जी के स्वर भी सुनाई पड़ रहे थे और नहीं चाहकर भी लोगों के बीच फूलझरियाँ बिखेर रहे थे। नहीं चाहकर मैंने इसलिए कहा कि उनकी धर्मपत्नी भी उनके बगल में सिमटी बैठीं थीं। पहाड़ियों के झुरमुट की छाँव और शीतल पवन का आनंद लेते रहे हमलोग और बटोरते रहे वे तमाम दुआएँ जो हमसब एक दूसरे के लिए लिए जा रहे थे। सच कहा जाए तो ऐसा सुयोग कभी-कभार ही मिल पाता है जब चालीस-इकतालीस की संख्या में एक मन के अहिंसक प्रवृत्ति के लोग एक साथ एक बस में सारी रात पहाड़ियों की सर्पिली राह से गुजर रहे हों और कभी-कभी जहाँ-तहाँ छोटे कस्बे में रूककर चाय-कॉफी की चुस्कियों के साथ धीर-गंभीर मंथन कर रहे हों तथा अपने-अपने अनुभवों की एक-एक परतें खुलती जा रही थीं - कभी प्रौढ़ बरगद की धीर गंभीर, मुद्रा, कभी नन्हीं कोपल सी मृदुता, कभी बेलास हँसी के फब्बारे, ऐसे ही चलते-चलते कब काठमांडे आ गए, पता ही नहीं चला।

जैसे हमलोगों की बस काठमांडू

के कमल पोखरी स्थित श्रीमहावीर जैन निकेतन जिसे जैन भवन, के नाम से जाना जाता है, के सामने रूकी व्यवस्थापक महोदय ने सबसे सामान संभालने को कहा और फिर सबने अपने समान नीचे उतारे। निकेतन के प्रांगण में सामान रखते ही नेपाल अणुव्रत समिति के सदस्यों ने गर्म जोशी से स्वागत किया और महज चंद मिनटों में तरह-तरह के पकौड़े के साथ गरम-गरम चाय भी परोसे। साथ ही कैरोसन तेल के दो-दो अधकटे कनस्टर में लकड़ियों का अलाव भी तैयार था लोगों में गर्मी प्रदान करने के लिए। थोड़ी ही देर बाद डबल सीटवाले एक-एक कमरे का आवंटन हो गया इक्तालीस लोगों के लिए कोई बीस कमरे। मुझे कमरा नं॰ 23 मिला। इतने में ही देखा कि भीतर के बरामदे में बहन सुधा अरोड़ा एक कुर्सी पर बैठ चादर ताने चेहरे को ढँककर सो गईं, शायद उनकी तबियत कुछ खराब चल रही थी वे डायरिया की शिकार भी हो चुकी थीं। मैंने भाई हेमंत जी से अनुरोध कर उन्हें आवंटित कमरा नं॰ 15 खाली करवाया और सुधा जी को बड़े आदर के साथ वहाँ ले गए। यह जानकारी मिलते ही डॉ॰ महेन्द्र कर्णावट, जो स्वयं एक सधे चिकित्सक हैं आ धमके और उनके लिए कुछ दवाएँ मँगाकर दिए। सुधा जी को थोड़ा आराम मिला और थोड़ी ही देर में वह सो गईं, तब लोगों को जान में जान आई। वैसे भी रूठे को मनाने में अहिंसक प्रवृत्ति के अणुव्रती माहिर होते हैं जिनके अनुभव का लाभ उस आपातकाल में तुरंत मिला।

दूसरे दिन यानी 25 दिसंबर 2007 के क्रिसमस के पावन दिन से जो सभा-संगाष्ठियों का दौर चला वह 27 दिसंबर तक लगातार चलता रहा। इसी अवधि में काठमांडू के बाजारों तथा माल में जिनको जो खरीदना था खरीदा। 26 दिसंबर 2007 को नेपाल अणुव्रत समिति की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में काठमांडू के राष्ट्रीय सभागृह में एक समारोह आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन किया नेपाल के गृहमंत्री ने, कारण कि उस दिन नेपाल के प्रधानमंत्री अस्वस्थ थे। समारोह में भारतीय प्रतिनिधि मंडल के प्रायः सभी सदस्यों का स्वागत किया नेपाल अणुव्रत समिति के अध्यक्ष श्री हुलास चंद गोलछा ने वहाँ के प्रसिद्ध रूद्राक्ष माला से। समारोह को भारतीय प्रतिनिधि मंडल के अध्यक्ष डॉ॰ महेन्द्र कर्णावट के साथ-साथ नेपाल के श्रममंत्री ने भी संबोधित किया। इस अवसर पर डॉ॰ के॰के॰ रतू की सद्यः प्रकाशित पुस्तक का लोकार्पण गृहमंत्री के द्वारा किया गया। दूसरे दिन अहले सुबह भारतीय प्रतिनिधि मंडल का एक सात सदस्यीय दल अस्वस्थ प्रधानमंत्री श्री गिरिजा प्रसाद कोइराला से उनके निवास पर मिला और उनके शीघ्र ही स्वस्थ होने की कामना के साथ-साथ भारत नेपाल मैत्री को अधिक-से-अधिक सुदृढ़ बनाने का आश्वासन दिया। श्री हुलास चंद गोलछा जी के सौजन्य से प्रतिनिधि मंडल के सभी सदस्यों को पहाड़ पर स्थित उनके निवास पर जलपान के लिए आमंत्रित किया गया। कहना नहीं होगा कि जलपान और चाय की अवधि में हुलास चंद स्वयं अपने दो सुपुत्रों एवं परिवार के अन्य सदस्यों के साथ नेपाली संस्कृति के अनुरूप मेजबानी में मौजूद रहे और नाश्ते में फल-रस के पेय के बाद भारतीय व्यंजन के सिंघाड़े तो थे ही दक्षिण भारत के मशहूर इडली-बड़े के सांभर-चटनी भी। सच मानिए हुलास चंद गोलछा जी के आत्मीयता से भरे अपनापन ने हम सभी प्रतिनिधियों को भाव-विभोर कर दिया जिसके लिए तहेदिल से हम लोगों ने उनके और उनके परिवार के सभी सदस्यों के प्रति आभार व्यक्ति किया।

अखिल भारतीय अणुव्रत महासमिति की राष्ट्रीय कार्यकारिणी की बैठक तकरीबन दो घंटे तक जैन निकेतन के सभागार में चली जिसमें मुख्य रूप से वार्षिक योजना पर विचार-विमर्श हुआ।

इस यात्रा की सार्थकता अधूरी रहेगी तब तक जब तक कि काठमांडू से सैकड़ों फीट की ऊँचाई वाले पहाड़ पर जाकर सूर्योदय के दृश्य को पाठकों के सामने प्रस्तुत न किए जाएँ। 26 दिसंबर 2007 की रात जब हम लोग खाना खाकर अलाव की आग के चारों ओर बैठे गर्मी का आनंद उठा रहे थे, व्यवस्थापक सहित बस के चालक व कंडक्टर द्वारा घोषणा की गई कि जिन यात्रियों को कल सुबह का सूर्योदय देखना है उन्हें रात 3 बजे तक बस में आकर अपना स्थान ग्रहण कर लेना होगा। बस क्या था, इतना सुनते ही सभी अपने-अपने कमरे की ओर दौड़ पड़े इसलिए कि जल्दी सोने के बाद ही सबेरे उठ पाएँगें। हम दोनों पति-पत्नी ने भी वैसा ही किया और सबेरे शौचादि क्रिया से निवृत्त हो बस के पास वाले बरामदे में आकर बैठ गए। बस चालक के आने पर हम सभी ने बस में बैठ उस पहाड़ पर जाने के लिए प्रस्थान किया जहाँ सूर्योदय का मनोरम दृश्य देखना था। लगभग डेढ़ घंटे पहाड़ पर बस द्वारा चलने के बाद 5 बजे सुबह गंतव्य स्थान पर पहुँच गए, पर सर्योदय होने में अभी डेढ़-दो घंटे की देरी थी, सो बस में ही ठंढ के मारे सिमटे हमलोग सूर्योदय का इंतजार करते रहे। आखिर वह घड़ी आ ही गई और सूर्य की किरणें धीरे-धीरे लालिमा लिए पूरब की पहाड़ियों से छिटकने लगीं। वह दृश्य इतना मनोहारी था कि कैमरेवालों ने फटाफट उस दृश्य को अपने-अपने कैमरे में बंद करना प्रारंभ कर दिया तथा लोग अपनी-अपनी तस्वीर खिंचाने के लिए भी बेताव हो उठे। इधर हमारे डॉ॰ कर्णावट और मगन भाई ने विभिन्न भंगिमाओं में अपनी-अपनी तस्वीरें जिस प्रकार कैमरे में कैद करवाईं उसका मजा तो पाठकों को 'अणुव्रत' तथा 'विचार दृष्टि' पत्रिकाओं के अवलोकन के बाद ही मिल पाएगा। हाँ, तो मैं सूर्योदय के मनोहारी दृश्य की चर्चा कर रहा था। एक ओर जहाँ पूरब सूर्य की किरणें निकल रही थीं, तो दूसरी ओर हिमालय की चोटियों पर बिखरे बर्फ पर किरणों के पड़ने से जो दृश्य देखने को मिल रहा था उसे शब्दों में वर्णन करना आसान नहीं। वर्णातीत दृश्य को केवल महसूस किया जा सकता है। दूसरी तरफ नेपाल के पहाड़ तथा हिमालय पहाड़ के बीच जो घाटियाँ हैं उनमें बादल ऐसे अठखेलियाँ करते दिखाई दिए मानो हमारे बीच आकर हमलोगों पर बरस पड़ना चाहते हों, किंतु वह इतना निर्दयी भी नहीं कि सर्दी के मौसम में अपनी बूँदों से हमें और परेशान करे। हमलोग लगभग डेढ़-दो घंटे तक सूर्योदय की इंद्रधनुषी छटा का आनंद उठाते रहे और आपस में अपने-अपने उल्लास बाँटते रहे। हमारी श्रीमती जी भी आत्मविभोर हो अपने को रोक न सकीं और खुलकर उस मनोरम दृश्य को लोगों के बीच बाँटने से अपने को रोक न सकीं। प्रकृति जो न करा दे इस धरा के मनुष्य को, प्रकृति में वह गुण है कि वह कठोर-से-कठोर और नीरस-से नीरस आदमी को अपने सौंदर्य और प्राकृतिक छटा से सरस बना देती है और अपने आगोश में ले लेती है। और फिर

जिस प्रकृति के आँगन में नारियों के स्वर गूँजते हों उसका तो कहना ही क्या! आखिर पहाड़ियों की हरीतिमा के बीच उगते सूरज की किरणें जब धीरे-धीरे संपूर्ण पहाड़ों पर बिखेरने लगीं और हिमालय के बर्फ को उजला से लाल करने लगी, तो नारियों के गीत पर भावुकता, संवेदनशीलता, रागात्मकता और हार्दिकता आना स्वाभाविक है। जहाँ अनुभूति गहन हो और चेतना में संवेदनशीलता गहरा गई हो, तो वहाँ प्रकृति से प्राप्त अनुभूति का सूक्ष्म स्पर्श सहृदय के हृदय को चिंतन और रसमयता में कुछ क्षणों के लिए चमत्कृत कर देता है। पहाड़ों पर प्रातः बेला में साधना, चिंतन, मनन, अनुभूति की आंतरिक गहराई और जीवन को कुछ नए तौर से देखने की ललक प्रायः हम सभी यात्रियों में दिख गई। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि भावना का प्रभाव हमारी ऐंद्रिक चेतना पर पड़ती है, जो हमारी नसों में रस उत्पन्न करता है। महिलाओं के कंठ से निकले संगीत ने हमें भावनात्मक भोजन देकर हमारी आंतरिक शक्ति को स्फूर्ति प्रदान किया और इसी स्फूर्ति के साथ हम सब उसी बस से नीच उतर आए और निकेतन पहुँच कर पुनः अगले कार्यक्रम में सम्मिलित होने की तैयारी में लग गए।

पहाड़ों की अथाह खूबसूरती का दूसरा नाम है नेपाल। नेपाल का भारत से खासा अपनापन है। एक तो भारत के बेहद नजदीक है। दूसरे यहाँ के तराईवाले इलाकों में ज्यादातर भारतीय सदियों से गए हुए हैं। कहा जाता है कि इसकी आबादी के प्रभाव से भारत के लोग न केवल प्रभावित हैं, बल्कि सीमा क्षेत्र के लोगों का शादी-विवाह, नाते-रिश्ते भी काफी वर्षों से प्रगाढ़ हैं। इतिहास जो भी हो गर्मी के दिनों में यह सुकून भरी छुटियों के लिए दुनिया की खूबसूरत जगहों में से एक है। मौसम और माहौल दोनों ही लिहाज से यह बेहद शानदार जगह है। इस धरती पर प्रकृति के जो अलग-अलग रूप देखने को मिलते हैं, उनमें से पहाड़ों और उसकी बर्फ से ढँके चोटियों का जो नजारा यहाँ मिलता है, वह सचमुच अद्भुत है। इसकी राजधानी काठमांडू के चारों ओर नजर घुमाने पर चूँकि पहाड़ ही पहाड़ दिखते हैं, इसलिए यहाँ कि सारी गतिविधियाँ इसी से जुड़ी हैं। या तो आप इनका लुफ्त उठाएँ या फिर आराम से अपने कॉटेज में पसरे रहे। पहाड़ों के शीर्ष पर जाकर सूर्योदय की कल्पना भी हैरत अँगेज होती है। जो दृश्य वहाँ देखने को मिलते हैं आम इंसान की कल्पना की पहुँच से उतनी ही दूर होते हैं जैसे कि आसमान के तारे, लेकिन उसकी अनोखी और अनूठी खूबसूरती का ख्याल ही अचंभित कर देता है। भले ही यह ख्याल उन्हें कल्पना लोक में पहुँचा दे।

प्रारंभ में नेपाल अणुव्रत समिति की ओर से भारतीय प्रतिनिधि मंडल के सभी सदस्यों का जैन निकेतन के सभागार में अभिनंदन किया गया तथा नेपाल काष्ठ से बने खूबसूरत शिल्प में अणुव्रत लोगो से स्वागत किया गया। 27 दिसंबर 2007 की संध्या चार बजे फिर उसी बस से नेपाल अणुव्रत समिति के सभी सदस्यों ने भाव-भरी विदाई दी जिसकी यादें आज भी सभी सदस्य संजोए हैं। लौटती बस से खिड़की के पार तमाम हरे-भरे पेड़, बिजली की बत्तियाँ तथा छोटी-छोटी बस्तियाँ बस के साथ मानो तेजी से दौड़ लगा रहे थे। न जाने सभी को कहाँ पहुँचने की जल्दी थी। खिड़की से नजरें हटीं तो फिर हम अपनी दुनिया में लौट आए जिसमें थे डॉ॰ रतू जी, राजेन्द्र सक्सेनाजी, मिर्जा साहब, डॉ॰ कर्णावट जी, मगर भाई जैन, बाबूलाल गोलछा, डॉ॰ आलम अली। फिर चली महिला यात्रियों के कंठ से वही स्वर लहरी जो काफी देर तक चलती रही। हम कुछ लोग मौन काल-साधकों और कला-प्रेमियों के प्रति सम्मान का भाव-धर्म निभाते रहे। लगभग चार पाँच घंटे बीत जाने के बाद बस रूकी किसी कस्बे के एक होटल के सामने और नेपाल अणुव्रत समिति के सौजन्य से प्राप्त रात का आहार हमलोगों ने ग्रहण किया। फिर चाय की चुस्कियाँ लेकर सवार हो गए उसी बस पर और सीट पर बैठते ही बस वीरगंज के लिए रवाना हो गई।

28 दिसंबर 2007 को अहले सुबह वीरगंज के आदर्श नगर स्थित महावीर जैन सेवा सदन के सामने आकर बस रूकी जहाँ वीरगंज अणुव्रत समिति के सदस्यों ने स्वागत किया। मुँह-हाथ धोने तथा स्नानादि से निवृत्त होने के बाद हमलोगों को गरम-गरम छोले-भटूरे का जलपान कराया गया और फिर वीरगंज में निर्माण हो रहे तेरापंथी भवन पर एक नजर डालते हुए दिल्ली जाने वालों को रक्सौल स्टेशन पर नरकटियागंज में वही सप्तक्रांति एक्सप्रेस पकड़ने कि लिए विदाई दी गई। मैं अपनी धर्मपत्नी बच्ची प्रसाद हेमंत तथा बिटिया श्वेता हावड़ा एक्सप्रेस से मुजफ्फरपुर पधारे और वहाँ से राजकीय बस पकड़कर रात करीब 9.30 बजे पटना पहुँचे। हावड़ा एक्सप्रेस में हमलोगों ने साथ दिया अणुव्रत महासमिति के महामंत्री श्री मगन भाई जैन को, जिन्हें आसनसोल में राउरकेला के लिए दूसरी गाड़ी पकड़नी थी। इस प्रकार काठमांडू की सुखद यात्रा समाप्त हुई जिसे शब्दबद्ध कर अणुव्रतियों सहित 'विचार दृष्टि' के सभी पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करना हमने लाजिमी समझा।

भारत-नेपाल संस्कृतियों के आदान-प्रदान की इस रोमांचक यात्रा के संदर्भ में मैं कहना चाहूँगा कि मौजूदा दौर में जब वैज्ञानिक आविष्कारों ने मनुष्य को चमत्कृत कर दिया है, आविष्कारों ने मनुष्य को भयभीत, अनास्थावादी, असुरक्षित, आसक्तिमय और सुविधाजीवी बना दिया है, शारीरिक एवं मानसिक श्रम उपेक्षित हो गए हैं जिसके परिणामस्वरूप सारा समाज रोग ग्रस्त हो गया है, और उसके लोग तामसी प्रवृत्तियों के शिकार हो मांस, मदिरा आदि पंच मकारों के जाल में फँसकर अपने अस्तित्व को भूलते जा रहे हैं तथा जिंदगी इस तरह बेखबर हो गई है कि मौत इसके लिए रोज का खेल हो गया है, आदमी-आदमी में फासले बढ़ते जा रहे हैं, वह अपनी संस्कृति, खान-पान, रहन-सहन, बोलचाल, स्वाभिमान आदि स्वराष्ट्रीय सद्गुणों की अनदेखी कर रहा है और देश विकृत मानसिकता में यातना-यात्रा कर रहा है, ऐसे वक्त भारत-नेपाल-संस्कृतियों की यह रोमांचक यात्रा उपरोक्त अनैतिकता से मुक्ति पाने का मार्ग है जिससे समाज के लोगों की चित्तवृत्ति न केवल उन्नत होती है, बल्कि वे सच्चे अर्थों में निःस्वार्थ होकर मानसिक परिवर्तन के लिए त्याग द्वारा संघर्ष करने को उत्प्रेरित होते हैं। इस दृष्टिकोण से हम अणुव्रतियों एवं अहिंसक प्रवृत्ति के लोगों के लिए यह रोमांचक यात्रा सही मायने में सर्वथा सार्थक समझी जाएगी।

संयोजक :
अहिंसा समवाय
अणुव्रत महासमिति, अणुव्रत भवन
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली : 110002

DENSA
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.

Fact. Add. :Plot No. 10, Dewan & Sons Udyog Nagar,
Taluka Palghar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Phone No.: (952525) 55285, 54471, Fax: 55286

&

DANBAXY
PHARMACEUTICALS PVT. LTD.
(SOFT GELATIN)

Fact. Add: Plot No. K-38, MIDC Tarapur,

Dahisar, Dist. Thane, MAHARASHTRA

Office Address:

1, Anurag Mansion, Ashokvan,
Shiv Vallabh Raod, Dahisar (E),
Mumbai-400068
Phone No.: 28974777, Fax: 28972458
MR. DEVENDRA KUMAR SINGH, C.M.D

जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ

सचर कमिटि की रिपोर्ट के खुलासों के आलोक में मुसलमान महिलाओं की अशिक्षा और सामाजिक पिछड़ेपन की चर्चा के इस अवसर पर केरल में ऐसी एक मुसलमान महिला का शताभिषेक मनाया गया जो अपनी प्रखर बुद्धि, उच्च शिक्षा और स्थिर उत्साह के सहारे राजनीति तथा समाज सेवा में काफी ऊँचाई को छू सकी है। अधिवक्ता हाजी ए. नफीसत बीवी को शताभिषेक विगत 20 दिसंबर 2006 को केरल हिंदी प्रचार सभा, तिरुवंतपुरम के परिसर में अनेक समाज सेवकों एवं शीर्षस्थ राजनेताओं की उपस्थिति में मनाया गया। वे न केवल केरल विधान सभा की सदस्य एवं उपाध्यक्ष रहीं, बल्कि ए. आई. सी. सी. राज्य वनिता आयोग की भी सदस्य रहीं। इसके अतिरिक्त केरल के कई अन्यान्य समाज सेवी तथा शैक्षिक संगठनों से जुड़ी रहीं और कई पुरस्कारों से अलंकृत हुईं। संप्रति नफीसत बीवी केरल अनौपचारिक शिक्षा एवं विकास समिति के अध्यक्ष मंडल की सदस्य हैं।

शताभिषेक के सिलसिले में आयोजित समारोह को संबोधित करते हुए पूर्व सांसद एवं केरल प्रदेश काँग्रेस कमिटी के अध्यक्ष रमेश चेन्नित्तला ने बताया कि श्रीमती नफीसत ने समाज की प्रगति में, विशेषकर महिलाओं के उन्ननयन में बहुमूल्य योगदान दिया है। उन्होंने उनकी निर्भीकता, आदर्श और निष्ठा की प्रशंसा की।

समारोह का उद्घाटन करते हुए मलयालम के प्रख्यात फिल्मी अभिनेता भरत गोपी ने उन दिनों की याद दिलाई जब करीब पाँच दशक पूर्व श्रीमती बीवी ने केरल विधानसभा की उपाध्यक्ष और अध्यक्ष का पद बड़ी कुशलता के साथ संभाली थी। इस अवसर पर पूर्व सांसद एवं केरल प्रदेश काँगेस समिति के उपाध्यक्ष तले कुन्निल बशीर ने कहा कि कई दशक तक समाज सेवा में उल्लेखनीय योगदान के बावजूद श्रीमती नफीसत को उनकी योग्यता के अनुरूप अपेक्षित पद प्राप्त नहीं हो सका, पर ऐसी आशा की जाती है कि उच्चतर पदों पर वे आसीन हो सकेंगी। प्रमुख प्रौढ़ शिक्षाविद् एवं केरल अनौपचारिक शिक्षा एवं विकास समिति के महासचिव अ॰ के॰ शिवदासन पिल्लै ने अनौपचारिक शिक्षा के प्रचार-प्रसार में उनकी देन पर प्रकाश डाला। मलयालम साहित्यकार एवं केरल मद्यनिषेध समिति के अध्यक्ष डॉ॰ के॰ के॰ राहुलन ने समारोह को संबोधित करते हुए कहा कि महात्मा गाँधी के आह्वान से अपने को जोड़ा था और उसके बाद ही राजनीति को उन्होंने अपना कार्यक्षेत्र चुना तथा तब से वे कभी भी गाँधीवादी आदर्शों के पथ से विचलित नहीं हुईं।

केरल हिंदी प्रचार सभा के मंत्री प्रो॰ के॰ केशवन नायर ने श्रीमती नफीसत के व्यक्तित्व की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि नई पीढ़ी की महिलाओं के लिए उनकी जीवन शैली और कार्यशैली प्रेरणाप्रद एवं अनुकरणीय हैं। पूर्व विधायक श्रीमती मालेत्तु सरला देवी ने उनके मातृतुल्य एवं वात्सल्यपूर्ण व्यवहार की प्रशंसा की।

केरल विश्व विद्यालय के कुलपति डॉ॰ एम॰ के॰ रामचन्द्रन नायर ने इस बात पर जोर दिया कि पुरानी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करने वाली श्रीमती नफीसत जैसी हस्तियों ने कठिनाईयों का धैर्यपूर्वक सामना करते हुए समाज को आगे बढ़ाने में जो महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है उसका विधिवत अध्ययन तथा अभिलेखन किया जाना है ताकि आने वाली पीढ़ियाँ उससे ऊर्जा पा सकें। मित्र निकेतन के संस्थापक अध्यक्ष के॰ विश्वनाथन ने कहा कि श्रीमती नफीसत ने पूरे केरलीय समाज का दिल अपने त्यागपूर्ण एवं स्नेहपूर्ण व्यवहार से जीत लिया है। श्रीमती नफीसत ने अपने उद्गार में आयोजक के प्रति आभार व्यक्त करते हुए भाव-विह्वल हो गईं। समारोह के संयोजक परशुवक्फल सुकुमारन ने कृतज्ञता प्रकट की। विभिन्न क्षेत्रों में श्रीमती नफीसत के उल्लेखनीय योगदान के मद्देनजर यह कहावत उन्हीं पर चरितार्थ होती है-

जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ, गहरे पानी पैठ,
मैं बौरी डूबन डरी, रही किनारे बैठ।

प्रस्तुति : के॰ जी॰ बालकृष्ण पिल्लै,
तिरूवनंतपुरम से
प्रतिनिधि, 'विचार दृष्टि'
गीत भवन,पेरूर कटा,
पो॰-तिरुवनंतपुरम-695005 (केरल)

दिल्ली के विकास मार्ग पर 2009 से मेट्रो ट्रेन का सफ़र

– विचार कार्यालय, दिल्ली

पूर्वी दिल्ली के विकास मार्ग पर वर्ष 2009 से लोग मेट्रो ट्रेन से सफर का लुत्फ उठा सकेंगे। यमुना डिपो से आनंद विहार बस अड्डे तक की कुल 6.10 किलो मीटर की दूरी में मेट्रो रेल कॉरपोरेशन ने सभी मेट्रो स्टेशन के निर्माण की जगह निर्धारित कर दी है। यमुना डिपो के बाद पहला स्टेशन लक्ष्मीनगर का होगा, जो लक्ष्मी नगर लालबत्ती के तिराहे व जहाँ से दक्षिण की

ओर मदर डेयरी के लिए सड़क जाती है पर बनाया जाएगा। दूसरा, स्टेशन स्कोप टावर के नाम से होगा, जो पूर्वा सांस्कृतिक केंद्र और वी.थ्री.एस. मॉल के बीच में बनाया जाएगा। तीसरा स्टेशन प्रीत विहार का होगा, जो तनेजा अस्पताल के पास होगा।

यमुना डिपा से आनंद विहार बस अड्डे तक जाने वाली मेट्रो की लाइन का निर्माण 'तेजी से दिन रात चल रहा है' इन पाँचों स्टेशनों के बीच मेट्रो ट्रेन 200 खंभों से होकर गुजरेगी। मेट्रो के निर्माण कार्य में सड़क की चौड़ाई बढ़ाने की वजह से वर्तमान 14 बस स्टॉपेज को भी स्थानांतरित किया गया है। इस मेट्रो लाइन पर तकरीबन 141 करोड़ रुपए खर्च होंगे। मेट्रो की ओर से यातायात की व्यवस्था को संभालने के लिए 20 मार्शल लगाए गए हैं। कहा जाता है कि जुलाई 2007 तक पिलर के सभी कार्य पूरे कर लिए जाएंगे और वर्ष 2009 से इस लाइन पर मेट्रो का परिचालन शुरू कर दिया जाएगा।

– उदय कुमार 'राज़', दिल्ली

क्षितिज-सा विस्तार लिए नचिकेता के गीत

नचिकेता हिंदी साहित्य के एक ऐसे गीतकार हैं, जो हर पल गीत सोचते हैं एवं जीते रहते हैं। इनके गीतों में आम आदमी के जीवन की धड़कन साफ सुनाई देती है। नचिकेता के नाम बिना 'जनगीत' की चर्चा हो ही नहीं सकती। ये उद्गार हैं ख्यातिलब्ध आलोचक एवं चिंतक प्रो० राम बुझावन सिंह के जिन्हें वे अ० भा० हिंदी-प्रसार प्रतिष्ठान के तत्त्वावधान में विगत 4 फरवरी, 2007 को पटना के शेफाली अपार्टमेंट स्थित साहित्यकार नागेन्द्र प्रसाद सिंह के निवास प्रांगण में योद्ध गीतकार नचिकेता की षष्टिपूर्ति के अवसर पर प्रकाशित 'पुन:' के विशेषांक पर आयोजित विचार-गोष्ठी की अध्यक्षता करते हुए व्यक्त किए। संचालन के क्रम में चर्चित कथाकार के क्रम में प्रत्येक बार एक नया अर्थ संप्रेषित होता है, यही उनके गीतों की विशेषता है। इस अवसर पर पुष्पा जमुआर ने अपने आलेख-पाठ में बताया कि उनके गीतों की सुंदरता से सांप्रदायिकता की पीड़ा अभिव्यक्त हुई है।

कवयित्री यशोधरा राठौर ने कहा कि नचिकेता ने गीत के विषय में जितना चिंतन किया था, जितने गीत लिखे, उतनी समृद्धि अन्यत्र दिखाई नहीं देती। गीतकार विशुद्धानंद ने कहा कि समयानुकूल भिन्न-भिन्न शिल्प में न केवल नचिकेता ने मात्र गीत लिखे, अपितु सार्थक प्रयोग भी किए हैं। पुन: के संपादक कृष्णानंद कृष्ण ने कहा कि नचिकेता के गीतों की अनुभूति की संरचनाओं में आने वाले बदलावों को ही नहीं महसूस

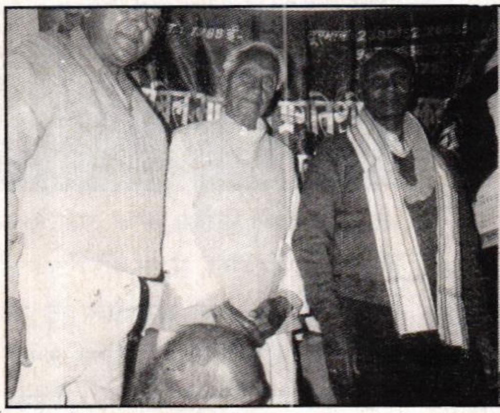

एव आलोचक डॉ० सतीश राज पुष्करणा ने पुन: के इस अंक पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि नचिकेता के गीतों को पढ़ना वस्तुत: अपने समय के सच को समझना है और सर्वहारा के जीवन को गहराई से जानना-पहचानना है।

कविवर राजकुमार प्रेमी की वाणी-वंदना से प्रारंभ इस संगोष्ठी का आधार वक्तव्य रखते हुए सुप्रसिद्ध आलोचक वंशीधर सिंह ने नचिकेता के गीत-संसार में विचरने से पूर्व उनके व्यक्तित्व एवं विचारों से अवगत होना अनिवार्य बताया। वे जनवाद के पक्षधर होते हुए भी किसी दल विशेष का घोषणा-पत्र नहीं लिखते। वे साहित्य को साहित्य की तरह ही लेते हैं। कथाकार एवं रंगकर्म से जुड़े नरेन के अनुसार नचिकेता के गीत हमें जीवन का सही बोध कराते हैं। आलोचक ब्रजेश पाण्डेय के अनुसार नचिकेता के गीत मात्र एक अर्थ लेकर नहीं चलते, बल्कि पढ़ने किया जाता, बल्कि पूरी गीत विधा अपूर्व प्रभविष्णु क्षमता और अभिव्यक्ति का भी जायजा लिया जा सकता है।

इस अवसर पर मौजूद 'विचार दृष्टि' के यशस्वी संपादक सिद्धेश्वर ने नचिकेता के गीतों पर विचार व्यक्त करते हुए कहा कि नचिकेता के गीत मन बहलाने का साधन नहीं है, बल्कि उनके गीत एक निश्चित दिशा की ओर विचार हेतु उकसाते हैं और कमजोर वर्ग के पक्ष में पूरी ताकत के साथ खड़े होते हैं। इनके अतिरिक्त बाबूलाल मधुकर, हृदयेश्वर, मृत्युंजय मिश्र करुणेश, नरेन्द्र प्रसाद नवीन, घमंडी राम, जे० पी० मिश्र, जिज्ञासु, वीरेन्द्र कुमार भारद्वाज आदि ने भी नचिकेता के गीतों पर अपने विचार प्रस्तुत किए। अंत में नचिकेता ने कहा कि उन्होंने अपने गीतों में अपेक्षाकृत अंतर्वस्तु पर अधिक ध्यान दिया है। साहित्यकारों के प्रति आभार व्यक्त किया नागेन्द्र प्रसाद सिंह ने।

– प्रतिभा राज, पटना से

प्रेरक प्रसंग

अनाथालय के एक बच्चे को गोद लिया जोली ने

हॉलीबुड की अभिनेत्री ऐंजलीना जोली ने पिछले दिनों वियतनाम के अनाथालय

से तीन साल के एक बच्चे को गोद लिया। आस्कर विजेता जोली और उनके पति ब्रैड पिट के पहले से तीन बच्चे हैं उनमें से दो जोली ने पहले गोद लिए थे, जबकि तीसरा जोली और पिट की संतान है।

फाम क्वांग सांग नामक इस बच्चे को गोद लेने के लिए एक छोटा समारोह आयोजित किया गया था जो काफी गमगीन और भावनात्मक था। जोली और मडोक्स ने बच्चे को हर तरह से खुश करने की कोशिश की, अनाथालय के 20 बच्चे और माताओं ने जोली और गोद लिए बच्चे को विदाई दी। बच्चों ने उन्हें फूल भेंट किए।

काश! भारत की अभिनेत्रियाँ भी जोली के इस कारनामें का अनुसरण कर पातीं!

साहित्यकार के बिना समाज का अस्तित्व नहीं

–नीतीश कुमार

'सिद्धेश्वर : व्यक्तित्व और विचार' तथा 'समकालीन यथार्थबोध' का लोकार्पण

–विचार कार्यालय, पटना

साहित्यकार के बिना समाज का स्वरूप अस्तित्व में नहीं रह सकता। समाज में उनका विशिष्ट स्थान है। साहित्यकार ज्ञान के स्रोत होते हैं और ज्ञान समाज की सबसे बड़ी ताकत है, क्योंकि साहित्यकार और लेखक ही इस ताकत को सिंचित करते हैं। ये उद्‌गार हैं बिहार के मुख्य मंत्री नीतीश कुमार के जिसे विगत 5 जनवरी को संध्या 5.30 बजे बिहार विधान परिषद् के सभागार में आयोजित 'सिद्धेश्वर : व्यक्तित्व और विचार' तथा 'समकालीन यथार्थबोध' पुस्तकों के लोकार्पण समारोह में उन्होंने व्यक्त किए। राष्ट्रीय विचार मंच, बिहार की सहभागिता से बिहार विधान परिषद् के तत्त्वावधान में आयोजित इस समारोह की अध्यक्षता परिषद् के माननीय सभापति प्रो॰ अरुण कुमार ने की। 'विचार दृष्टि' के संपादक सिद्धेश्वर के जीवन पर आधारित प्रो॰ राम बुझावन सिंह जी की दिल्ली के सरदार पटेल साहित्य प्रकाशन द्वारा सद्यः प्रकाशित पुस्तक 'सिद्धेश्वर : व्यक्त्वि और विचार' तथा सिद्धेश्वर की अद्यतन कृति 'समकालीन यथार्थबोध' का लोकार्पण करते हुए नीतीश कुमार ने कहा कि इन दोनों पुस्तकों के लेखक प्रो॰ राम बुझावन बाबू तथा सिद्धेश्वर जी का व्यक्तित्व बड़ा ही व्यापक है जिन्होंने कई पुस्तकों की रचना कर हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। दोनों लेखकों के साथ लंबे अरसे के अपने संबंधों की चर्चा करते हुए कहा कि केंद्रीय सेवा में रहते हुए भी सिद्धेश्वर जी ने साहित्य की अनावरत सेवा की है और स्वैच्छिक सेवा-निवृति के पश्चात भी निरंतर समाज, साहित्य एवं पत्रकारिता से जुड़कर अपनी सक्रियता इन्होंने कायम रखी है। इसी का प्रतिफल है कि समाज के हर क्षेत्र के स्वस्थचित्त के लोग सभागार में इतनी बड़ी संख्या में उपस्थित हैं।

कार्यक्रम में जहाँ डॉ॰ शिव वंश पाण्डेय, नचिकेता, नृपेन्द्र नाथ गुप्त, डॉ॰ मेहता नगेन्द्र सिंह, डॉ॰ साधु करण, कर्नल एस॰ एस॰ राय, डॉ॰ मिथिलेश कुमारी मिश्र, डॉ॰ रामशोभित प्रसाद सिंह, ज्योति शंकर चौबे, डॉ॰ असलम आजाद, डॉ॰ रामवचन राय, राजभवन सिंह, युगल किशोर प्रसाद, मनु सिंह, सी॰ डी॰ सिंह, कमला प्रसाद, बलभद्र कल्याण, डॉ॰ जितेन्द्र सहाय, दयानंद सिंह, मनोज कुमार, जय प्रकाश मल्ल, डॉ॰ विमला चौधरी जैसे सुपरिचित रचनाकार- साहित्यकार अपनी उपस्थिति से समारोह को गरिमा प्रदान कर रहे थे, वहीं अवधेश प्रसाद सिंह, सुभाष चंद्र सिंह, सुभाष प्रसाद सिंह, लाल दास पासवान, अखिलेश पाठक, सीताराम प्रसाद, हीरा लाल पाण्डेय, रामधारी शर्मा, डॉ॰ विश्वेन्द्र कुमार सिन्हा, प्रो॰ पारस सिंह, डॉ॰ महेश प्रसाद, अजीत कुमार सिन्हा, राम प्रताप सिंह, राधेश्याम प्रसाद, रघुपति, सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह, नंद किशोर प्रसाद, श्रीमति अंजलि, लखन सिंह, राजेन्द्र प्रसाद, चंद्रमौली प्रसाद सिंह, मधेश्वर सिंह जैसे अधिवक्ता, चिकित्सक, प्राध्यापक, अधिकारी तथा सजग नागरिकों की उपस्थिति से समारोह गौरवान्वित हो रहा था। कहना नहीं होगा कि नगर में ऐसा अनुशासित समयबद्ध तथा गुणवत्ता लिये पुस्तक लोकार्पण समारोह विरल ही हो पाता है जहाँ समाज के हर क्षेत्र के सुलझे लोग सैकड़ों की संख्या में उपस्थित होकर लेखकों को उनकी सृजनशीलता के लिए अपनी शुभकामनाएँ देते हों।

लगभग चार सौ से अधिक नगर के सुधीजनों के अतिरिक्त कोई एक दर्जन से अधिक विभिन्न राजनीतिक दलों के विधायकों एवं कार्यकर्ताओं से खचाखच भरे सभागार में समारोह के अध्यक्ष प्रो॰ अरुण ने इसे निर्मल कार्यक्रम जताते हुए स्वाध्याय की महत्ता पर प्रकाश डाला तथा इस बात पर चिंता जाहिर की कि बिहार विधान मंडल तथा संसद के पुस्तकालय समृद्ध होते हुए भी पाठकों के लिए बाट जोह रहे हैं, उनके सामने पाठकों का संकट है। यह इस बात का द्योतक है कि स्वाध्याय की प्रवृत्ति विधायकों एवं सांसदों में लगातार कम होती जा रही है जो चिंताजनक है। फिर भी वे ज्ञानवान होने का दंभ भरते हैं। प्रो॰ कुमार ने प्रो॰ राम बुझावन सिंह के योगदान की सराहना करते हुए पुस्तक के नायक तथा लेखक सिद्धेश्वर को अपनी शुभकामना देते हुए उनसे बराबर ऐसे स्वच्छ एवं अच्छे साहित्यिक कार्यक्रम परिषद् में आयोजित करने की बात कही।

इस अवसर पर लोकार्पित पुस्तकों

की चर्चा करते हुए वरिष्ठ कवि एवं साहित्यकार सत्यनारायण ने सिद्धेश्वर की साहित्य यात्रा में चरितार्थ काव्यांश को प्रस्तुत किया।

कदम-कदम रखता ही राही कितनी दूर चला जाता है,
एक-एक तिनका से पंछी का भी घर बन जाता है।

सिद्धेश्वर के जीवन की सक्रियता और सृजनशीलता पर उत्साहित करने वाली पंक्ति

'मंजिल मिले न मिले इसका गम नहीं,
मंजिल की जुस्तजूं में मेरा कारवां तो है।'

गाकर कविवर सत्यनारायण ने यह बताने का प्रयास किया कि सिद्धेश्वर जी बिना कोई फल की आशा किए समाज व साहित्य के प्रति अपने राष्ट्रीय दायित्वों के निर्वहन में निर्वाध गति से प्रयासरत हैं। सत्यनारायण ने पुनः कहा कि प्रो॰ राम बुझावन बाबू की इस कृति में तीन पीढ़ियों का योगदान है जिसकी पहली पीढ़ी में तो वे स्वयं हैं और दूसरी पीढ़ी का प्रतिनिधित्व पुस्तक के नायक सिद्धेश्वर जी करते हैं तथा तीसरी पीढ़ी के हैं पुस्तक के युवा संपादक डॉ॰ शहिद जमील। इस दृष्टि से इस पुस्तक की उपादेयता तीन गुणी हो गई है। सत्यनारायण ने अपनी शुभकामना देते हुए कहा, सिद्धेश्वर जी समुद्र में एक मोती की तरह हैं जिसकी अपनी एक अलग पहचान होती है।

पटना विश्वविद्यालय, बी॰ एन॰ कॉलेज के पूर्व हिंदी विभागाध्यक्ष तथा सुपरिचित साहित्यकार 88-वर्षीय प्रो॰ राम बुझावन सिंह जी ने कहा सिद्धेश्वर जी के साथ अपने कई दशकों के संबंधों तथा उनके अंकों से अक्षर तक की एक लंबी यात्रा को देखा और शामिल रहा हूँ। इसलिए इस पुस्तक में उन्होंने शब्दबद्ध किया है कि एक लंबे अरसे से मेरे मन में यह लालसा थी और यह भय भी सता रहा है कि पका हुआ आम कब टपक जाए, इसे कहा नहीं जा सकता। उन्होंने प्रश्नोत्तर शैली में लिखित अपनी इस कृति के प्रथम खण्ड में सिद्धेश्वर की सामाजिक, राजनीतिक तथा साहित्यिक यात्रा को एक यशस्वी उपलब्धि बताते हुए अपनी शुभकामनाएँ उन्हें दीं।

लघुकथाकार डॉ॰ सतीश राज पुष्पकरणा ने सिद्धेश्वर के व्यक्तित्व पर अपने विचार प्रस्तुत करते हुए उनकी अद्यतन कृति 'समकालीन यथार्थबोध' को हिंदी साहित्य में इसलिए युगांतरकारी बताया कि इसके पाठक इसे पढ़कर साहित्य, शिक्षा, धर्म-कर्म, पत्रकारिता, संस्कृति तथा भारतीय राजनीति के आज के यथार्थ तक पहुँच सकते हैं। इन्होंने पूरी ईमानदारी और टटकेपन के साथ संग्रह की रचनाओं में अपनी बेचैनियों और घायल तन्हाइयों को शब्दबद्ध कर लोगों को एक अच्छी खासी मानसिक खुराक प्रदान की है जिसके लिए वे बधाई के पात्र हैं।

प्रारंभ में मंच की बिहार इकाई के अध्यक्ष तथा भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व वरिष्ठ अधिकारी जिया लाल आर्य ने समारोह में पधारे मान्य अतिथियों एवं सुधीश्रोताओं का हार्दिक अभिनंदन व स्वागत करते हुए कहा कि सिद्धेश्वर ने साहित्य, संस्कृति तथा राजनीति जैसे महत्त्वपूर्ण विषयों का अवगाहन कर न केवल अपनी स्वाध्यायशीलता, अध्यवसाय और दृढ़ संकल्प का परिचय दिया है, बल्कि उन्होंने सुविचारित यथार्थ उपलब्ध कराकर हमारे लिए चिंतन और मनन का साधन सुलभ कराया है जिसके लिए उन्हें हार्दिक बधाई है।

अपने लेखकीय वक्तव्य में लेखक तथा मंच के राष्ट्रीय महासचिव सिद्धेश्वर ने अतिथियों एवं वक्ताओं के अनुग्रह के प्रतिदान के क्रम में कहा कि प्रो॰ राम बुझावन बाबू के प्रति आभार व्यक्त करने को मेरे पास शब्द नहीं। आज के भौतिकवादी युग में जब साहित्य के क्षेत्र में भी लोगों की नजर बरगद के पेड़ पर लगी रहती है प्रो॰ राम बुझावन बाबू ने न जाने क्यों, उसे वटवृक्ष के बोंसाई रूप में मुझमें कौन सा ऐसा तत्त्व पाया कि उन्होंने लोकार्पित पुस्तक का मुझे ही पात्र बनाया। दरअसल प्रो॰ साहब स्वयं एक निश्छल और निष्कपट व्यक्ति हैं। संभव है अपनी इस भावना की छाया मुझमें भी उन्हें दिख गयी हो। उन्होंने पुनः कहा कि आमतौर पर आज सत्ता से जुड़े लोगों पर ही कुछ लिखना समीचीन समझा जाता है जो उन्हें कुछ दे दिला सके। हमारा व्यक्तित्व तो ऐसा नहीं। जो न किसी पुरस्कार समिति में हो, न किताबों की खरीद करा सकता हो, न नौकरी दिला सकता हो, न विदेश भिजवा सकता हो और न किसी मंत्री का चमचागिरी करता हो, उस पर ऐसी पुस्तक लिखकर प्रो॰ साहब ने और तो और स्वयं बिहार के मुख्य मंत्री नीतीश कुमार को भी आश्चर्य में डाल दिया है। आखिर तभी तो उन्होंने पुस्तक देखते ही कहा कि यदि इसके आवरण पृष्ठ पर मेरी तस्वीर न छपी होती तो लोग तत्कालीन केंद्रीय मंत्री और राज्यपाल तथा हिंदी साहित्य के अध्येता प्रो॰ सिद्धेश्वर प्रसाद की जीवनी मानते सिद्धेश्वर जी ने पुनः कहा कि विचारों से सहमति-असहमति अलग बात है मगर कम से कम इस पुस्तक को देखकर तो मुझे ऐसा लगता है कि जिसने आज भी सही रास्ते पर चलकर सीधी-सादी जीवन पद्धति अपना ली हो या फिर निष्ठा और ईमानदारी से सामाजिक प्रतिबद्धता बरकरार रखते हुए साहित्य के प्रति अपनी सेवा का दायित्व निभा रहा हो, उसका भी जादू होता है और वह भी सिर चढ़कर बोलता है, मैं महसूस करता हूँ कि पिछले तकरीबन चार दशक से प्रो॰ राम बुझावन बाबू के सान्निध्य में रहने और उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करने का ही यह प्रतिफल है कि इस पुस्तक के रूप में उनसे मुझे यह प्रसाद मिला। प्रो॰ साहब के साथ-साथ नीतीश कुमार, प्रो॰ अरुण कुमार तथा अतिथि वक्ताओं के प्रति तहेदिल से अपना शुक्रिया अदा करते हुए उन्होंने सभी से अनुरोध किया कि उनका स्नेह सदैव बना रहे ताकि वे अपना दायित्व बखूबी निभा सकें।

मंच-संचालक डॉ॰ शाहिद जमील ने अपनी वाक्पटूता तथा ओजपूर्ण शैली में कार्यक्रम का संचालन कर समारोह को शुरू से अंत तक सफल बनाया। मंच के उपाध्यक्ष डॉ॰ एस॰ एफ॰ रब ने अतिथियों व श्रोताओं के साथ-साथ परिषद् के माननीय सभापति प्रो॰ अरुण कुमार सहित परिषद् के पदाधिकारियों एवं प्रिंट तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से जुड़े पत्रकारों-छायाकारों के प्रति आभार प्रकट किया।

– डॉ॰ शाहिद जमील, पटना से।

डॉ॰ जगन्नाथ को
सरस्वती सम्मान

उड़ीसा में जे॰ पी॰ के नाम से प्रसिद्ध उड़ीया लेखक डॉ॰ जगन्नाथ प्रसाद दास को उनकी कविताओं के संग्रह 'परिक्रमा' के लिए के॰ के॰ बिड़ला प्रतिष्ठान की ओर से प्रतिवर्ष दिया जाने वाला वर्ष 2006 का 'सरस्वती सम्मान' से नवाजा गया। इस सम्मान के तहत पाँच लाख रुपए, प्रतीक चिन्ह और प्रशस्ति पत्र उन्हें प्रदान किया गया। अभी तक कुल 15 विभिन्न भारतीय लेखकों को दिया गया यह सम्मान पाने वाले डॉ॰ दास 16 वें और उड़ीया के तीसरे रचनाकार हैं।

सन् 1936 में जन्मे श्री दास ने साहित्यिक सुझाव की वजह से भारतीय प्रशासनिक सेवा से तब त्याग पत्र दिया था। जब उनकी सेवा के दस साल बचे हुए थे। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से राजनीति विज्ञान में एम. ए, करने के बाद श्री दास ने कला इतिहास में डॉक्टरेट की उपाधि ली। इनके अब तक दस काव्य संग्रह, पाँच नाटक, सात कहानी संग्रह तथा एक ऐतिहासिक उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।

डॉ॰ सूर्यवाला को
व्यंग्यश्री सम्मान

पिछले दिनों नई दिल्ली के हिंदी भवन में पं. गोपाल प्रसाद व्यास की जयंती के अवसर पर आयोजित एक समारोह में वर्ष 2007 के व्यंग्यश्री सम्मान से जानी-मानी व्यंग्यकार डॉ. सूर्यवाला को श्रीमती

बाकलीबाल और वरिष्ठ आलोचक डॉ॰ निर्मला जैन ने संयुक्त रूप से प्रदान किया। सम्मान के रूप में डॉ॰ सर्यवाला को शाल, श्रीफल, प्रशस्ति-पत्र और नकद राशि प्रदान की गई। इस अवसर पर डॉ॰ जैन ने कहा, 'जीवन के बड़े-बड़े मर्म और गंभीर बातें भी व्यंग्य की सहायता से बड़े हल्के-फुल्के ढंग से कही जा सकती है।' थोड़े में ही बहुत कुछ कहने की विधा ही व्यंग्य है। सबकुछ कह दिया तो समझो कि उसकी धार खत्म हो गई। व्यंग्य में किसी बात की आलोचना की जाती है, जबकि हास्य किसी भी विषय पर हो सकता है। कार्यक्रम का संचालन डॉ. ज्ञान चतुर्वेदी ने किया, जबकि धन्यवाद ज्ञापन कवि तथा हिंदी भवन के मंत्री गोविंद व्यास ने किया।

- उदय कुमार 'राज़', नई दिल्ली से।

रेखा अग्रवाल
को राष्ट्रीय विज्ञान पुरस्कार

विगत 1 मार्च 2007 को नई दिल्ली के सर सी.वी. रमण सभागार में केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्यागिकी मंत्री कपिल

सिब्बल द्वारा चर्चित लेखिका रेखा अग्रवाल को आकाशवाणी-दूरदर्शन पर उनके विज्ञान रूप को एवं विज्ञान लेखन में उल्लेखनीय योगदान के लिए इस वर्ष के राष्ट्रीय विज्ञान लोकप्रिय-करण पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस सम्मान के तहत उन्हें एक लाख रुपये की नकद राशि, प्रतीक चिन्ह व प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया।

सुश्री अग्रवाल की अब तक 14 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। इनमें 'रक्त की कहानी' तेरह भाषाओं में प्रकाशित पुस्तक पाँच लाख बच्चों तक पहुँच चुकी है। वे 1978 से 1981 तक आकाशवाणी तथा दूरदर्शन से भी जुड़ी रही हैं।

कवि विराट को
साहित्य सम्मान

इंदौर के सुप्रसिद्ध कवि-गीतकार चन्द्रसेन विराट को उनके मुक्तकों की पांडुलिपि 'कुछ अँगारे, कुछ फुहारें' के

लिए विगत 26 नवंबर 2006 को टी. आर. नेमा सामाजिक-सांस्कृतिक ट्रस्ट द्वारा वर्ष 2006 का तुलसीदास नेमा साहित्य-सम्मान से सम्मानित किया गया। पुरस्कार स्वरूप इस पांडुलिपि को ट्रस्ट प्रकाशित कर रहा है। इसके पूर्व भी 'विराट' को कई प्रतिष्ठित पुरस्कार/सम्मान प्राप्त हो चुके हैं।

आर्यबिशप टूटू को
गाँधी शांति पुरस्कार

वर्ष 1984 में प्रतिष्ठित नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित दक्षिण अफ्रीका में रंग भेद के ख़िलाफ सफल लड़ाई में

महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले आर्य बिशप डेसमंड टूटू को वर्ष 2005 के गाँधी शांति पुरस्कार से राष्ट्रपति डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम ने पिछले 31 जनवरी 2007 को एक करोड़ रुपए की राशि और प्रशस्ति-पत्र प्रदान कर राष्ट्रपति भवन में सम्मानित किया। दक्षिण अफ्रीका के जाने माने धर्मगुरु और सामाजिक कार्यकर्त्ता टूटू ने अपने देश में रंगभेद का खुला विरोध किया जिससे दुनिया भर में उन्हें ख्याति और सम्मान मिला।

मारग्रेट अल्वा को
ग्लोबल लीडरशीप अवार्ड

अंतरराष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन 'वाइटस वायसेस' के द्वारा काँग्रेस की वरिष्ठ नेता मारग्रेट अल्वा को वाशिंगटन के

कैनेडी सेंटर में विगत 14 मार्च 2007 को उनके जमीनी स्तर पर लोकतांत्रिक मूल्यों का विस्तार कानूनी सुधार व मानवाधिकारों को प्रोत्साहन करने के लिए ग्लोबल लीडरशीप अवार्ड से सम्मानित किया गया। अल्वा को सामाजिक न्याय का रक्षक और एक अथक सार्वजनिक सेवक बताया गया। इन्होंने देश की महिलाओं को राजनैतिक प्रक्रिया में हिस्सा लेने के लिए प्रोत्साहित किया।

-पटना कार्यालय से।

***

परमानंद दोषी :
अकथनीय स्मृतियों के दोराहे पर खड़ा जीवनीकार

○ सिद्धेश्वर

अगर मनुष्य को सबसे विकसित प्राणी माना गया है तो उसके पीछे एक बड़ी वजह यह है कि वह आत्मचेतन होता है, उसमें स्वयं अभिज्ञा अथवा बोध होता है और उसके अंदर संवदेनशीलता होती है। मनुष्य में रचनाकार सर्वाधिक संवेदनशील होता है। साहित्यकार परमानंद दोषी एक ऐसे ही जीवनीकार थे जिनमें संवेदना के साथ-साथ आत्मसम्मान की भावना कूट-कूट कर भरी थी। उन्होंने कभी भी अपने सम्मान के साथ समझौता नहीं किया। इस संदर्भ में मैं स्वयं भी साक्षी रहा हूँ और दोषी जी के अपने मित्रों एवं शुभेच्छुओं से उनके स्वाभिमानी होने से संबंधित कई घटनाएँ मुझे सुनने को मिली हैं। उनमें से केवल एक घटना की यहाँ चर्चा करना यथोचित समझता हूँ। यह घटना सन् 2005 की है। घटना यूँ है कि बिहार सरकार के राजभाषा विभाग की ओर से प्रतिवर्ष साहित्य की विभिन्न विधाओं में उल्लेखनीय योगदान करने वाले साहित्यकारों को राजभाषा पुरस्कार दिए जाने के सिलसिले में विभाग की एक चमचमाती एम्बेसडर कार गर्दनीबाग स्थित परमानंद दोषी के सरकारी आवास 30/13 के सामने एक दिन आकर लगी जिसमें से एक सरकारी मुलाजिम उतरा और बरामदे में खड़े एक व्यक्ति से दोषी जी की उपस्थिति की जानकारी लेने के बाद उनके मिलने की उसने इच्छा जाहिर की। उस व्यक्ति ने इस आशय की सूचना अंदर जाकर दोषी जी को दी। दोषी जी ने उस आगंतुक को अंदर बुलाया, पर उसने बरामदे में ही उनसे बातचीत करना उचित समझा। उस सज्जन ने दोषी जी को बताया कि राजभाषा विभाग इस वर्ष दोषी जी को भी राजभाषा पुरस्कार से सम्मानित करने पर विचार कर रहा है। इस पर दोषी जी ने उस मुलाजिम से कहा कि तब उन्हें इसमें क्या करना है। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि बेहिचक विभाग के उस सज्जन द्वारा दोषी जी को दी जाने वाली पुरस्कार राशि में से उसकी आधी राशि की माँग उनसे की गई। इतना सुनते ही वे आग-बबूला हो उठे और उन्होंने उस व्यक्ति से कहा, - 'मुझे ऐसा सम्मान नहीं चाहिए, आप सीधे यहाँ से भागिए।' जब उस व्यक्ति, जिन्हें आप दलाल कहना पसंद करेंगे ने अपने को अपमानित महसूस करते हुए कुछ अनाप-शनाप कहना प्रारंभ किया तो दोषी जी ने लोहे की एक छड़ निकाल उसे मारने की धमकी दे डाली। इतना देखते ही वह बिचौलिया गाड़ी में बैठा और चलता बना। जब उस वर्ष राजभाषा पुरस्कार का वितरण हुआ तो दोषी जी का नाम नदारथ था, कारण कि उन्होंने उसकी आधी राशि विभाग को जो नहीं उपलब्ध कराई थी। जैसी चर्चा है कि उस वर्ष के पुरस्कार के बारे में आमजन और साहित्यकारों में से सबको तो नहीं मगर कुछ लोगों से पुरस्कार की आधी राशि लेने के बाद ही उन्हें पुरस्कार से नवाजा गया था और जिसके लिए दोषी जी कतई तैयार नहीं हुए थे। यह एक ऐसी घटना है जिससे दोषी जी के व्यक्तित्व को महसूस किया जा सकता है।

जब मैंने दोषी जी के व्यक्तित्व और कर्त्तव्य पर संस्मरण लिखना प्रारंभ किया तो मुझे ऐसा महसूस हुआ कि शब्द और स्मृति की आग से जलने के बाद उभरे हुए छाले फूटकर कल्लाहट क्यों उत्पन्न कर रहे हैं? जब मैंने उनके जीवन-यात्रा के यथार्थ पर एक नजर डालने की कोशिश की तो पाया कि जीवन-जगत के उसकते-उसकते अनुभवों से दोषी जी के जीवन की अथाह मौन व्यथा का इतिहास क्या है? सचमुच उनके जीवन का यथार्थ इतना असहनीय-अकथनीय है कि जिसे लोग बर्दाश्त नहीं कर सकते। उनके जीवन से जुड़ी हर कहानी एक हैरानी है। कहानी का सच अनुभव की तेज आँच से उबलकर उफन रहा है। टी॰एस॰ एलियट ने इसे 'टेक्निकल इंटरेंस' शिल्प रस कहा है जैसे तितली के पंखों से उड़ान और लय के साथ रंग-रंगापन। दोषी जी का रचना-स्वभाव अंतर्मुखता लिए है -मौन होकर मथने वाला स्वभाव। यही कारण है कि दोषी जी के देहावसान के तुरत बाद पत्रकार चंदन व एस॰एन॰बी॰ ने लिखा कि दोषी की उम्र निरंतर लेखन करते रहने की स्थितियाँ बनाए रखने में बीती। इससे ज्यादा इनका कोई मतलब भी कभी नहीं रहा। लेखन की महत्ता के आगे पारिवारिक जिम्मेवारियाँ हिचकोले खाती रहीं। बावजूद, अखबारों, प्रकाशकों एवं चर्चित साहित्यकारों से खुद को दूर रखना श्री दोषी का स्वभाव भी बन गया था।

प्रारंभ में परमानंद दोषी प्रमुख रूप से एक कथाकार थे। कथा लिखते-लिखते अचानक इनका ध्यान संस्मरण तथा जीवनी लेखन की ओर चला गया। फिर तो जीवनी लेखन जैसे इनकी आदत ही बन गयी। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि समाज व देश की महान हस्तियों, स्वतंत्रता-सेनानियों की जीवनियाँ लिखने की वजह से जीवनी विधा के आप वैसे एकमात्र साहित्यकार हो गए जिनसे परिमाण और गुणवत्ता दोनों दृष्टियों से हिंदी की जीवनी विधा समृद्ध हुई। दोषी जी ने बहुत बारीकी और कौशल से देश की वैसी महान विभूतियों की जीवनियाँ लिखीं, जिससे समाज दिगंतव्यापी अँधेरे के विरूद्ध संघर्ष पथ पर चलने के लिए प्रेरणा-प्रोत्साहन प्राप्त होते

हैं। दोषी जी ने सभी जीवनियाँ हमारे राष्ट्रोद्यान के सुरभित पुष्प, शीर्षक के अंतर्गत लिखीं। प्रो० राम बुझावन सिंह की हमारे जीवन पर आधारित सद्य: प्रकाशित जीवनी 'सिद्धेश्वर: व्यक्तित्व और विचार' के पुरोवाक् में देहरादून सैन्यअकादमी के पूर्व प्राध्यापक एवं प्राचार्य डॉ० राजनारायण राय ने लिखा है कि बिहार के जिन लेखकों से जीवनी विधा को उत्कर्ष मिला है उनमें परिगण्यम हैं सर्वश्री शिवपूजन सहाय (भीम और अर्जुन), रामवृक्ष बेनीपुरी (कार्ल मार्क्स), परमानंद दोषी आदि। यह ध्यानाकर्षी तथ्य है कि 'दोषी जी अब तक शताधिक लोक ख्यात आख्यान व्यक्तियों की अल्पभोगी जीवनियाँ लिख चुके हैं और यह काबिले तारीफ है कि आज भी इनकी लेखनी इसी दिशा में गतिशील है। डॉ० राय ने दोषी जी को वस्तुत: जीवनी-कोशकार की संज्ञा दी है, किंतु दु:खद स्थिति यह है कि इस जीवनी कोशकार जिसने जीवन के अंतिम क्षण तक हिंदी साहित्य को समृद्ध कर अपना सब कुछ लुटा दिया ऐसे जीवनीकार दोषी जी के लेखन पर यदा-कदा ही चर्चा हुई। सबके बारे में जिस व्यक्ति ने अपनी कलम चलाई उसके बारे में किसी ने कुछ नहीं कहा। ऐसा लगता है कि उसका आत्मसम्मानी होना भी इसका कारण रहा, क्योंकि चाटूकारिता की एक बूँद भी उनके खून में नहीं थी। सही को सही और गलत को गलत कहने में उन्हें तनिक भी हिचक नहीं होती थी। दो-टूक बातें कहकर उनकी जैसे आदत बन गई थी। आखिर तभी तो दोषी जी के निधन पर अपनी संवेदना व्यक्त करते हुए वरिष्ठ कवि व साहित्यकार सत्यनारायण ने कहा कि खरा-खोटा बोलने वाला इससे बड़ा साहित्यकार कोई दूसरा नहीं रहा। रचनात्मक प्रक्रिया में खो जाने वाले वे बिहार के दूसरे 'राजकमल चौधरी' थे। रचना व कर्म के स्तर पर उन्होंने कभी भ्रम नहीं पाला। पटना सचिवालय ग्रंथागार के दोषी जी कई दशक तक प्रमुख रहे और इस पद पर रहकर पुस्तकालय विज्ञानी के रूप में उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। यही नहीं, बल्कि समाज व देश के लिए सब कुछ न्योछावर करने वाले लगभग तीन सौ जीवनियाँ लिखकर उन्होंने व्यथित आत्मा की तलाश में संस्कृतियों के मेल-मिलाप और आपसी संघर्ष के नए मुहावरे और बिल्कुल नए प्रतीकों को जन्म दिया है। इन जीवनियों की पुस्तकें इतनी कम कीमत है कि उसे हर कोई क्रय कर सकता है।

दरअसल इन महान विभूतियों की जीवनियाँ लिखकर दोषी जी ने उन सभी के प्रति अपना सम्मान दर्शाया है। इस प्रकार हम इस रचनाकार के उस संकल्प की दाद देते हैं जिसके तहत वह अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के प्रति वचनबद्ध रहा तथा राजनीतिक असहमति होते हुए भी अपनी रचनाओं के जरिए मानवीय मूल्यों व मर्यादाओं की रक्षा के लिए निरंतर संघर्षरत रहे। दोषी जी ने

अपनी रचनाधर्मिता में उस मानवीय पहलू को मान्यता दी जिसमें विभिन्न संस्कृतियों के आपसी मेल-मिलाप और टकरावों की विवेचना करते हैं। जिन लोगों ने उन्हें अब तक नहीं पढ़ा है उन्हें उनकी पुस्तकें पढ़नी चाहिए खासकर जो पाठक राजनीति और समकालीन विषयों में अधिक रुचि रखते हैं।

परमानंद दोषी के कथा शिल्प के बारे में हम कुछ नए ढंग से सोचते हैं। मेरा मानना है कि इनके संपूर्ण साहित्य पर सोचना-विचारना, जरा ठीक ढंग से अभी बाकी है, वर्ग-भेद के सवाल पर वे बराबर मानते रहे कि वर्ग-भेद आज भी बरकरार है। सर्वहारा आज भी मौजूद है। हाँ, इतना जरूर हुआ है कि बाजारवाद और उपभोक्ता संस्कृति ने प्रत्येक वर्ग के लोगों की मानसिकता-निर्धारण में इधर अपनी एक जबर्दस्त भूमिका निभाई है। किसानों की दयनीय हालत को उन्होंने भी महसूस किया था और खेत-मजदूरों का गाँवों से शहरों की ओर पलायन पर वे हमेशा अपनी चिंता व्यक्त करते थे, क्योंकि पलायन कर रहे इन मजदूरों को जो भयानक शोषण से गुजरना पड़ रहा है उससे वे वाकिफ़ थे।

देश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में परमानंद दोषी निरंतर रूप से छपते रहे हैं, दिल्ली से प्रकाशित राष्ट्रीय चेतना की वैचारिक पत्रिका 'विचार दृष्टि' के वे नियमित लेखक तो थे ही, इसके प्रशंसक और सुधी पाठक भी। हमारा समाज जिन-जिन यातनाओं से गुजर रहा है, मानसिकताओं की जैसी उथल-पुथल है और जहाँ तकलीफें घटने की बजाय बढ़ती ही जा रही है, इन पर रचनाएँ प्रकाशित करने का सुझाव वे मुझे बराबर दिया करते थे। जब भी मैं दिल्ली से पटना आया उनसे बुद्ध मार्ग स्थित बिहार राज्य भूमि विकास बैंक जहाँ वे सचिवालय-ग्रंथागार से सेवा निवृत्ति के बाद विशेष पदाधिकारी के पद पर आसीन थे, उनके इस कार्यालय-कक्ष में मिलकर घंटों विभिन्न विषयों पर मैं बातचीत किया करता था और उस बातचीत के सिलसिले में वे बराबर 'विचार दृष्टि' की स्तरीयता और उसकी सामग्रियों पर चर्चा करते थे जिसके लिए मैं उनका आज भी आभारी हूँ।

परमानंद दोषी न केवल एक संवेदनशील लेखक थे, बल्कि सामाजिक टिप्पणीकार भी। वे बराबर कहा करते थे कि इस देश में साहित्यकारों को कोई सम्मान नहीं है। इसी कारण से वे सार्वजनिक जीवन से दूर रहा करते थे, किंतु मियाज के वे रसिक थे। स्त्रियों को वे सम्मान की दृष्टि से देखते थे। इसीलिए उनकी कई रचनाओं में अनुपम ढंग से स्त्री से संबंधित मिथकों व दर्शन के रोचक रोमांस के बीच सभ्यताओं व संस्कृतियों के दर्शन देखने को मिलते हैं। दोषी जी की लेखनी भूमण्डलीकरण के इस दौर में हर मुद्दे तथा विचार पर

चली। तेजी से विकसित हो रही भारत की अर्थव्यवस्था को रेखांकित करते हुए यहाँ के मध्यम वर्ग के अभ्यूदय को वे एक साहसिक कदम मानते थे। कुल मिलाकर देखा जाए तो दोषी जी का व्यक्तित्व एक ऐसे व्यक्ति के रूप में उभरकर सामने आया जो पूर्वी व पश्चिमी संस्कृतियों की अच्छाइयों को आत्मसात करते हुए अपने पाटलिपुत्र नगर तथा नालंदा के गौरवशाली अतीत को वापस लाकर उसे केंद्र बिंदु में वे खड़ा करना चाहते थे। इस संस्मरण में यों ही उनके कसीदे पढ़ने को मैं विवश नहीं हुआ। ऐसे वक्त गीतकार कुमार रवीन्द्र के गीत 'साधो! यह सहगान तुम्हारा' की ये चार पंक्तियाँ मुझे स्मरण हो आती हैं -

जो सबकी
साँसों में बजता
तुमने साधा वह इकतारा
अच्छा है

रचना और विचार को महज किताबी जामा पहनाने की बजाय, उसे संघर्ष और विकास का प्रतीक बनाने के इच्छुक तथा अपने समाज व मुल्क को कट्टरवादी ताकतों से मुक्ति दिलाने की गहरे सरोकार रखने वाले दोषी जी की स्मृति को ग़ालिब की इन पंक्तियों से मैं नमन करता हूँ -

ग़मे हस्ती का असद किससे हो जज़ मर्ग ईलाज
शमा हर रंग में जलती है सहर होने तक।

परमानंद दोषी जी ने जीवन पर्यंत संघर्ष किया। पटना के बाजार समिति स्थित पंचवटी नगर के निवास में आयोजित दोषी जी के श्राद्ध-कर्म में जब मैं उनके दोनों सुपुत्र कामता तथा अविनाश से मिला तो मुझे यह जानकारी मिली कि सेवा निवृत्त हो जाने के एक दशक बाद भी सरकार ने उनके पेंशन का निर्धारण नहीं किया और बिना पेंशन प्राप्त किए वे जीवन से कूच कर गए, किंतु उनका रचना-संसार हिंदी साहित्य की बहुमूल्य धरोहर है, जो नवोदित रचनाकारों एवं पाठकों को मार्गदर्शन के साथ-साथ उन्हें दिशा प्रदान करेगा। भारतीय संस्कृति एवं सरोकारों से परिपूर्ण हिंदी कथा व जीवनी साहित्य का यह अग्रणी रचनाकार 4 दिसंबर 2006 को चिरनिद्रा में लीन हो गया। गुण और परिमाण दोनों में महत्त्वपूर्ण कथा एवं जीवनी साहित्य की रचना के कारण वे हिंदी जगत में चिरस्मरणीय रहेंगे।

✱✱

कमलेश्वर :

जो आम आदमी के दर्द को आवाज़ लगाने वाले कथाकार थे

❍ सिद्धेश्वर

समय से आगे सोचने वाले हिंदी के विख्यात कथाकार, साहित्यकार व पत्रकार का विगत 27 जनवरी 2007 को दिल्ली के अपने निवास पर ही दिल का दौरा पड़ने से निधन हिंदी साहित्य के लिए न केवल अपूरणीय क्षति है, बल्कि यह उन शक्तियों का भी नुकसान है जो समरसता, निष्पक्षता, पंथनिरपेक्षता व बहुलतावादी संस्कृति के लिए सक्रिय थी। उनके निधन पर हिंदी साहित्य जगत में शोक की लहर दौड़ गई। यह समकालीन हिंदी के लिए एक भूचाल जैसा लगा। कमलेश्वर का लघुकथाएँ लिखने से हिंदी साहित्य जगत में अहम मुकाम हासिल हुआ। उन्होंने समकालीन जीवन को प्रतिबिंबित करने के लिए अपनी लेखनी का जादू चलाया। कमलेश्वर हिंदी साहित्य में नई कहानी के आंदोलन के स्तंभ माने जाते थे। कमलेश्वर की कहानियों के पात्र मध्यवर्गीय जीवन से संबंध रखते हैं।

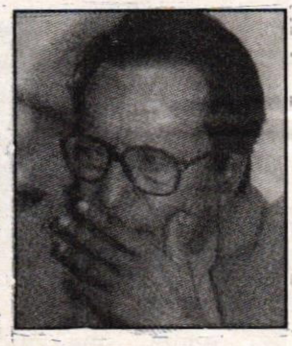

मुझे पूरी तरह याद है नई दिल्ली के हिंदी भवन के अनेक अवसरों पर वह कहते थे कि जड़ों से कटकर नहीं रहा जा सकता। रेल मंत्रालय के राजभाषा निदेशालय द्वारा एक बार हिंदी दिवस के अवसर पर रेलभवन में जब एक साहित्यक आयोजन किया गया तो उसमें रेलवे हिंदी सलाहकार समिति के सदस्य होने के नाते मैं भी आमंत्रित था। राजभाषा दिवस पर जो भी उस दिन उन्होंने खरी-खोटी सुनाई वह सचमुच उनकी स्पष्टवादिता और हिंदी के प्रति निष्ठा का एक उदाहरण कहा जाएगा। समारोह के बाद, मुझे याद है हम दोनों एक ही गाड़ी पर अपने-अपने निवास के लिए रवाना हुए, पर उन्होंने बड़ी आत्मीयता से मुझे अपने मयूर विहार निवास पर चाय पीने का आग्रह किया। हम दोनों ने चाय की चुस्कियों पर उस दिन के हिंदी आयोजन की विस्तार से समीक्षा की और हिंदी के लिए समर्पण के भाव से कार्यरत रहने का संकल्प लिया।

यों तो उनकी रचनाओं में 'आग का दरिया', 'मुर्गियों की दुनिया', 'जार्ज पंचम की नाक', 'नीली झील' आदि उल्लेखनीय है मगर 'कितने पाकिस्तान' विवादित रहा। उन्होंने कई राष्ट्रीय समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का संपादन किया। उनकी पत्रकारिता दृष्टि बड़ी पैनी थी। 'आँधी', 'सारा आकाश', 'मौसम', 'रजनीगंधा', 'छोटी सी बात', 'मि॰ नटवर लाल' सहित कई फिल्मों की पटकथाएँ व संवाद भी उन्होंने लिखे। इंदिरा गाँधी के जीवन पर बनी फिल्म की पटकथा उन्होंने ही लिखी थी, यह उनकी सौवीं फिल्म थी। 'दर्पण', 'एक कहानी', 'चंद्रकांता' व 'युग' सरीखे टीवी सिरियलों की पटकथा भी उन्होंने लिखी। इनकी कृतियों में उपन्यास, कहानी संग्रह व आलोचना आदि से संबंधित तीस से अधिक पुस्तकें शामिल हैं।

छह जनवरी, 1932 को उत्तर प्रदेश की मैनपुरी में जन्में कमलेश्वर ने सन् 1954 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी में एम॰ए॰ करने के बाद वे बतौर स्क्रिप्ट राइटर दूरदर्शन से जुड़े व इसके अतिरिक्त महानिदेशक पद तक का दायित्व उन्होंने संभाला। उन्हें 1995 में पद्मभूषण, 2003 में साहित्य अकादमी, शलाका सम्मान, भारत-भारती आदि कई सम्मानों से सम्मानित किया गया।

आम आदमी के दर्द को आवाज लगाने वाला कथाकार पाँच हजार साल की उम्र का दावा करने वाला छोटे कद बड़ी

आँखोंवाला सावंला सा मैनपुरी की एक गरीब विधवा का पढ़ाकू पुत्र था कमलेश्वर। अभी कुछ ही माह पूर्व दिल्ली विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग की एक साहित्यिक सभा में रिकार्ड श्रोता के बीच लगभग एक घंटा के अपने भाषण में मूड में आकर खुलकर बोले कि 'मेरी उम्र पाँच हजार साल की है।' भारतीय संस्कृति की मानवीय परंपरा का एक हिंदी उत्तराधिकारी की इस बात से सभी श्रोता रोमांचित हो उठे थे। यह हिंदी के एक बड़े अदीब का संवाद था। वे दिल के बड़े थे। पचहत्तर की उम्र में भी वे कई जगह कॉलम लिखते थे और क्या हस्तलेख? एक दम ठहरे हुए अकंप अक्षर वे नियमित लेखन करते रहते थे। सैकड़ों लेखक उन्होंने पैदा किए, समांतर फिल्म आंदोलन के हिस्सा बने उनके लिए लिखा, दलित पैंथर लेखन की नींव डाली, वोहरा संप्रदाय की आजादी की बात की और उन्होंने बात की सिधी साहित्य तक की। दूरदर्शन पर परिक्रमा नाम से उनका कार्यक्रम आज भी बेजोड़ कहा जा सकता है। कानुपर की तीन लड़कियाँ दहेज के कारण पंखें से जब लटक गई तो उनका कैमरा पहले कवर करने पहुँचा। इसी प्रकार 'बंद फाइल' बनाई और दिल्ली के पॉश इलाके में जब शालिनी को उसके पति प्रवीण ने जिंदा जलाया तब पहले पत्रकार कमलेश्वर रहे जो उस पत्नी का बयान लेकर आये। देखा जाय तो कमलेश्वर लेखकीय साहस के पर्याय थे। कहना चाहिए कि उँघते हुए दूरदर्शन को उन्होंने एक नई ऊर्जा दी। उनका लेखन विचारोन्मुख है, किंतु उन्होंने अपने लेखन में विचारों को संवेदन और अनुभूति को उभारने में एक कारक के रूप में इस्तेमाल किया। यही कारण है कि उनके लेखन में रचनाशीलता का पक्ष और संवेदना का पक्ष हमेशा मुखर होता रहा। व्यक्तिगत जीवन में कमलेश्वर साहस और दृढ़ता की प्रतिमूर्ति थे। आकाशवाणी की नौकरी करते हुए देश में पहली जनता पार्टी की केंद्र में सरकार बनने के वक्त, सारिका के संपादन के समय या दूरदर्शन के अतिरिक्त महानिदेशक के रूप में कार्य करते हुए कमलेश्वर ने अदम्य साहस का परिचय दिया और कभी नौकरीजीवी नहीं रहे। नौकरी की कभी परवाह न कर अक्सर नौकरी गंवाई। 'राजा निरबंसिया', 'बयान', 'जोखिम', 'मांस का दरिया', 'गर्मियों के दिन', 'इतने अच्छे दिन' जैसी शताब्दियों तक याद रखी जाने वाली कहानियों के अतिरिक्त 'कितने पाकिस्तान' एक नई शिल्प प्रविधि का उपन्यास है जो अपने विषय पक्ष की वजह से अंतरराष्ट्रीय ख्याति के उपन्यासों में परिणत होने योग्य हैं। कमलेश्वर जी 'परिकथा' की योजना से गहराई से जुड़े थे। इसके संपादक या सलाहकार संपादक के दायित्व को संभालने का अनुरोध ही उनसे किया जा रहा था कि उनकी सांसें बंद हो गई। मगर सच तो यह है कि कमलेश्वर जी की सांसें भले ही बंद हो गई हों, किंतु उसकी फाइल खुली है। एक अदीब की फाइल कभी बंद नहीं होती, क्योंकि वह एक ऐसा विशाल वृक्ष थे जिसके साए में साहित्यकारों के एक नये पौध ने अंगराई लेना सीखा। पर इतना जरूर है कि उनके निधन से राजेन्द्र यादव, मोहन राकेश और कमलेश्वर की त्रयी का आज एक और स्तंभ ढह गया। वह एक ऐसे इंसान थे जो सबके हँसी-ठहाकों में शामिल होने से लेकर लोगों की आँख के आँसू पोछने के लिए सबसे पहले हाथ बढ़ाते थे।

कमलेश्वर जी का मूलमंत्र था – सवाल इस बात का नहीं है कि आप कहाँ है, सवाल इस बात का है कि आप जहाँ है, वहाँ क्या कर रहे हैं? उनके इस मूल मंत्र ने एक समय में लिखने-पढ़ने वालों की जमात के बीच 'कोटे बल कोट' बन गया था। सातवें-आठवें दशक की पूरी हिंदी पीढ़ी के वह 'भाई साहब' थे। जब वह अपनी प्रसिद्धि के शिखर पर थे तब भी अपने नाम आए प्रत्येक पत्र का उत्तर वह अपने हाथ से लिखकर भेजते थे। प्रसिद्ध शायर एवं संवाद लेखक निदा फाजली ने कमलेश्वर के निधन पर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा, 'वह भारत की मिली-जुली संस्कृति के प्रतीक थे। उनका आखिरी उपन्यास 'कितने पाकिस्तान' इसी संस्कृति के विखंडन का मातम है।' वस्तुतः कमलेश्वर हिंदी जबान के मयार को दिशा देने वाले और तहजीब के रतन थे। वह एक व्यक्ति नहीं, संस्था थे। वह अंत तक सांप्रदायिकता के खिलाफ खड़े रहे।

यहाँ यह कहना लाजिमी है कि कमलेश्वर जी के निधन ने इस दुःखद अहसास को सघन कर दिया है कि बड़े रचनाकार निरंतर जा रहे हैं लेकिन बड़े रचनाकार बन नहीं पा रहे हैं। उनके संपादकत्व में 'सारिका' हिंदी की एकमात्र साहित्यिक पत्रिका थी, जो इतने व्यापक पाठक वर्ग तक पहुँची। इस प्रकार उन्होंने साहित्यिक पत्रकारिता को भी जन्म दिया। सारिका के जरिए न केवल उन्होंने नए लेखकों को सामने लाने का काम किया, बल्कि जो महत्त्वपूर्ण चीजें प्रकाशित कीं, व्यावसायिक घराने में होते हुए भी, वह काफी अहम है। नौवें दशक के बाद साहित्य और संस्कृति पर जो हमले हो रहे हैं उनके खिलाफ कमलेश्वर लगातार लिखते रहे। उनका दूसरा महत्त्वपूर्ण काम था बच्चों के लिए लिखना, कई नाटक लिखे उनके लिए, और कई पीढ़ियाँ तैयार कीं लेखन के जरिए। विचारधारा से कमलेश्वर जी प्रगतिशील और धर्म निरपेक्ष लेखक थे। एक लेखक का जो उत्थान इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में होना चाहिए वह उन्हें मिला। उन्होंने लेखकों को मीडिया में सम्मान दिलाया। दैनिक जागरण, कथा यात्रा और दैनिक भास्कर जैसे समाचार-पत्रों के संपादक के आलावा कई महत्त्वपूर्ण पदों पर वे रहे। करीब चार दशक के अपने लेखन काल में कमलेश्वर की रचनाएँ तेजी से बदलते समाज के विषादों को प्रतिबिंबित करती हैं और पुराने मूल्यों की जगह नए मूल्यबोध को स्थापित करती हैं। आज की महानगरीय सभ्यता में आदमी के अकेलेपन की व्यथा को उन्होंने बख़ूबी समझा था। इसलिए उन्होंने हिंदी कहानी को आमजन से जोड़ने का नारा दिया। अपने लेखन और समय-समय पर दिए गए साक्षात्कारों के जरिए समाज में जो कुछ जीवन और मनुष्य विरोधी रहा, कमलेश्वर उसकी मुख़ालफ़त करते रहे। सृजन को संपूर्णता में देखने के अभ्यस्त थे और रचनाकारों के व्यक्तित्व की गतिशीलता में विश्वास रखते थे। वे सदैव सार्थक मुद्दों पर बहस चलाने के पक्षधर थे, जो उन्हें समकालीन से अलग करता था।

कमलेश्वर जी निन्यानवे से अधिक फिल्में लिख चुके थे, लेकिन अपने दिल के करीब की फिल्में उन्होंने 'मौसम' को बताया। उनका यह उपन्यास 'आगामी अतीत'

नाम से धारावाहिक रूप से धर्मयुग में प्रकाशित हुआ था। कमलेश्वर जी का कद जितना ऊँचा था उसका अहसास वह कभी नहीं होने देते थे। उन्होंने तीन सौ से अधिक कहानियाँ भी लिखीं। इनके बारे में लोगों का कहना है कि बहुत से परेशान लेखकों की मदद उन्होंने आउट ऑफ द वे जाकर की। कहानी का पारिश्रमिक पहले दिया, कहानी बाद में छपी। इसीलिए उनके प्रशंसकों की लंबी कतार है।

कोई भी कट्टरता उन्हें रोक न सकी। मुंबई में रहते हुए उन्होंने दलित लेखकों के सम्मेलन का उद्घाटन किया था, तब शिवसेना की धमकी की भी उन्होंने परवाह नहीं की। उनकी याददाश्त बहुत अच्छी थी। उनका कहना था कि एक बार पढ़ने या देखने से ही उन्हें चीजें याद हो जाती हैं। वह इंदिरा गाँधी के काफी करीबी और प्रशंसक थे। तभी तो उनके उपन्यास 'काली आँधी' पर 'आँधी' नाम से फिल्म बनी थी। एक बार किसी भेंटवार्ता में कमलेश्वर जी ने कहा था कि बच्चों के लिए लिखी 'होताम के कारनामें' को तो लोग भूल चुके थे लेकिन 'नंदन' में छपने के बाद वह दोबारा से पुस्तक रूप में आ रही है। दूसरे को श्रेय देने में, अपने नेह को अपनी बातचीत से हमेशा बनाए रखने में वह हमेशा आगे रहे। सचमुच वे बहुत ही स्नेहिल व्यक्ति थे।

साहित्यकार दुष्यंत कुमार के बेटे आलोक से कमलेश्वर जी की बेटी मोना के साथ विवाह हुआ, जो भोपाल में रहते हैं। कमलेश्वर जी का पूरा नाम कमलेश्वर प्रसाद सक्सेना था। आलोचना के क्षेत्र में उनकी 'नई कहानी की भूमिका' तथा 'मेरा पन्ना समानांतर सोच' (दो खंड) महत्त्वपूर्ण पुस्तकें समझी जाती हैं। उनके यात्रा वृतांत 'खंडित यात्राएँ' और 'कश्मीर रात के बाद' तथा संस्मरण 'जो मैंने जिया; यादों के चिराग' तथा 'जलती हुई नदी' शीर्षक से प्रकाशित हुए। उन्होंने 'संकेत' 'नई धारा' 'मेरा हमदम-मेरा दोस्त' आदि हिंदी, मराठी, तेलुगु, पंजाबी एवं उर्दू कथा संकलनों का भी संपादन किया।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी प्रयोगधर्मी साहित्यकार व पत्रकार कमलेश्वर को रविवार 28 जनवरी, 2007 को भावपूर्ण माहौल तथा साहित्यकार राजेन्द्र यादव, हरिनारायण, पद्मा सचदेव, चित्रा मुद्गल, प्रभाष जोशी, ओम थानवी, आलोक मेहता, अरुण प्रकाश, संजीव, मधुकर गंगाधर, रवीन्द्र कालिया, हिमांशु जोशी, प्रदीप पंत तथा राजनीतिज्ञ सीताराम येचुरी और स्वामी अग्निवेश की उपस्थिति में कमलेश्वर के नाती अनंत ने उन्हें मुखाग्नि दी। अपनी विधवा पत्नी गायत्री देवी के अतिरिक्त हम जैसे हजारों साहित्य-सेवियों एवं शुभेच्छुओं को उन्होंने छोड़ दिया। राष्ट्रीय विचार मंच तथा उसके मुख-पत्र 'विचार दृष्टि' परिवार के सभी सदस्यों ने भी उनके देहावसान पर एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन कर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। एक साहित्यकार अपने संघर्षों से इस बुलंदी तक पहुँच सकता है, कमलेश्वर इसकी मिसाल थे। ऐसी हस्ती को अपना श्रद्धा-सम्मान भाव निवेदित करता हूँ मैं अपनी इन पंक्तियों से -

खुली किताब था तुम्हारा संघर्षमय जीवन,
पर था स्वाभिमान भरा वह निश्छल व निष्कपट मन।
संघर्षों में जिस बुलंदी तक पहुँचे तुम,
फिर से कानों में धीरे से कहो वही कथा तुम।

**

....पृ0 25 का शेषांश

चतुर्थ खंड ''साहित्य विधाएँ एवं विधान'' इसके अंतर्गत भारत की भाषा समस्या वर्तमान संदर्भ में, राष्ट्रभाषा हिंदी के संदर्भ में, कविता और छंद, गीत काव्य की पहचान, काव्य भाषा, हिंदी गीत-अस्मिता की तलाश, हमारा समय और हिंदी कहानी, संवाद कविता की प्रासंगिकता, व्यंग्य का सामाजिक सरोकार, हिंदी आलोचना का अतिवादी परिदृश्य, प्रश्न साहित्य में कथ्य और रूप की अन्विती, लोकसाहित्य और कलात्मक साहित्य का संबंध, साहित्य और अन्य विधाएँ, भारतीय भाषाओं के साहित्य की एकात्मकता नामक लेख है - जिनमें लेखक की समाधान चिंतन धारा दृष्टिगोचर होती है।

पाँचवा खंड ''साहित्य और समाज'' में साहित्य से संबंधित विविध लेख हैं। पंद्रह लेखों में साहित्य और समाज के संबंध को चोली दामन का बताते हुए साहित्य में साहित्यकार की प्रखर बुद्धि का उन्मेष होता है और हमारी चेतना का विकास होता है; इसे स्पष्ट किया है।

छठे खंड में 12 लेख हैं जो सामयिक बिंदुओं पर सांस्कृतिक चिंतन मनन प्रसुन कर जन संचार के माध्यम से साहित्य के लिए चुनौती है कहकर ज्वलंत समस्याओं को सन्मुख करते हुए दायित्व की ओर दिशा बोध करवाया है।

अंत में कीर्तिशेष डॉ. राधेश्याम शर्मा स्मृतियाँ एवं भावांजलियाँ संकलित हैं जिसमें स्मृतियों की ताजगी भावांजलियों में प्रस्तुत हैं - फिर भी इस कटु सत्य को, शाश्वत सत्य को स्वीकार पाना असंभव-सा प्रतीत होता है। कुल मिलाकर यह पुस्तक स्मरणीय है, संकलित लेखों के आधार पर पाठ्यक्रम में रखने योग्य है। एम.ए. हिंदी के छात्रों के लिए तो उपयोगी है-पाठकों के लिए पठनीय एवं संग्रहणीय है।

***

पं0 ओम प्रकाश कौशिक :

अणुव्रत आंदोलन से जुड़े एक तपे-तपाए अणुव्रती का अवसान

पं॰ ओम प्रकाश कौशिक अब नहीं रहे-दूरभाष पर अपने सुपुत्र सुधीर रंजन से इस एक पंक्ति के दु:खद समाचार से हम अवाक् रह गए, काष्ठवत हो गए। सहसा हमारे कानों से सुनी आवाजों पर हमें विश्वास न हुआ। दरअसल कभी-कभी जब अत्यंत आत्मीय हमारे बीच से अचानक गुजर जाते हैं तो तत्काल विश्वास न होना स्वाभाविक है, पर रह जाती हैं केवल यादों की परछाइयाँ, जो जेहन में कौंधती हैं और मन को बेचैन कर देती हैं। पं0 ओम प्रकाश कौशिक जी के देहावसान की ख़बर सुनकर मन बेचैन हुआ, फिर उनके साथ गुजरे पल की यादें एक-एक कर मेरे मानस-पटल पर उभरने लगीं और उन्हें शब्दबद्ध करने की बेचैनी मुझे होने लगी, क्योंकि कुछ यादें अविस्मरणीय होती हैं जिन्हें शब्दबद्ध करने पर न केवल मन हल्का हो जाता है, बल्कि वह शब्दबद्ध किया संस्मरण आमतौर पर उन नाती-पोतों के लिए अर्थपूर्ण हो जाता है, जो उसे पढ़ते हैं। लेखक जो संस्मरण लिखता है उसके संदर्भ में सबसे महत्त्वपूर्ण होती है वह है उसके प्रति नजरिया जिसे वह कागज के पन्नों पर लिख डालता है। हालांकि उसका यह नजरिया सही या गलत हो सकता है, मगर संस्मरण के लेखक का मन हल्का जरूर होता है।

यह बात सही है कि पं॰ ओम प्रकाश कौशिक जी का निधन असामयिक हो गया। अभी-अभी नवंबर 2006 के एक तारीख को अणुव्रत भवन में उनसे मिलकर मैं दो नवंबर को पटना के लिए प्रस्थान किया था। उन दिनों वे काफी स्वस्थ प्रसन्न थे। 31 अक्टूबर, 2006 को अपराह्न 4 बजे नई दिल्ली के राजघाट स्थित गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति के डॉ॰ बी.एन. पाण्डेय सभागार में जब राष्ट्रीय विचार मंच सहित अणुव्रत महासमिति (अहिंसा समवाय), पटेल फाउंडेशन तथा गाँधी स्मृति एवं दर्शन समिति के संयुक्त तत्वावधान में सत्याग्रह के सौ साल और लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल के 131 वें जयंती-समारोह का भव्य आयोजन किया गया था तो पं॰ कौशिक जी ने तन-मन-धन से उसमें शिरकत किया था और वे स्वयं सभागार में उपस्थित होकर सरदार पटेल तथा महात्मा गाँधी को अपना सम्मान भाव उन्होंने निवेदित किया था। मुझे अच्छी तरह याद है मैंने उनसे सादर मंच पर आसन ग्रहण करने का आग्रह किया था। मात्र दो माह के बाद ही उनके देहावसान की मुझे खबर मिलती है जबकि उनकी उम्र अभी ऐसी नहीं थी।

सच तो यह है कि जब उम्र होती है लगता है वक्त थम गया है, जब उम्र नहीं होती, वक्त को पकड़ने और उसे रोक रखने की सारी कोशिशें नाकामायाब हो जाती हैं।

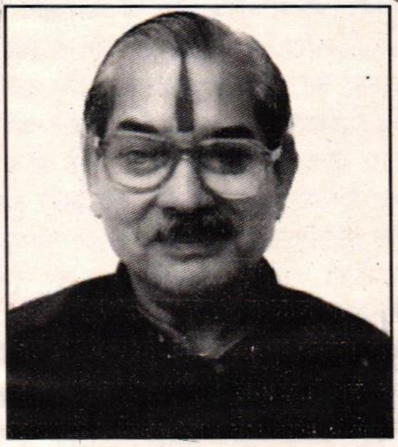

पं॰ ओम प्रकाश कौशिक जी के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। अणुव्रत से पिछले पाँच दशक से जुड़े कौशिक जी ने स्वाभिमान को आहत करने वाला समझौता कभी नहीं किया, चाहे इसके लिए उन्हें कितना ही कष्ट अथवा घाटा उन्हें क्यों न उठाना पड़ा हो। आचार्य श्री तुलसी के सौजन्य से पं॰ कौशिक जी अणुव्रत से इसलिए जुड़े कि आचार्य श्री तुलसी द्वारा अहिंसा के प्रचार-प्रसार हेतु स्थापित अणुव्रत आंदोलन में उनका अटूट विश्वास था और उसी के अनुरूप उनका आचरण, व्यवहार, स्वभाव और उनके कार्यकलाप थे। पूरी तन्मयता और निष्ठा से उन्होंने अणुव्रत एवं तेरापंथी सभा की लगभग पचास वर्षों से भी अधिक अवधि तक अपनी सेवा प्रदान की। प्रतिदिन नई दिल्ली के अपने उत्तमनगर निवास से बस द्वारा दीन दयाल उपाध्याय मार्ग स्थित अणुव्रत भवन में नियमित रूप से समय पर दस बजे पूर्वाह्न पधारना और दिनभर अपने दायित्व का निर्वहन कर संध्या छह बजे बस से ही अपने निवास वापस जाना जैसे उन्होंने अपना नियम बना लिया था। तेरापंथी सभा हो या अणुव्रत महासमिति या हो फिर अखिल भारतीय अणुव्रत न्यास-सभी के पदाधिकारियों एवं उनसे जुड़े कर्मचारियों को उनका स्नेह प्राप्त था। वे अपने सहकर्मियों पर उनकी त्रुटि के लिए कभी-कभार बिगड़ते भी थे तो उनके सहकर्मी उसे उनका आशीर्वाद समझ कर शिरोधार्य कर लेते थे और कभी उनके कहे को अन्यथा नहीं लेते थे। यही थी पं॰ कौशिक जी के व्यक्तित्व की विशेषता। आखिर तभी तो इस शख्स ने आधी सदी तक अपने स्वाभिमान से बिना कोई समझौता किए गुजर कर वहाँ चला गया जहाँ से कोई वापस लौटकर नहीं आता। कौशिक जी अणुव्रत की दुनिया में रहकर किसी से कुछ उधार लेने या किसी की नकल के पक्षधर नहीं रहे। इस प्रसंग में मुझे संगीतकार नौशाद का यह शेर याद आ गया -

"दरे गैर पर भीख माँगो न फन की
जब अपने ही घर में खजाने बहुत हैं।"

पं॰ ओम प्रकाश कौशिक अपने कर्म के प्रति समर्पित थे। दरअसल व्यक्ति का कर्म ही वह आइना है, जो उसके वास्तविक स्वरूप को दिखाता है। प्रत्येक व्यक्ति कर्म की परिधि से घिरा हुआ होने की वजह से किसी भी काल-खंड में क्षण मात्र के लिए भी बिना कर्म किए रह नहीं सकता। पं॰ ओम प्रकाश कौशिक जी भी एक ऐसे ही अणुव्रती थे जो अपने स्वाभावानुसार कुछ न कुछ करते रहते थे। यहाँ तक कि शारीरिक रूप से अशक्त होने पर भी वह मानसिक रूप से कर्मरत रहते

थे और यह उनका स्वभाव बन गया था। पैर के ठेहुना के दर्द से वे पिछले कई वर्षों से परेशान थे, गठिया का दर्द कम होने का नाम ही नहीं ले रहा था, फिर भी अपने कर्म को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए वे एकाग्रभाव से लक्ष्य की प्राप्ति के लिए निरंतर अपने कार्यालय पहुँचकर अपने कर्त्तव्य का निर्वाह करते थे। वस्तुतः वे आध्यात्मिक अथवा लौकिक दोनों लक्ष्य तक पहुँचने के लिए दृढ़-संकल्प रहते थे जिसके लिए भाव, विचार और कर्म करने की तत्परता जैसे अनेक सोपानों की भी आवश्यकता होती है। जो व्यक्ति कार्य में बाधाओं के आने की कल्पना मात्र से ही कार्य प्रारंभ नहीं करते या फिर कार्य प्रारंभ करने के बाद भी बीच में बाधाएँ आने पर अधूरा ही छोड़ देते हैं- ऐसे व्यक्ति कभी भी अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल नहीं हो सकते। दृढ़ संकल्प-शक्ति और विचारों की दृढ़ता ही कौशिक जी के व्यक्तित्व की विशेषता थी। उनकी इन्हीं विशेषताओं के कारण अणुव्रत महासमिति की ओर से आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने उन्हें अणुव्रतसेवी सम्मान से सम्मानित किया।

मुझे अच्छी तरह याद है जब पिछले 16 एवं 17 नवम्बर 2002 को नई दिल्ली के दीनदयाल उपाध्याय मार्ग स्थित राजेन्द्र भवन में राष्ट्रीय विचार मंच और उसके मुख-पत्र 'विचार दृष्टि' की ओर से 'आजादी के बाद वैचारिक क्रांति के नए आयाम और हमारा दायित्व' विषय को केंद्र में रखकर जब विभिन्न विषयों पर विचार-विमर्श हेतु दो-दिवसीय राष्ट्रीय अधिवशन का आयोजन किया गया था उसी वक्त से डॉ॰ धर्मेन्द्र नाथ 'अमन' जी के सौजन्य से हम पं॰ ओम प्रकाश कौशिक जी के संपर्क में आए और जिनके सहयोग से अणुव्रत भवन का अतिथिशाला देश के हर क्षेत्र से पधारे विद्वतजनों के प्रतिनिधियों को मुहैया कराया गया था। कौशिक जी ने उक्त अधिवेशन को सफलतापूर्वक संपन्न करने के लिए कोई कोर-कसर नहीं छोड़ रखा था। इस संदर्भ में मुझे एक छोटी घटना याद आ गई और वह यह कि जब मैं रेलवे हिंदी सलाहकार समिति का सदस्य था, रेल मंत्रालय के राजभाषा निदेशालय में उप निदेशक के पद पर आसीन डॉ॰ सोमदत्त शर्मा जी से मैं बड़ी आत्मीयता से जुड़ गया था। यों तो रेलवे के मंत्री, रेलवे बोर्ड के अध्यक्ष से लेकर उसके छोटे-बड़े प्रायः सभी अधिकारियों-कर्मचारियों के साथ मेरा अच्छा सलूक था, क्योंकि अधिक-से-अधिक लोगों से मिलना और उनके साथ मिलकर विचारों का आदान-प्रदान करना मेरे स्वभाव का एक अंग बन गया है और इसे मैं अब तक निभाता आ रहा हूँ। हाँ, यह जरूर है कि संयोगवश किसी-किसी के साथ अंतरंगता अधिक हो जाने के कारण उस व्यक्ति के साथ मित्रता स्थायी हो जाती है। डॉ॰ सोमदत्त शर्मा जी के साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ। रेलवे हिंदी सलाहकार समिति की बैठकें हों या फिर अन्य क्षेत्रीय कार्यालयों की राजभाषा समितियों में प्रेक्षक की हैसियत से भाग लेने अथवा राजभाषा संबंधी कार्यों को लेकर निरीक्षण करने के संदर्भ में डॉ॰ सोमदत्तजी से रेलवे बोर्ड के कार्यालय में उनके समीप बैठकर कार्यक्रम बनाना हमारी आदत बन गई थी। यहाँ तक कि उनके आनंद विहार स्थित निवास में मेरा जाना-आना लगा रहता था और इस प्रकार उनके परिवार का मैं एक सदस्य बन गया और आज तक वह सिलसिला जारी है जब कि श्री सोमदत्त शर्मा जी रेलवे से अवकाश प्राप्त कर चुके हैं। अब तो खैर राष्ट्रीय विचार मंच जिसका मैं राष्ट्रीय महासचिव हूँ, श्री शर्मा जी उसकी राष्ट्रीय राजधानी शाखा के अध्यक्ष पद पर विराजमान हैं। एक दिन ऐसा हुआ कि जब मैं अणुव्रत भवन में पं॰ ओम प्रकाश कौशिक जी के समीप एक कार्यक्रम को लेकर उनसे राय-मशवरा कर रहा था कि अचानक डॉ॰ सोमदत्त शर्मा जी वहाँ आ पहुँचे। मैंने उनका अभिवादन कर उन्हें नमस्कार किया। कौशिक जी ने मुझसे पूछा कि क्या मैं शर्मा जी को पहले से जानता हूँ तो मैंने उन्हें पूर्व की सारी कथा सुनाई। कौशिक जी से मुझे यह जानकर कि शर्मा जी उनके अनुज हैं, मुझे बड़ा संतोष हुआ, क्योंकि मैं भी अपने को कौशिक जी का अनुज मानता रहा और उन्होंने ने भी मुझे अनुज-सा स्नेह दिया। फिर क्या था, शर्मा जी से मेरी मित्रता और प्रगाढ़ हो गई और कौशिक जी के स्नेह-सुझाव का मैं अधिक हकदार बन गया। सचमुच अंत-अंत तक जो स्नेह और मार्ग-दर्शन एवं अपेक्षित सहयोग मैंने कौशिक जी से पाया वह विरल कहा जाएगा। अहिंसा समवाय से संबंधित कोई कार्यक्रम हो या फिर अणुव्रत महासमिति अथवा पटेल जयंती-समारोह का आयोजन हो हम इसलिए निश्चिंत रहते थे कि कौशिक जी की साया मुझ पर निरंतर रहती थी। कार्यक्रम के पूर्व कोई काम हो अथवा कार्यक्रम के बाद प्रेस तथा इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रेस विज्ञप्ति भेजना हो या फिर कार्यक्रमों का दायित्व पं॰ कौशिक जी के सबल कंधों पर सौंपकर इतमिनान हो जाता था और वे भी ऐसे अग्रज थे कि उन दायित्वों के निर्वहन में कोई कोताही नहीं करते थे। सच तो यह है कि वे राष्ट्रीय विचार मंच तथा 'विचार दृष्टि' के भी कार्यालय मंत्री का दायित्व निभाते थे। ऐसे भरोसेमंद अभिभावक व मार्गदर्शक का अचानक हमारे बीच से गुजर जाने से मुझ पर क्या बीत रहा है, वह तो कोई मुझसे पूछे। सचमुच आज उनकी अनुपस्थिति में मैं अपने को असहाय महसूस कर रहा हूँ, किंतु बड़े भाई डॉ॰ सोमदत्त शर्मा 'सोम' जी को सामने पाकर मैं थोड़ी राहत का अनुभव इसलिए कर रहा हूँ कि उनसे मुझे भरपूर सहयोग मिलेगा, ऐसा मेरा विश्वास है, कारण कि अब तो उन्हें अपने बड़े भाई स्व॰ कौशिक जी की जिम्मेवारी भी निभानी है। मैं इस माने में खुशकिस्मत अपने को मानता हूँ कि पं॰ कौशिक जी के अपने छोटे भाई डॉ॰ सोमदत्त शर्मा जी को मैं एक लंबे अरसे से जानता रहा हूँ और आज भी वे मेरे साथ हैं।

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि संस्कृति उन तमाम सद्वृत्तियों, विशिष्ट गुणों का समुच्चयित संगम है, जो किसी व्यक्ति के व्यक्तित्व और चरित्र को परिष्कृत और समृद्ध बनाती है। संस्कृति के मूल में व्यक्ति और समाज का 'संस्कार' होता है, जिससे सात्विक, सर्जनात्मक और अस्वाद्य आनंद की अनुभूति होती है। पं॰ ओम प्रकाश कौशिक भी एक ऐसे ही सात्विक

आचार-विचार और संस्कार के व्यक्ति थे जो भारतीय संस्कृति को एक पूर्ण संस्कृति इसलिए मानते थे कि 'भारतीय दृष्टि से प्रकृति के साथ हमारा आध्यात्मिक संबंध है। इसी धारणा ने हमारी कलाओं को विस्तृत फलक प्रदान किया और व्यापक जीवन दृष्टि दी। कौशिक जी स्वयं एक संस्कारी पुरुष होने के नाते दूसरों को भी संस्कारी बनाते थे। उनके निकट संपर्क में जो कोई भी आया उनके संस्कार से अभिभूत हुआ। वे एक ज्योतिषी भी थे तथा विशुद्ध मन से पंडिताई भी करते थे। शादी-विवाह, मरनी-हरनी, यज्ञोपवीत, पूजा-पाठ आदि कार्यक्रमों में न केवल वे तिथि का निर्धारण करते थे, बल्कि अत्यंत आत्मीयजनों के यहाँ कार्यक्रम भी संपन्न कराते थे। इसके चलते उनका संपर्क बहुत व्यापक था। व्यापक फलक का यह संस्कृति व्यक्ति समाज और राष्ट्र का प्राणतत्त्व था, जो दृश्यमान न होते हुए भी आज अनुभवगम्य हैं। जिस प्रकार शरीर और अंग-प्रत्यंग दिखाई देते हैं, किंतु वह वास्तविक प्राणतत्त्व अदृश्य होता है, ठीक उसी प्रकार उस व्यक्ति की संस्कृति सदा अपरिवर्तनशील है, जो हमारी भावना में शाश्वत स्वरूप मौजूद है। भौतिकता की चकाचौंध में भी हम कौशिक जी की संस्कृति भूल नहीं सकते। हम वह दिन भूल नहीं सकते जब पिछले 10 दिसंबर, 2005 को दिल्ली के स्कूल ब्लॉक, शकरपुर स्थित प्राचीन शिव मंदिर के प्रांगण में आयोजित अपनी बिटिया अंजलि-प्रवीण के विवाहोत्सव-समारोह में अणुव्रत महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष सह संपादक, 'अणुव्रत' पाक्षिक डॉ॰ महेन्द्र कर्णावट के साथ पं॰ ओम प्रकाश कौशिक अपने सभी सहयोगियों के साथ उपस्थित होकर वर-वधू को अपनी शुभकामना दे रहे थे। समारोह में उपस्थित बिहार के मुख्यमंत्री श्री नीतीश कुमार जी से उन सभी अपने अतिथियों का परिचय कराते हुए मुझे गर्व महसूस हो रहा था।

जिस व्यक्ति की उपस्थिति मात्र से ही मैं गौरवान्वित हुआ करता था वह व्यक्ति अचानक मेरी अनुपस्थिति में ही विगत 13 जनवरी 2007 को नई दिल्ली स्थित उत्तमनगर के निवास में चल बसा उस अनंत-अज्ञान स्थान की ओर जहाँ से कोई लौटता नहीं और पटना में रहकर न तो उनके परिवार के किसी सदस्य के समक्ष मैं अपनी शोक-संवेदना व्यक्त कर सकता और ना ही उनके पुत्रों व भाई सोम जी को सांत्वना! विधि का विधान जो न करा ले!

पं॰ कौशिक जी के निधन का दुखद समाचार सुनकर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाप्रज्ञ ने अपने शोक संदेश में कौशिक जी को एक आस्थाशील और जिम्मेदार कार्यकर्त्ता बताया। दीर्घकाल तक बहुत निष्ठा और समर्पण भाव से धर्मसंघ की सेवा करते हुए उन्होंने एक कर्मठ और विश्वस्त कार्यकर्ता के रूप में अपनी पहचान बनाई। कौशिक जी वैसे तो मध्य वर्गीय परिवार के थे, मगर मिजाज के धनी थे। उनका पहनावा, पोशाक, खानपान-सभी ऐसे थे कि शहंशाही टपकती थी। तेरापंथी सभा तथा अणुव्रत से जुड़े प्रायः सभी लोग उनका सम्मान करते थे, मगर उम्र तमाम फाकामस्ती में ही गुजरी, उन्होंने नई दिल्ली के उत्तमनगर में अपना एक घर बना लिया था और अपने जीवन के अधिकतर समय उन्होंने यहीं गुजारे। उनका स्वर्गवास भी इसी घर में हुआ। वैसे पं॰ कौशिक जी के विषय में जो कहा जाए, मगर उनकी शख्सियत बड़ी रौबदार थी। ऐसी रौबदार शख्सियत को राष्ट्रीय विचार मंच तथा उसके मुख-पत्र 'विचार दृष्टि' के सभी सदस्यों की ओर से मैं अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ इन पंक्तियों से -

बला-ए-जां हैं कौशिक उनकी हर बात,
इबारत क्या, इशारत क्या, अदा क्या।

उत्तर प्रदेश, अलीगढ़ में जन्मे पं॰ ओम प्रकाश कौशिक जी ने अपनी संस्कृति की जो अमिट छाप मुझपर छोड़ रखी है और संस्कार व संस्कृति का जो दीप उन्होंने जलाया है उसे मैं प्रज्ज्वलित करता रहूँगा, कामना है कि जगन्नियंता मुझमें इतनी शक्ति दे। संस्कृति, अहिंसा एवं अणुव्रत के प्रति भक्ति के इस स्वरूप स्व॰ कौशिक जी के प्रति मैं अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

***

वरिष्ठ पत्रकार शामलाल नहीं रहे

हिंदुस्तान टाइम्स के पूर्व पत्रकार तथा द टाइम्स ऑफ इंडिया के पूर्व संपादक शामलाल का विगत 23 फरवरी, 2007 को निधन हो गया। सभी विधाओं की पुस्तकों की समीक्षा में सिद्धहस्त शामलाल का जन्म सन् 1912 में हुआ था। सन्

1934 में हिंदुस्तान टाइम्स से उन्होंने पत्रकारिता शुरू कर दी। 12 वर्षों तक इसमें अपनी सेवाएँ प्रदान करने के बाद पचास के दशक में वे द टाइम्स ऑफ इंडिया में चले गए और वहीं से वे 1967 में संपादक बने। इस पद पर 11 वर्षों तक सेवाएँ देकर वे सेवा निवृत्त हुए। उनकी ख्याति एक स्वतंत्र और मजबूत विचारक के रूप में रही।

शामलाल जी की पुस्तक 'ए हंड्रेड एनकाउंटर्स' की समीक्षा में एकाधिक समीक्षकों ने फटाफट पत्रकारिता और दूरदर्शन 'बाइट्स' के इस जमाने में शामलाल है। वे सही मायने में अपवाद थे। पत्रकारिता की क्षण-भंगुर दुनिया में वे लगातार ऐसा लेखन करते रहे, जो दीर्घकालीन मूल्य रखता था और फिर वे कभी भी अप्रासंगिक या पिछड़े हुए नहीं दिखे। सच तो यह है कि बौद्धिकों और पत्रकारों की एक पूरी पीढ़ी को आधुनिक विचार और जीवन दृष्टि सिखाने में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान है। 95 वर्षीय शामलाल की दृष्टि का महत्त्व यह भी था कि उनमें एक गहरी आलोचनात्मकता के साथ विनम्र मानवीयता थी। इस मामले में पत्रकारिता की सीमाओं को विस्तृत करने का एक बड़ा काम उन्होंने किया। यों तो शामलाल एक सफल पत्रकार और सिद्धहस्त संपादक तो थे ही, लेकिन उन्हें सबसे ज्यादा स्मरण उनके स्तंभ 'लाइफ एंड लेटर्स' के लिए किया जाएगा, जिसके चुनिंदा लेख 'ए हंड्रेड एनकाउंटर्स' के नाम से संकलित हुए हैं।

इस स्तंभ में वे लगभग चालीस साल तक हर हफ्ते किसी पुस्तक पर चर्चा करते थे। यह पुस्तक समीक्षा नहीं थी, बल्कि पुस्तक के आधार पर लेखक के कृतित्व और विचारों की विचारोत्तेजक और रोचक छानबीन होती थी, उनकी गहरी रुचि साहित्य, कला, सिनेमा आदि में थी और इन क्षेत्रों के दिग्गजों से उनकी भिन्नता भी थी। हिंदी के कई बड़े लेखक उनके मित्र थे और उनके बारे में उन्होंने लिखा भी था। दूसरी ओर 'प्रोगेसिव आर्टिस्ट ग्रुप' के चित्रकारों से लेकर जगदीश स्वामीनाथन तक उनके मित्र थे। वे इस बात के प्रमाण थे कि पत्रकारिता और गहराई का कोई बैर नहीं है जैसा कि सुविधाजनक रूप से मान लिया जाता है, बल्कि गहरे और व्यापक आशय पत्रकारिता को ज्यादा प्रासंगिकता और दीर्घजीवी बना सकते हैं।

सुपरिचित पत्रकार राज किशोर का मानना है कि शामलाल जी अपने जीवन कला में लगातार अप्रासंगिक होते आ रहे थे। ऐसा आदमी, जिसने लगभग पचास साल तक भारत की अँग्रेजी पत्रकारिता में विचारों की खेती की हो, जो विचारों की दुनिया में ही रहता था और अपने समय के गंभीर सवालों से निरंतर मुठभेड़ करता जाता था, जिसे पढ़कर निष्कलुष बौद्धिक आनंद मिलता था। वह अगर धीरे-धीरे समाज से बाहर किया जा रहा था, तो दोषी कौन है? यह व्यंग्यात्मक सवाल पूछना इसलिए जरूरी है कि जिसे अप्रासंगिक होना कहा जाता है, उसकी सही जाँच के लिए क्या प्रसंग की पड़ताल करना भी जरूरी नहीं है? क्या हम यह विन्रम दावा कर सकते हैं कि पत्रकारिता का वर्तमान प्रसंग ही अप्रासंगिक हो रहा है?

खैर जो जो, मगर अँग्रेजी में शामलाल जी के जीवित उत्तराधिकारी आज कहीं दिखाई नहीं पड़ रहे हैं। शब्दों की गहराई लिए ऐसे सशक्त पत्रकार जी को विचार दृष्टि की ओर से श्रद्धांजलि।

❋❋❋

– विचार दृष्टि

फिल्म निर्माता भास्करन का निधन

मलयालम के जाने-माने फिल्म निर्माता गीतकार और कवि पी॰ भास्करन को 25 फरवरी, 2007 को तिरुवंतपुरम् में निधन हो गया। 83 वर्षीय भास्करन कुछ समय से बीमार थे। कोडुनगालूर में जन्मे भास्करन पिता के प्रभाव में बचपन से ही लेखन तथा राजनीतिक गतिविधियों में सक्रिय रहे। उन्होंने 1949 में एक तमिल फिल्म चंद्रिका के लिए अपना पहला गीत लिखा और 1954 में 'नीलाकुयिल' फिल्म बनाई। उनकी फिल्में खरी वास्तविकताओं तथा सामाजिक रिश्तों पर आधारित रहीं।इन पाडुरान, उमाचु, काल चेन्नमा अनवेशिचू कानदेयिला आदि उनकी कुछ प्रसिद्ध फिल्में रहीं। स्व॰ भास्करन को श्रद्धांजलि।

– के.जी. बालकृष्ण पिल्लै, प्रतिनिधि

आनंद शंकर माधवन का निधन

आनंद शंकर माधवन का पिछले 14 फरवरी, 2007 को दिल का दौरा पड़ने से दिल्ली के विमहांस अस्पताल में निधन हो गया। 93 वर्षीय माधवन को लकवा की चपेट में आने के बाद राज्यपाल डॉ. ए. आर. किदवई के बुलावे पर विगत 31 जनवरी 2007 को भागलपुर से दिल्ली इलाज के लिए लाया गया था। तब से वे विमहांस अस्पताल में भर्ती थे।

दक्षिण भारत के केरल में जन्में माधवन 14 वर्ष की उम्र में ही हिंदी व संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए केरल से वाराणसी आ गए थे। वहीं काशी विद्यापीठ में संस्कृत से इंटरमीडियट की पढ़ाई करने के बाद आगे की शिक्षा के लिए वे दिल्ली आ गए। यहाँ जामिया विश्वविद्यालय से उन्होंने एम.ए. की डिग्री हासिल की। उसी दौरान उनकी मुलाकात महात्मा गाँधी से हुई और संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए माधवन ने बिहार के भागलपुर के समीप सन् 1945 में मंदार विद्यापीठ की स्थापना की। दक्षिण भारत से ताल्लुक रखने के बाद भी हिंदी संस्कृत में माधवन ने कुल 68 पुस्तकें लिखी हैं।

स्व॰ माधवन नि:संतान थे और उनकी पत्नी भागलपुर के एक वृद्धाश्रम में रहती हैं। स्व॰ माधवन का दाह-संस्कार मंदार में हुआ। 'विचार दृष्टि' की ओर से स्व॰ माधवन को हार्दिक श्रद्धांजलि।

– उप संपादक

सांसद सुनील महतो की हत्या

झारखंड आंदोलन से अपने राजनीतिक जीवन की शुरुआत कर कम समय में ही अपनी राजनीतिक पहचान बनाने वाले तथा सांसद की सीढ़ी तक पहुँच कर मुखर, बेबाक एवं शोषण के खिलाफ आवाज उठाने वाले सुनील महतो की विगत 4 मार्च 2007 को झारखण्ड राज्य के घाटशिला क्षेत्र के बाघुड़िया गाँव में आयोजित फुटबाल प्रतियोगिता के समापन समारोह में नक्सलियों ने उनके अंगरक्षक सहित चार लोगों की हत्या कर दी।

सरायकेला जिले के गम्हरिया गाँव में एक किसान परिवार में जन्मे सुनील जमशेदपुर के कोऑपरेटिव कॉलेज से बी. कॉम की पढ़ाई करने के बाद दक्षिण बिहार में आदिवासियों और दलितों का शोषण देख झारखण्ड राज्य के लिए चल रहे आंदोलन में आजसू नेता के रूप में कूद पड़े और शिबू सोरेन से प्रभावित होकर 1988 में झारखण्ड मुक्ति मोर्चा की उन्होंने सदस्यता ग्रहण की और उसके विभिन्न पदों पर रहते हुए झामुमो की 2007 में हुई राष्ट्रीय कार्य समिति की बैठक में निर्विरोध केंद्रीय महासचिव चुने गए। 2004 में जमशेदपुर संसदीय क्षेत्र से संसद सदस्य के रूप में विजयी हुए। स्व॰ महतो नक्सलियों के बेबाक आलोचक थे। शोषितों, आदिवासियों तथा दलितों के ऐसे नेता स्व॰ सुनील महतो को श्रद्धांजलि।

- उप संपादक

वरिष्ठ पत्रकार जोगलेकर का निधन

'यूनीवार्त्ता' के प्रथम संपादक काशीनाथ जोगलेकर का 24 फरवरी, 2007 को नई दिल्ली में निधन हो गया। वे 80 वर्ष के थे। वह वाराणसी के निवासी थे। उनकी पुस्तक 'पत्र पत्रकार और सरकार' काफी चर्चित रही और उसके लिए भारत सरकार के भारतेंदु पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

अमिताभ चक्रवर्ती नहीं रहे

भारतीय सूचना सेवा के वरिष्ठ अधिकारी व आर. एन. आई. के रजिष्ट्रार अमिताभ चक्रवर्ती का दिल का दौरा पड़ने से वाराणसी में निधन हो गया। वह 59 वर्ष के थे। वे वाशिंगटन में प्रसार भारती के संवाददाता व दूरदर्शन के उपमहानिदेशक भी रहे। उनके शोक संतप्त परिवार में उनकी पत्नी, पुत्र और पुत्री हैं।

म.प्र. के पूर्व मुख्यमंत्री श्यामाचरण शुक्ल का निधन

स्वतंत्रता सेनानी और अविभाजित मध्य प्रदेश के तीन बार मुख्य मंत्री रहे वरिष्ठ काँग्रेस नेता श्यामाचरण शुक्ल का लंबी बीमारी के बाद विगत 14 फरवरी, 2007 को तड़के निधन हो गया। 82 वर्षीय स्व॰ शुक्ल को खारूद नदी के तट पर उनके पुत्र अमितेश शुक्ल ने उन्हें मुखाग्नि दी। वे अपनी पीछे पत्नी पद्मिनी, पुत्र और तीन पुत्रियों को छोड़ गए हैं। स्व॰ शुक्ल को श्रद्धांजलि।

-सहायक संपादक

ओ.पी. नैयर : एक प्रयागधर्मी और कालजयी संगीतकार का निधन

फिल्मी दुनिया के मशहूर, प्रयोगधर्मी और कालजयी संगीतकार तथा अद्भुत प्रतिभा के धनी ओ.पी. नैयर का निधन विगत 28 जनवरी 2007 को मुंबई के ठाणे के निकट एक अस्पताल में दिल का दौरा पड़ने से हो गया। 82 वर्षीय नैयर का जन्म 26 जनवरी 1926 को लाहौर में हुआ था। वे बाद में पटियाला आए और आकाशवाणी जालंधर से जुड़े। उन्होंने पंजाबी फाक का बड़ा सार्थक प्रयोग किया। उनकी मेलोडी अपरंपार थी।

नया जमाना उसे स्पर्श भी नहीं कर सकता। वह नई परंपरा का निर्माण करने वाले ध रोहर पुरुष हैं। अपार लोकप्रियता अर्जित करने वाले प्रयागधर्मी संगीतकार ओ. पी. नैयर बेहद अनुशासित, मानवीय और अद्भुत व्यक्ति थे। उनके संगीत में युवाओं का दिल छूने की जो ताकत थी वह उन्हें आज के युवाओं में भी प्रासंगिक और ताजा रखे हुए है। वह हमेशा याद किए जाते रहेंगे। 'आओ हुजूर तुमको सितारों में ले चलूँ' और 'आइए मेहरबां, बैठिए जाने जां' नैयर साहब के ये गाने काफी सराहे गए। सन् 1949 में 'कनीज' फिल्म में पाश्र्व संगीत से अपने कैरियर की शुरूआत करनेवाले नैयर ने सन् 1952 में प्रदर्शित फिल्म 'आसमान' से वह विधिवत संगीतकार हो गए और इसी से उन्हें पहचान मिली। उनकी अंतिम संगीतबद्ध फिल्म 1993 में प्रदर्शित 'जिद' थी जिसके बाद उन्होंने संगीत को अलविदा कह दिया। आशा भोंसले को बी. और सी. ग्रेड की फिल्मों की पार्श्वगायिका से उठाकर चोटी तक पहुँचाने का श्रेय ओ. पी. नैयर को ही जाता है। संगीत के बदले चलन में अतीत होने से पहले ही व्यतीत हो गए ओ. पी. नैयर को याद करना गुजरे जमाने के मर्सिए जैसा भले ही लगे, मगर असल में यह आदमी के खून में बजती उस आदिम लय को याद करना है, जिसे स्मार्ट, मशीनों के शातिर शोर में हम कहीं गुम कर आए हैं। नैयर साहब को श्रद्धांजलि।

– उदय कुमार 'राज़', दिल्ली

सुप्रसिद्ध उपन्यासकार शेल्डन का निधन

थियेटर, सिनेमा, दूरदर्शन और उपन्यास लेखन के क्षेत्र में धूम मचाने और हर जगह पुरस्कारों और सम्मानों का अंबार बटोरने वाले लॉस एंजिल्स के सिडनी शेल्डन का 89 साल की उम्र में न्यमोनिया से पीड़ित होने के कारण निधन हो गया।

'रेज ऑफ एंजेल्स', 'द अदर साइड ऑफ मिडनाइट', 'मास्टर ऑफ गेम' और 'इफ टुमौरो कम्स' जैसे ख्याति प्राप्त उपन्यासों से शोहरत के नए मुकाम तक पहुँचे शेल्डन ने 17 साल की उम्र में ही हॉलीवुड के सपनीले संसार में किस्मत अजमाने की सोची। दस साल की उम्र में कविता लिखने के लिए 10 डॉलर पाने वाले शेल्डन दूसरे विश्व-महायुद्ध में सैना में पाइलट रहे।

***

हमारी शुभकामनाएँ

मे. सुपर सीमेंट ट्रेडिंग

लफार्ज सीमेंट के
ए.सी.सी., के.सी.
थोक एवं खुदरा विक्रेता

-: संपर्क करें :-
सिद्धेश्वर कॉम्प्लेक्स
मीठापुर, खगौल रोड,
पटना-800 001

संस्थापक :
स्व. सिद्धेश्वर प्रसाद सिंह

साभार स्वीकार

पुस्तकें

1. हाइकु काव्य विधा का शास्त्रीय अनुशीलन
लेखक : नलिनी कांत
प्रकाशक : कविताश्री प्रकाशन, उत्तर बाजार, अंडाल, पं0 बंगाल- 713321
2. स्वध्यायांजलि
कवि : संत कृष्ण आनंद
सर्वश्री विवेकानंद ब्रह्मविद्या योग संस्थान
दैलवाड़ा, आबू पर्वत -307501 (राजस्थान)
3. चिट्ठी आई गाँव से - दोहा-सतसई
दोहाकार : ए0 बी0 सिंह
ए-1, कैलाशनगर, निम्बहेरा-312617
चित्तौरगढ़ (राजस्थान)
4. विविधायन : निबंध संग्रह
लेखक : मानदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'
प्रकाशक : हिंदी सहकार संस्थान
362, सिविल लाइन्स (कल्याणी)
उन्नाव, उ0 प्र0
5. महावर - काव्य संग्रह
कवि : राजेन्द्र प्रसाद तिवारी 'कंटक'
मो0- राजगढ़, लखीमपुरखीरी, उ॰ प्र॰
6. मेरी कविता में - कविता संग्रह
रचयिता : डॉ॰ भवनेश प्रधानाचार्य
सी॰ के॰ एम॰ लॉ॰ कॉलेज, अररिया
7. आत्मकथा के उद्‌बोधन
प्रणेता : डॉ॰ भुवनेश, मालती महल
वार्ड नं॰ 11, अररिया-854311
8. इन्द्रधनुष का सपना - काव्य-संग्रह
संपादक : डॉ॰ हितेष कुमार शर्मा
गणपति काम्पलेक्स, सिविल लाइन्स
बिजनौर-246701, उ॰ प्र॰
9. धुएँ में घुटता शहर - कविता संग्रह
कवि : रीतेश कर्णपुरी
मिश्रा हाउस, गौतमनगर, सहरसा
10. मेरे सरगम में - काव्य-संग्रह
रचयिता : हरिनारायण पासवान 'नवेन्दु'
जिला पंचायत राज पदाधिकारी
11. अकस्मात आदमी से मुलाकात - काव्य संग्रह
कवि : रीतेश कर्णपुरी
12. पुष्पांजलि - काव्य संग्रह
कवि - संजय 'विजित्वा'
गांधी आश्रम, पो.-हाजीपुर,
वैशाली-844101, 9430483899

पत्रिकाएँ

1. प्रहरी (अप्रैल-सितंबर, 06)
संपादक : सूर्यबली चौधरी
कार्यालय, प्रधान महालेखकार
बिहार, पटना।
2. अणुव्रत (दिसंबर 06-मार्च, 07)
संपादक : डॉ॰ महेंद्र कर्णावट, दिल्ली
3. रैन बसेरा (जनवरी, 07)
प्र0 संपादक : डॉ. जयसिंह 'व्यथित'
गुजरात हिंदी विद्यापीठ,
कमलेश पार्क, महेश्वरीनगर,
ओढब, अहमदाबाद-15
4. युगीन (जनवरी, 07)
संपादक : राजेन्द्र सानन
एफ-14, मिलाप नगर, नजफगढ़,
नई दिल्ली।
5. विवरण पत्रिका (जनवरी, 07)
संपादक : धोण्डीराव जाधव
हिंदी प्रचार सभा, नामपल्ली,
स्टेशन रोड, हैदराबाद-1
6. राष्ट्रभाषा (दिसम्बर, 06)
प्र0 संपादक : अनंतराम त्रिपाठी
वर्धा - 442003 (महाराष्ट्र)
7. साहित्य परिक्रमा (जनवरी-मार्च, 07)
संपादक : मुरारीलाल गुप्त 'गीतेश'
राष्ट्रोत्थान भवन, माधव महाविद्यालय
के सामने, नई सड़क,ग्वालियर-474001
8. समय सुरभि (जनवरी-मार्च 2007)
संपादक : नरेन्द्र कुमार सिंह
शिवपुरी (नया जेल से पश्चिम),
पो0+जिला- बेगुसराय-851101
9. युगीन (सितंबर, 06)
संपादक : राजेन्द्र सानन
बी-52, सेक्टर-8, नोयडा-201301
10. भाषा-भारती संवाद (अक्टूबर-दिसंबर, 06)
प्र॰ संपादक : नृपेन्द्र नाथ गुप्त
अ.भा.भा.साहित्य सम्मेलन, बिहार
11. अलका मागधी (जनवरी-मार्च, 07)
संपादक : डॉ. अभिमन्यु मौर्य, पटना
12. मैसूर हिंदी प्रचार परिषद् पत्रिका (नंवबर, 06)
प्र0 संपादक : डॉ. बि. राम संजीवया
58, वेस्ट ऑफ कार्ड रोड,
राजाजी नगर, बैंगलूर-10
13. स्मारिका: डॉ0 शैलेन्द्र स्मृति (अक्टूबर, 06)
प्रधान संपादक : सत्यनारायण,
प्रकाशक : श्री चित्रगुप्त आदि मंदिर प्रबंधक समित, दीवान मुहल्ला,
नौजर घाट, पटना सिटी-8
14. बिहार-विकास का संकल्प - प्रवेशांक दिसंबर, 06
प्र0 संपादक : श्याम किशोर सिंह
748, सिद्धेश्वर नगर, पटना-1
15. परती पलार - (मार्च-अप्रैल, 07)
प्र॰ संपादिका : नमिता सिंह
वाग्वैचित्र्य आश्रम रोड, वाड नं॰-8
अररिया - 854311
16. कोशी-कात : मैथिली पत्र (दिसंबर, 06)
प्र॰ संपादक : डॉ॰ भुवनेश
17. शोषित-मुक्ति (जनवरी-फरवरी, 07)
संपादक : आलोक कुमार सिन्हा
18. ब्राह्मण अंतराष्ट्रीय संस्मरण
संपादक : हितेश कुमार शर्मा
19. संवदिया (जनवरी-मार्च, 07)
प्र॰ संपादक : भोला पंडित प्रणयी
जय प्रकाश नगर, वार्ड नं॰-7
अररिया -854311
20. रेल राजभाषा - अक्टूबर 06-मार्च07
संपादक : कृष्णा शर्मा
राजभाषा निदेशालय, रेल मंत्रालय,
कमरा नं. 543, रेल भवन, नई दिल्ली-110001

✱✱

Tele : 0612-2352480

THE PEOPLE'S CO-OPERATIVE HOUSE CONSTRUCTION SOCIETY LTD.

KANKERBAGH, PATNA-800020.

HIGHLIGHTS:

1. For members of lower & middle income group of people this society is said to be one of the largest co-operative house construction societies in Asia.
2. In the first phase 131.12 acres of land acquired by Government of Bihar were handed over to this society.
3. The society has got an opportunity to attract 1730 members from lower income group of people.
4. In all 1600 plots were bifurcated in planning out of which 10 plots were reserved for community hall, office building, godown and four-storied building for common utilities.
5. 1400 houses have so far been constructed by the members.
6. 500 members have been given housing loan through this society.
7. Boundary walls in 15 parks have already been constructed by the society.
8. In most of the sectors metalled & cemented roads have also been constructed.
9 Efforts are being made to improve the drainage system, to have plantation and lighting facilities
10. In the second phase 7 acres of land have been purchased at Jaganpura village in which six houses have been constructed so far.
11. Out of 96 plots 95 plots have already been allotted to the members and one plot has been reserved for common utilities.
12 The society makes available its community hall to the members on priority basis for the marriage ceremony of their Sons & daughters at half of the prescribed charges.
13. As far as possible the society tries to provide street light, maintain roads, clean manholes, construct parks and other development activities.
14. All those members who have not filled up their nominee forms as yet are requested to deposit the forms duly filled in after getting the forms from the office of the society.

WITH REGARDS TO THE MEMBERS.

L.P.K. Rajgrihar	**Sidheshwar Prasad**	**Prof. M.P. Sinha**
Chairman	Vice Chairman	Secretary

त्रिमूर्ति ज्वेलर्स

बाईपास रोड, चास, बोकारो

झारखंड

दूरभाष : 65765

फैक्स : 65123

परीक्षा

प्रार्थनीय

सुरेश एवं राजीव

त्रिमूर्ति अलंकार

त्रिमूर्ति पैलेस

(रुपक सिनेमा के पूरब)

बाकरगंज,

पटना-800004

दूरभाष : 2662837

आधुनिक आभूषणों के निर्माता, नए डिजाइन, शुद्ध सोने-चाँदी तथा हीरे के गहनों का प्रमुख प्रतिष्ठान

Arvind Kumar Rajiv Kumar Rajat Kumar

RAJIV PAPER MART

Deals in :
All Kinds of White Printing Paper,
Art Paper & L.W.C. etc.

S-447, School Block-II,
Shakarpur, Delhi-110092
9968284416, 9810250834
9891570532, 9871460840
(O) 65794961, (R) 22482036

वर्ष : 9 अंक : 31 अप्रैल-जून 2007 RNI REG. NO. : DEL HIN/1999/791

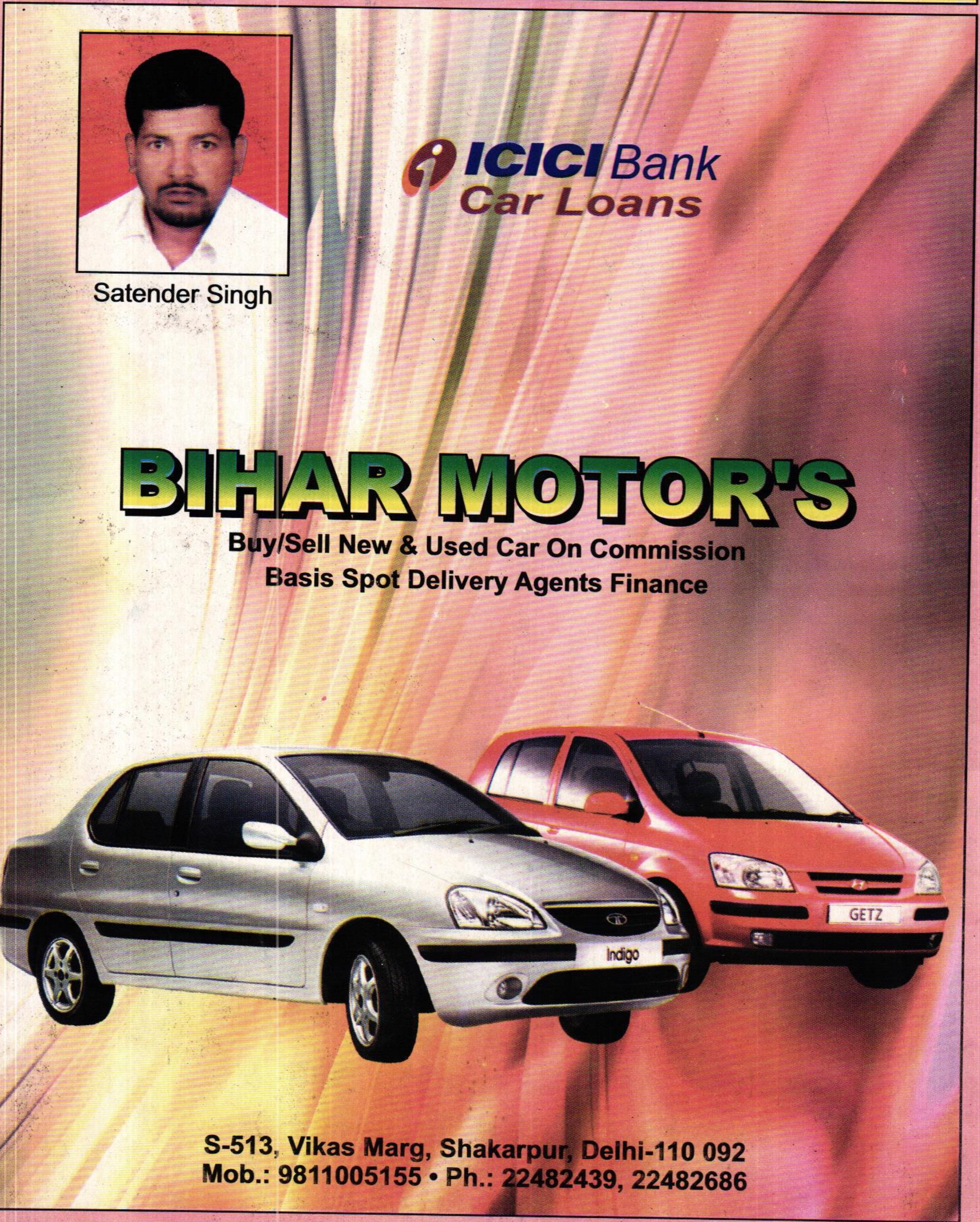

प्रकाशक, मुद्रक व स्वामी सिद्धेश्वर द्वारा 'दृष्टि', यू-207, विकास मार्ग, शकरपुर, दिल्ली-92 से प्रकाशित एवं प्रोलिफिक इनकारपोरेटिड, एक्स-47, ओखला फेस-2, नई दिल्ली-110020 से मुद्रित। संपादक-सिद्धेश्वर